सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 49, नई दिल्ली । मंगलवार, 29 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अनुशासन एक ऐसा तरीका है जो उसमें कामयाब हो गया, वो हर कार्य में जीत सकता है।

03 दिल्ली में 70 वर्ष या उससे अधिक उम्र के बुजुर्गों के लिए आयुष्मान वय वंदना योजना शुरू
06 जल संकट का दौर, पानी बचाने का शोर
08 एक ही नंबर की दो बसें जब्त

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र के द्वितीय सम्मान समारोह में सम्मान प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए गूगल फार्म को भरकर जमा करे। आपके फार्म जमा करने के बाद जूरी द्वारा जांच कर आपको ईमेल/व्हाट्सएप से सम्मान समारोह का निमंत्रण भेजा जाएगा।
https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSeK5Go2e5KD4m1v82E-oGAISA7BAXqX5hTm31j9OLZG4fifCA/viewform?usp=dialog

सम्मान हेतु योग्यता।।

परिवहन, सड़क सुरक्षा, प्रदुषण नियंत्रण, महिला सुरक्षा एवं अन्य किसी भी श्रेणी/क्षेत्र में आप जनहित में कार्य कर रहे है या करते है तो आप परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र के द्वितीय सम्मान समारोह में अपना सम्मान प्राप्त करने के लिए... अपना परिचय, कार्य शैली, कार्य क्षेत्र एवं किस आधार पर सम्मान प्राप्त करने में योग्य हैं।

transportvisheshcontent@gmail.com Switch account

The name, email, and photo associated with your Google account will be recorded when you upload files and submit this form

* Indicates required question

अधिकृत मानदंड *
- नाम
- संस्था
- ट्रस्ट
- अन्य
- Other:

आपका या संस्थान परिचय *

Your answer

सम्मान श्रेणियां *
- परिवहन
- महिला सुरक्षा
- सड़क सुरक्षा
- प्रदूषण नियंत्रण
- लेखाकार
- कवि
- कवित्री
- प्रदूषण मुक्त वाहन निर्माता (इलेक्ट्रिक वाहन)
- सुरक्षा नियंत्रित उपकरण निर्माता
- वाहन स्क्रैप डीलर
- उम्रवाद सुरक्षा जागृति
- पत्रकार
- ऐंकर
- Other:

परिचय पत्र (आधार अंक या पंजीकरण प्रमाण पत्र) *

Upload 1 supported file. Max 10 MB.

Add file

आपके द्वारा लागू किया जा रहे मानदंडों को साबित करने के लिए साक्ष्य *

Upload 1 supported file. Max 10 MB.

Add file

परिवहन सम्मान श्रेणियां *
- सार्वजनिक सेवा
- छात्र वाहन सेवा
- यात्री बस सेवा
- यात्री कार सेवा
- लॉजिस्टिक सेवा
- ड्राइवर कल्याण सेवा
- बस कल्याण सेवा
- लॉजिस्टिक्स कल्याण सेवा
- N.A. (अगर आप किसी और श्रेणी से भाग ले रहे हैं)
- Other:

Submit　　Clear form

दिल्ली की 4 व्यस्त सड़कें होंगी जाम मुक्त, लाखों लोगों को मिलेगी बड़ी राहत; ट्रैफिक पुलिस ने बनाया

संजय बाटला

दिल्ली की चार व्यस्त सड़कों को जाम मुक्त करने के लिए लोक निर्माण विभाग और यातायात पुलिस यू-टर्न योजना पर मिलकर काम करेंगे। रिंग रोड नजफगढ़ रोड एमबी रोड और रोहतक रोड जैसे व्यस्त मार्गों पर लाल बत्तियां कम करके यातायात को सुगम बनाया जाएगा। सर्वेक्षण के बाद इन सड़कों को सिग्नल-मुक्त करने का प्रस्ताव है जिससे समय और ईंधन की बचत होगी और प्रदूषण कम होगा।

नई दिल्ली। सड़कों को जाम मुक्त करने के लिए लोक निर्माण विभाग और यातायात पुलिस यू-टर्न योजना पर साथ में काम करने जा रहे हैं। जिससे कि बहुत कम लागत से दिल्ली के चार व्यस्त मार्गों को जाम मुक्त बनाया जा सकता है। इनमें रिंग रोड, नजफगढ़ रोड, एमबी रोड और रोहतक रोड हैं।

ये ऐसे मार्ग हैं, जहां अभी फ्लाईओवर नहीं बनाया जा सकता है। इन सड़कों का सर्वे करने के बाद लालबत्तियां बंद करने का सुझाव दिया गया है। इन मार्गों पर लालबत्तियां अधिक हैं। रिंग रोड पर ढाई किलोमीटर मार्ग में 10 लालबत्तियां हैं तो रोहतक रोड पर 13 किलोमीटर में 14 लालबत्तियां हैं। जो लोग इन मार्गों पर गुजरते हैं, वे इससे परेशान होते हैं।

10 लालबत्तियों को बंद कर यू-टर्न बनाने की योजना

वहां जाम लगने से लोगों का सम बर्बाद होता है, ईंधन भी ज्यादा लगता है और दिल्ली में प्रदूषण भी बढ़ता है।सामाजिक संस्था गुरु हनुमान सोसायटी, सीआरआरआई और यातायात पुलिस के साथ मिलकर कुछ माह पहले दिल्ली के इन चार बड़े मार्गों का सर्वे कर एक रिपोर्ट तैयार की गई थी।

यातायात पुलिस के विशेष आयुक्त अजय चौधरी ने 24 अप्रैल को लोक निर्माण विभाग के प्रमुख अभियंता नईमुद्दीन को पत्र लिखकर रिपोर्ट के आधार पर महरौली-बदरपुर रोड, रोहतक रोड और नजफगढ़ रोड को यूटर्न योजना के तहत सिग्नल फ्री करने के लिए काम करने के लिए करने की बात कही है।

वहीं, यातायात पुलिस की मध्य रेंज के उपायुक्त ने गत 17 अप्रैल को लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) के अधीक्षण अभियंता को पत्र लिखकर रिंग रोड के दिल्ली विधानसभा से किंग्सवे कैंप तक की 10 लालबत्तियों को बंद कर यू-टर्न योजना लागू करने के लिए कहा है।

PWD ने जल्द रणनीति तैयार करने का लिया फैसला

पीडब्ल्यूडी के प्रमुख अभियंता नईमुद्दीन के नेतृत्व में विभाग के मेंटेनेंस विभाग से संबंधित तीनों मुख्य अभियंताओं ने अपने-अपने इलाके में इस योजना पर जल्द से जल्द काम करने की रणनीति कर तैयार करने का फैसला लिया है। विभाग के अनुसार जल्द ही इस योजना पर काम शुरू कर दिया जाएगा।

पीडब्ल्यूडी के वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि अभी इस योजना पर अस्थायी रूप से लालबत्तियां बंद की जाएंगी और जरूरत के हिसाब से यू-टर्न खोले जाएंगे। लोगों की सहूलियत और जाम की स्थिति का आकलन करने के बाद स्थायी रूप से लालबत्तियों को बंद कर दिया जाएगा।

सड़क के किस भाग को किया जाना है सिग्नल फ्री

महरौली-गुरुग्राम रोड (एमबी रोड), रोहतक रोड (पीरागढ़ी चौक से टिकरी बार्डर तक) नजफगढ़ रोड (उत्तम नगर चौक से रिंग रोड राजौरी गार्डन तक) और रिंग रोड के दिल्ली विधानसभा से किंग्सवे कैंप तक एक संयुक्त सर्वेक्षण किया गया है। इन्हीं मार्गों को सिग्नल फ्री करने की योजना बनाई गई है।

इन मार्गों को यू टर्न बनाकर किया जाना है सिग्नल फ्री

रिंग रोड
नजफगढ़ रोड
एमबी रोड
रोहतक रोड

मेट्रो के विस्तार का कार्य जमीनी स्तर पर शुरू गुरुग्राम पुलिस ने तैयार किया ट्रैफिक प्लान

गुरुग्राम के साइबर सिटी में मेट्रो विस्तार का कार्य 1 मई से शुरू होगा। गुरुग्राम मेट्रो रेल लिमिटेड ने इसकी तैयारी पूरी कर ली है। ट्रैफिक प्रबंधन के लिए पुलिस के साथ समन्वय स्थापित किया गया है। चार साल में प्रोजेक्ट पूरा करने का लक्ष्य है। यह विस्तार मिलेनियम सिटी सेंटर से साइबर सिटी तक होगा जिससे लाखों लोगों को फायदा होगा।

गुरुग्राम। गुरुग्राम में साइबर सिटी में एक मई से मेट्रो के विस्तार का कार्य जमीनी स्तर पर शुरू हो जाएगा। इसके लिए गुरुग्राम मेट्रो रेल लिमिटेड ने तैयारी कर ली है। जमीनी स्तर पर काम शुरू करने से पहले के कार्य पूरे कर लिए गए हैं। जहां पर भी कार्य चलेगा वहां पर ट्रैफिक व्यवस्था प्रभावित न हो, इसके लिए गुरुग्राम पुलिस से तालमेल बैठाया गया है।

पुलिस वैकल्पिक रूटों के बारे में लोगों को जागरूक करेगी। इलाके में पुलिस की सक्रियता भी बढ़ाई जाएगी। चार साल के भीतर प्रोजेक्ट पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। किन-किन इलाकों से होकर कॉरिडोर गुजरेगा, आने वाले समय में और किन इलाकों तक कॉरिडोर का विस्तार होगा, प्रोजेक्ट के ऊपर कितना खर्च होगा, कितने स्टेशन बनाए जाएंगे, कितना लंबा कॉरिडोर होगा सहित कई सवालों को लेकर प्रस्तुत है दैनिक जागरण के मुख्य संवाददाता आदित्य राज की रिपोर्ट...

एक नजर में मेट्रो विस्तार प्रोजेक्ट

मिलेनियम सिटी सेंटर से होते हुए साइबर सिटी तक विकसित किया जाएगा

हरियाणा सरकार एवं केंद्र सरकार द्वारा संयुक्त रूप से निर्माण पर खर्च करेंगी

नए कॉरिडोरपर कुल आठ मेट्रो स्टेशन माडल स्टेशन होंगे

नया मेट्रो नेटवर्क संचार आधारित ट्रेन नियंत्रण सिग्नलिंग सिस्टम पर चलेगा

शुरुआत में मेट्रो में कोचों की संख्या तीन होगी, बाद में छह संख्या की जाएगी

गुरुग्राम पुलिस का ट्रैफिक प्लान तैयार

मेट्रो विस्तार को लेकर गुरुग्राम पुलिस ने ट्रैफिक प्लान तैयार कर लिया है। जहां पर भी बैरिकेडिंग की जाएगी वहां पर तीन से चार ट्रैफिक पुलिसकर्मी तैनात रहेंगे। जाम की स्थिति पैदा होने पर तत्काल प्रभाव से ट्रैफिक को डायवर्ट किया जाएगा। दरअसल पुराने गुरुग्राम इलाके में ट्रैफिक का दबाव काफी अधिक है।

अधिकतर सड़कों पर 24 घंटे ट्रैफिक का दबाव रहता है। इसे देखते हुए ट्रैफिक प्लान तैयार किया गया है। हीरो होंडा चौक से लेकर रेलवे स्टेशन के नजदीक तक सबसे अधिक ट्रैफिक का दबाव है। सेक्टर-34, सेक्टर-37, बसई एवं कादीपुर औद्योगिक क्षेत्र सहित कई रिहायशी इलाके हीरो होंडा चौक से रेलवे स्टेशन के बीच में आते हैं। इसे देखते हुए गुरुग्राम मेट्रो रेल लिमिटेड (जीएमआरएल) ने गुरुग्राम पुलिस को ट्रैफिक प्लान तैयार करने को कहा था।

इन स्थानों पर बनाए जाएंगे स्टेशन

नए कॉरिडोरपर सबसे पहला स्टेशन मिलेनियम सिटी सेंटर गुरुग्राम मेट्रो स्टेशन से आगे सेक्टर-45 होगा। इसके बाद साइबर पार्क, सेक्टर-47, सुभाष चौक, सेक्टर-48, सेक्टर-72ए, हीरो होंडा चौक, उद्योग विहार फेज-छह, सेक्टर-10, सेक्टर-37, बसई गांव, सेक्टर-9, सेक्टर-सात, सेक्टर-चार, सेक्टर-पांच, अशोक विहार, सेक्टर-तीन, बजघेड़ा रोड, पालम विहार एक्सटेंशन, पालम विहार, सेक्टर-23ए, सेक्टर-22, उद्योग विहार फेज-चार, उद्योग विहार फेज-पांच एवं साइबर हब के नजदीक स्टेशन होगा। बाद में पालम विहार इलाके से दिल्ली के द्वारका मेट्रो स्टेशन तक विस्तार किया जाएगा। यही नहीं, सेक्टर-37डी में विकसित होने वाली ग्लोबल सिटी तक मेट्रो का विस्तार प्रस्तावित है।

रिंगमेन सिस्टम की दिखाई देगा कॉरिडोर

पुराने गुरुग्राम में मेट्रो विस्तार के बाद पूरा कॉरिडोररिंगमेन सिस्टम की तरह दिखाई देगा। इससे लाभ यह होगा कि किसी भी इलाके के लोग किसी स्टेशन जा-आ सकेंगे। विस्तार से सीधे तौर पर 10 लाख से अधिक लोगों को लाभ होगा। पुराने गुरुग्राम में एचएमआरटीसी कॉरिडोरविकसित करने के साथ उसका संचालन भी करेगी।

प्रोजेक्ट पूरा होने के बाद शुरुआत में 35 मेट्रो का संचालन नए कॉरिडोरपर किया जाएगा। यात्रियों की संख्या बढ़ने पर मेट्रो की संख्या बढ़ाई जाएगी। चार से साढ़े चार मिनट के अंतराल पर मेट्रो की सुविधा उपलब्ध होगी। फिलहाल दिल्ली मेट्रो की सुविधा नए गुरुग्राम के इलाके तक ही है। दिल्ली मेट्रो रेल कारपोरेशन के केवल पांच स्टेशन गुरुग्राम इलाके हैं।

जहां पर जबसे मेट्रो विस्तार का काम शुरू होगा, उसके लिए पुलिस की तैयारी है। आवश्यकतानुसार ट्रैफिक को डायवर्ट किया जाएगा। जहां पर काम शुरू होगा, वहां आसपास के इलाके के लोगों को भी जागरूक किया जाएगा, ताकि वे वैकल्पिक मार्ग का इस्तेमाल करें। इससे ट्रैफिक का दबाव नहीं बनेगा।

– विकास अरोड़ा, पुलिस आयुक्त

दिल्ली वालों को नहीं करना पड़ेगा बसों का इंतजार, इस दिन से चलेंगी 330 एसी इलेक्ट्रिक बसें

दिल्ली इलेक्ट्रिक व्हीकल इंटीग्रेशन (डीईवीआई) योजना के तहत 330 इलेक्ट्रिक बसें शुरू होंगी। पहले यह योजना 22 अप्रैल को शुरू होने वाली थी लेकिन राष्ट्रीय शोक के कारण इसे स्थगित कर दिया गया। इस योजना का उद्देश्य लास्ट माइल कनेक्टिविटी और टिकाऊ परिवहन को बढ़ावा देना है। इन बसों में 250 मिनी इलेक्ट्रिक बसें और 80 मानक आकार की बसें शामिल हैं।

नई दिल्ली। दिल्ली इलेक्ट्रिक व्हीकल इंटीग्रेशन (डीईवीआई) योजना के तहत दो मई से इलेक्ट्रिक बसें चलने की संभावना है। एक अधिकारी ने बताया कि पहले यह योजना 22 अप्रैल को शुरू होने वाली थी, लेकिन पोप फ्रांसिस के निधन पर राष्ट्रीय शोक घोषित होने के बाद इसे टाल दिया गया था।

लास्ट माइल कनेक्टिविटी और टिकाऊ परिवहन को बढ़ावा देने के लिए सरकार डीईवीआई पहल के तहत सड़कों पर मिनी इलेक्ट्रिक बसें उतारने की तैयारी कर रही है। इसके तहत इन नौ मीटर लंबी 250 मिनी इलेक्ट्रिक बसों के अलावा इस दिन 12 मीटर लंबी 80 मानक आकार की इलेक्ट्रिक बसें सड़कों पर उतारी जाएंगी। इस तरह 330 नई एसी इलेक्ट्रिक बसें सड़कों पर उतरेंगी।

कबूतरों का जोड़ा, जो शिव से 'सृष्टि रहस्य' सुन अमर हो गया

भगवान शिव से संबंधित सबसे पवित्र निवास में हजारों सालों से कबूतर का एक ऐसा जोड़ा रहता है, जो अमर माने जाते हैं. उनकी आयु कितनी है कोई नहीं बता सकता. इस दुर्गम जगह में जाने वाले श्रृद्धालुओं को कबूतर का जोड़ा अक्सर नजर आ जाता है. इसके पीछे एक कहानी है.

करीब दो साल पहले लोकप्रिय टीवी प्रोग्राम कौन बनेगा करोड़पति में अमिताभ बच्चन ने इससे संबंधित एक सवाल भी पूछा था. ये सवाल 50 लाख रुपए के लिए पूछा गया था. सवाल था वो कौन सा मंदिर है जहां भगवान शिव से सृष्टि का रहस्य को सुनने के बाद वहां रहने वाले कबूतर का जोड़ा अमर हो गया.

जवाब के विकल्प के तौर पर कई प्रसिद्ध मंदिरों के नाम लिए गए. इसमें सोमनाथ, अमरनाथ मंदिर और उज्जैन मंदिर शामिल थे. हॉटसीट पर बैठी प्रतियोगी ने कुछ देर सोचने के बाद अमरनाथ मंदिर को सही जवाब बताया. ये जवाब वाकई सही था. इसकी कहानी बहुत रोचक है.

तीन देवता ही अमर हैं, उसके बाद ये कबूतर

हिंदू मान्यताओं में माना जाता है कि दुनिया में केवल तीन देवता ब्रह्मा, विष्णु और शिव ऐसे हैं, जो अमर हैं. उन्हें अमरता इसलिए हासिल है, क्योंकि वो सृष्टि के रहस्य को जानते हैं, जिसे अमरकथा कहा जाता है. ये कथा ऐसा तत्वज्ञान है, जिसे मालूम हो जाए तो वह अमर हो जाता है. चूंकि शिव ने पहली और आखिरी बार ये कथा एक निर्जन गुफा में पार्वती को सुनाई थी, लिहाजा इस गुफा का नाम ही अमर गुफा हो गया.

अमरनाथ गुफा में रहने वाले वो कबूतर

जब भी कोई अमरनाथ गुफा में जाता है तो वहां उन्हें कबूतर का एक जोड़ा ठंडे स्थान पर बैठा नजर आता है, ये यहां चिरकाल से रह रहा है, कुछ लोग इन्हें शिव-पार्वती भी कहते हैं. उन्हें देखना बहुत शुभ माना जाता है. वैसे आपको बता दें कि इस ठंडी गुफा में कबूतरों का रहना भी किसी हैरत से कम नहीं, क्योंकि इस दुर्गम और ठंडी जगह पर कबूतर नहीं मिलते. उनका मिलना असामान्य बात है.

पार्वतीजी ने जिद पकड़ ली कि उन्हें वो अमरकथा सुननी ही है जो केवल अमरत्व प्राप्त कर चुके ब्रह्मा, विष्णु और महेश को मालूम है. शिव को बात माननी पड़ी. तब वो पार्वती को लेकर सुनसान पड़ी एक गुफा में इसे सुनाने के लिए पहुंचे.

तब शिव ने पार्वती को अमरकथा सुनाई

हुआ ये कि भगवान शिव अमर थे. उन्हें बार -बार जीवन लेने की जरूरत नहीं पड़ती थी. पार्वती को बार बार जीवन लेना पड़ता था. हर बार शिव का वरण करना होता था. तब पार्वती ने उनसे जब पूछा कि ऐसा होने के पीछे वजह क्या है. तब शंकर ने बताया कि इसकी वजह वो अमर कथा है, जो वो जानते हैं, जो इसे सुन लेगा, वो खुद फिर अमर हो जाएगा.

शिव को ये कथा पार्वती को सुनानी पड़ी

तब पार्वती ने जिद पकड़ ली कि वो तो इस कथा को जरूर सुनेंगी. शिव ने बहुत मना करने की कोशिश की लेकिन हार माननी पड़ी. अब उन्हें पार्वती को ये अमरकथा तो सुनानी थी लेकिन ये ध्यान भी रखना था कि कोई और इसे बिल्कुल नहीं सुन पाए. इसलिए उन्होंने साथ रहने वाले अनुचरों को छोड़कर पार्वती के साथ इस सुनसान गुफा का रुख किया.

अमरनाथ गुफा में जाने वाले श्रृद्धालुओं को एक कबूतर का जोड़ा वहां कभी कभी नजर आता है. अगर ये दीख जाए तो इसे बहुत शुभ मानते हैं.

अपने नाग भी गुफा के बाहर छोड़ दिए

मान्यता है कि शंकर जब पार्वती को अमर कथा सुनाने ले जा रहे थे, तो उन्होंने गले में धारण किए जाने वाले छोटे नागों को भी बाहर छोड़ दिया. जहां उन्हें छोड़ा उसका नाम अनंतनाग पड़ा. माथे के चंदन को चंदनबाड़ी में उतारा. पिस्सुओं को पिस्सू टॉप पर. आखिर में बारी आई शेषनाग की. जिसे शेषनाग नामक जगह पर छोड़ा गया. ये सारी जगहें अमरनाथ यात्रा पर जाने पर रास्ते में आती हैं.

गुफा में पहले कबूतर का एक जोड़ा था

शिव जब इस गुफा में पहुंचे तो उनका ध्यान वहां पहले से बैठे कबूतरों के जोड़े पर नहीं गया. शिव समाधिस्थ हुए. उन्होंने पार्वती को कथा सुनानी शुरू की. कथा लंबी थी लिहाजा पार्वती को बीच में ही नींद आ गई लेकिन कबूतर ध्यान से सुनते रहे. कथा सुनाने के बाद जब शिव ने समाधि भंग की तो देखा पार्वती तो सो रही हैं लेकिन कबूतरों का एक जोड़ा टुकुर - टुकुर उनकी ओर ध्यान लगाए बैठा है.

अमरनाथ गुफा कोई छोटी गुफा नहीं है बल्कि 19 मीटर लंबी और 16 मीटर चौड़ी है. इसकी ऊंचाई 11 मीटर है. (विकी कामंस)

शिव के गुस्से से ये कबूतर कैसे बचे शिव नाराज हो गए कि ये क्या हो गया. उन्होंने उन कबूतरों को मारने का प्रयास ही किया था कि दोनों कबूतर उनकी शरण में चले गए. कबूतरों ने उनसे प्रार्थना की कि अगर उन्होंने उन्हें मार दिया तो कथा का औचित्य क्या रह जाएगा. वो तो गलत साबित हो जाएगी.

शिव ने उन्हें छोड़ दिया. दोनों को आशीर्वाद भी दिया कि अब वह इस गुफा में हमेशा शिव - पार्वती की तरह निवास करेंगे. इसी वजह से वो कबूतरों का जोड़ा वहां अब भी रहता है. हिंदू पौराणिक कथाओं में कबूतरों को देवताओं का दूत माना जाता है. उन्हें अक्सर भगवान विष्णु और भगवान शिव से जोड़ा जाता है.

हर साल गुफा में तैयार होती है बर्फ की विशाल शिवलिंग

वैसे ये पवित्र गुफा हर जाड़े में ऐसा शिवलिंग बर्फ से तैयार करती है, जिसका कोई जोड़ नहीं. इसे देखने के लिए हजारों लोग दूर दूर से यहां आते हैं. ये शिवलिंग बिल्कुल प्रकृति द्वारा तैयार होता है और धीरे धीरे बर्फ जब पिघलती है तो इस हिमानी शिव लिंग का भी लोप हो जाता है. इस गुफा की लंबाई (भीतर की ओर गहराई) 19 मीटर और चौड़ाई 16 मीटर है. गुफा 11 मीटर ऊंची है.

क्यों मुस्लिम गड़रिये को भी मिलता है गुफा का चढ़ावा

अमरनाथ गुफा का सबसे पहले पता सोलहवीं शदी की शुरुआत में एक मुसलमान गडरिए को चला था. आज भी चौथाई चढ़ावा उस मुसलमान गडरिए के वंशजों को मिलता है. हैरानी की बात यह है कि अमरनाथ गुफा एक नहीं है बल्कि अमरावती नदी के पथ पर आगे बढ़ते समय और भी कई छोटी-बड़ी गुफाएं दिखती हैं, जो सभी बर्फ से ढकी हैं।

महामृत्युंजय मंत्र का अर्थ

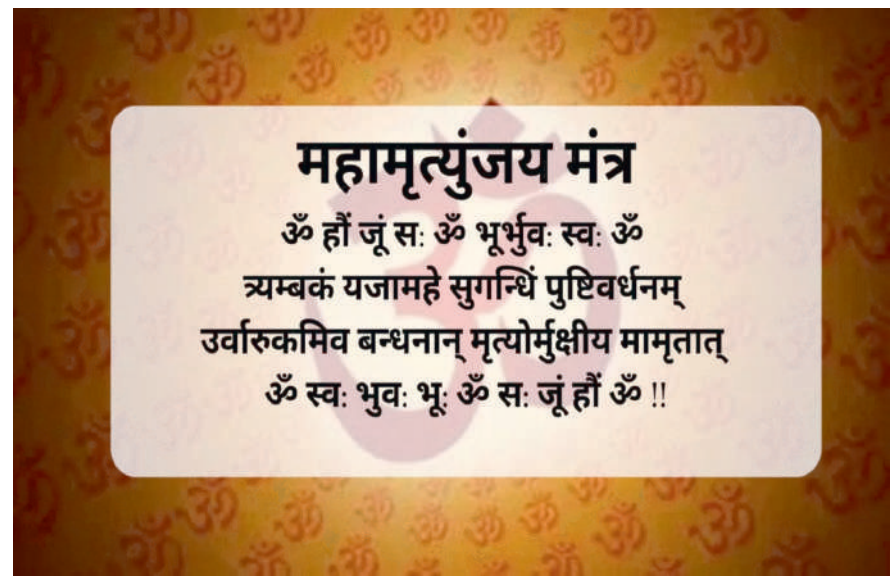

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनान्- मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

महामृत्युंजय मंत्र का अर्थ

त्र्यंबकम् का अर्थ है भगवान शिव की तीन आंखें। त्रिया का अर्थ है तीन और अंबकम का अर्थ है आंखें। ये तीन आंखें तीन मुख्य देवता हैं- ब्रह्मा, विष्णु और शिव। तीन 'अंबा' का अर्थ है माता या शक्ति जो सरस्वती, लक्ष्मी और गौरी हैं। इस प्रकार इस शब्द त्र्यंबक्कम/त्र्यंबकम् में, हम ब्रह्मा, विष्णु और शिव के रूप में भगवान की अभिव्यक्ति का उल्लेख कर रहे हैं।

यजामहे का अर्थ है, "हम आपकी स्तुति गाते हैं"।

सुगंधिम का अर्थ है ईश्वर के ज्ञान, उपस्थिति और शक्ति की सुगंध जो हमेशा हमारे चारों ओर रहती है। निश्चित रूप से, सुगंध का अर्थ है ईश्वर के नैतिक कार्य को जानने, देखने या महसूस करने से हमें मिलने वाला आनंद। पुष्टिवर्धनम का अर्थ है कि भगवान इस संसार के पालनहार हैं, और इस तरह वे सभी मनुष्यों के पिता हैं। पोषण समस्त ज्ञान का एक अंतर्निहित भाव भी है, और इस प्रकार वे सूर्य और ब्रह्मा के भी प्रवर्तक हैं।

उर्वारुकमिव का अर्थ है विशाल या बड़ा और शक्तिशाली। आरुकम/ आरुकम का अर्थ है रोग। इस प्रकार उर्वारुकमिव का अर्थ है घातक और चरम रोग। रोग भी तीन प्रकार के होते हैं और तीन गुणों के प्रभाव से उत्पन्न होते हैं, जो अज्ञान, असत्य और कमजोरी हैं।

बंधनयन का अर्थ है बंधा हुआ। इस शब्द को उर्वारुकमिव के साथ पढ़ा जाए तो इसका अर्थ है कि व्यक्ति घातक और तीव्र रोगों से घिरा हुआ है।

मृत्युयोर्मुक्षीय का अर्थ है हमें मोक्ष के लिए मृत्यु से मुक्त करना।

मामृतात् का अर्थ है 'कृपया मुझे कुछ अमरता का अमृत प्रदान करें ताकि मैं घातक बीमारियों से मृत्यु के साथ-साथ पुनर्जन्म के चक्र से भी बाहर निकल सकूं।

ब्रह्मा, विष्णु और महेश का पिता कौन

ब्रह्मा, विष्णु और महेश के संबंध में हिन्दू मानस पटल पर भ्रम की स्थिति है। वे उनको ही सर्वोतम और स्वयंभू मानते हैं, लेकिन क्या यह सच है? क्या ब्रह्मा, विष्णु और महेश का कोई पिता नहीं है? वेदों में लिखा है कि जो जन्मा या प्रकट है वह ईश्वर नहीं हो सकता। ईश्वर अजन्मा, अप्रकट और निराकार है। शिवपुराण के अनुसार ब्रह्म ही सत्य है वही अधिकारी परमेश्वर है। जिस समय सृष्टि में अंधकार था। न जल, न अग्नि और न वायु था तब वही तत्सदब्रह्म ही था जिसे श्रुति में सत कहा गया है।

।। सत अर्थात अविनाशी परमात्मा ।।

उस अविनाशी परब्रह्म (काल) ने कुछ काल के बाद द्वितीय की इच्छा प्रकट की। उसके भीतर एक से अनेक होने का संकल्प उदित हुआ। तब उस निराकार परमात्मा ने अपनी लीला शक्ति से आकार की कल्पना की, जो मूर्तिरहित परम ब्रह्म है। परम ब्रह्म अर्थात एकाक्षर ब्रह्म। परम अक्षर ब्रह्म। वह परम ब्रह्म भगवान सदाशिव है। अर्वाचीन और प्राचीन विद्वान उन्हीं को ईश्वर कहते हैं। एकांकी रहकर स्वेच्छा से सभी ओर विहार करने वाले उस सदाशिव ने अपने विग्रह (शरीर) से शक्ति की सृष्टि की, जो उनके अपने श्रीअंग से कभी अलग होने वाली नहीं थी। सदाशिव की उस पराशक्ति को प्रधान प्रकृति, गुणवती माया, बुद्धितत्व की जननी तथा विकाररहित बताया गया है। वह शक्ति अम्बिका (पार्वती या सती नहीं) कही गई है। उसको प्रकृति, सर्वेश्वरी, त्रिदेवजननी (ब्रह्मा, विष्णु और महेश की माता), नित्या और मूल कारण भी कहते हैं। सदाशिव द्वारा प्रकट की गई उस शक्ति की 8 भुजाएं हैं। पराशक्ति जगत जननी वह देवी नाना प्रकार की गतियों से संपन्न है और अनेक प्रकार के अस्त्र शक्ति धारण करती है। एकाकिनी होने पर भी वह माया शक्ति संयोगवशात अनेक हो जाती है। उस शक्ति की देवी ने ही लक्ष्मी, सावित्री और पार्वती के रूप में जन्म लिया और उसने ब्रह्मा, विष्णु और महेश से विवाह किया था। तीन रूप होकर भी वह अकेली रह गई थी।

उस कालरूप सदाशिव की अर्धांगिनी है दुर्गा। उस कालरूपी ब्रह्म सदाशिव ने एक ही समय शक्ति के साथ 'शिवलोक' नामक क्षेत्र का निर्माण किया था। उस उत्तम क्षेत्र को 'काशी' कहते हैं। वह मोक्ष का स्थान है। यहां शक्ति और शिव अर्थात कालरूपी ब्रह्म सदाशिव और दुर्गा यहां पति और पत्नी के रूप में निवास करते हैं।

इस मनोरम स्थान काशीपुरी को प्रलयकाल में भी शिव और शिवा ने अपने सान्निध्य से कभी मुक्त नहीं किया था। इस आनंदरूप वन में रमण करते हुए एक समय शिव और शिवा को यह इच्छा उत्पन्न हुई कि किसी दूसरे पुरुष की सृष्टि करनी चाहिए, जिस पर सृष्टि निर्माण (वंशवृद्धि आदि) का कार्यभार रखकर हम निर्वाण धारण करें। ऐसा निश्चय करके शक्ति सहित परमेश्वररूपी शिव ने अपने वामांग पर अमृत मल दिया। फिर वहां से एक पुरुष प्रकट हुआ। शिव ने उस पुरुष से संबोधित होकर कहा, 'वत्स! व्यापक होने के कारण तुम्हारा नाम 'विष्णु' विख्यात होगा।' इस प्रकार विष्णु के माता और पिता कालरूपी सदाशिव और पराशक्ति दुर्गा हैं।

शिवपुराण के अनुसार ब्रह्माजी अपने पुत्र नारदजी से कहते हैं कि विष्णु को उत्पन्न करने के बाद सदाशिव और शक्ति ने पूर्ववत प्रयत्न करके मुझे (ब्रह्माजी को) अपने दाहिने अंग से उत्पन्न किया और तुरंत ही मुझे विष्णु के नाभि कमल में डाल दिया। इस प्रकार उस कमल से पुत्र के रूप में मुझ हिरण्यगर्भ (ब्रह्मा) का जन्म हुआ। मैंने (ब्रह्मा) उस कमल के सिवाय दूसरे किसी को अपने शरीर का जनक या पिता नहीं जाना। मैं कौन हूं, कहां से आया हूं, मेरा क्या कार्य है, मैं किसका पुत्र होकर उत्पन्न हुआ हूं और किसने इस समय मेरा निर्माण किया है? इस प्रकार मैं संशय में पड़ा हूं। इस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र इन * देवताओं में गुण हैं और सदाशिव गुणातीत माने गए हैं। एक बार ब्रह्मा और विष्णु दोनों में सर्वोच्चता को लेकर लड़ाई हो गई, तो बीच में कालरूपी एक स्तंभ आकर खड़ा हो गया। तब दोनों ने पूछा- 'प्रभो, सृष्टि आदि 5 कर्तव्यों के लक्षण क्या हैं? यह हम दोनों को बताइए।'

तब ज्योतिर्लिंग रूप काल ने कहा- 'पुत्रो, तुम दोनों ने तपस्या करके मुझसे सृष्टि (जन्म) और स्थिति (पालन) नामक दो कृत्य प्राप्त किए हैं। इसी प्रकार मेरे विभूतिस्वरूप रुद्र और महेश्वर ने दो अन्य उत्तम कृत्य संहार (विनाश) और तिरोभाव (अकृत्य) मुझसे प्राप्त किए हैं, परंतु अनुग्रह (कृपा करना) नामक दूसरा कोई कृत्य या नहीं सकता। रुद्र और महेश्वर दोनों ही अपने कृत्य को भूले नहीं हैं इसलिए मैंने उनके लिए अपनी समानता प्रदान की है।'

सदाशिव कहते हैं- 'ये (रुद्र और महेश) मेरे जैसे ही वाहन रखते हैं, मेरे जैसा ही वेश धरते हैं और मेरे जैसे ही इनके पास हथियार हैं। वे रूप, वेश, वाहन, आसन और कृत्य में मेरे ही समान हैं।' कालरूपी सदाशिव कहते हैं कि मैंने पूर्वकाल में अपने स्वरूपभूत मंत्र का उपदेश किया है, जो ओंकार के रूप में प्रसिद्ध है, क्योंकि सबसे पहले मेरे मुख से ओंकार अर्थात 'ॐ' प्रकट हुआ। ओंकार वाचक है, मैं वाच्य हूं और यह मंत्र मेरा स्वरूप ही है और यह मैं ही हूं। प्रतिदिन ओंकार का स्मरण करने से मेरा ही सदा स्मरण होता है। मेरे पश्चिमी मुख से अकार का, उत्तरवर्ती मुख से उकार का, दक्षिणवर्ती मुख से मकार का, पूर्ववर्ती मुख से बिन्दु का तथा मध्यवर्ती मुख से नाद का प्राकट्य हुआ। यह 5 अवयवों से युक्त (पंचभूत) ओंकार का विस्तार हुआ। अब यहां 7 आत्मा हो गईं- ब्रह्म (परमेश्वर) से सदाशिव, सदाशिव से दुर्गा।

सदाशिव-दुर्गा से विष्णु, ब्रह्मा, रुद्र, महेश्वर। इससे यह सिद्ध हुआ कि ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र और महेश के जन्मदाता कालरूपी सदाशिव और दुर्गा हैं। ये बातें अन्य पुराणों में घुमा-फिराकर लिखी गई हैं जिससे कि भ्रम की उत्पत्ति होती है। भ्रम को छोड़कर सभी पुराण और वेदों को पढ़ने की चेष्टा करें तो असल में समझ में आएगा। मनगढ़ंत लोकमान्यता के आधार पर अधिकतर हिन्दू सच को नहीं जानते हैं।

संदर्भ : शिवपुराण

विश्व मलेरिया दिवस अंतरास्ट्रीय ट्रस्ट ने जागरुकता अभियान चलाया डॉ हृदयेश कुमार

फरीदाबाद हरियाणा ,28 अप्रैलः तिरखा कॉलोनी बल्लबगढ़ के शिव मंदिर पर अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ एमपी सिंह के नेतृत्व में मलेरिया जागरूकता अभियान चलाकर विश्व मलेरिया दिवस मनाया गया इस अभियान में अनुभवी डाक्टरों द्वारा आधुनिक तरीके से समझाया गया जिसमें आशीर्वाद अस्पताल के डॉक्टर पंकज गुप्ता ने विशेष रूप से प्रकाश डाला जिसमें शिव शंकर राय और सुबोध कुमार शाह की टीम द्वारा पहले वितरित किए गए औषधीय मच्छरदानी के उपयोग पर विशेष ध्यान दिया गया। इन प्रदर्शनों के बाद संवादात्मक चर्चाएँ हुईं, जिससे निवासियों ने सवाल पूछे और अंतर्दृष्टि साझा की, जिससे मलेरिया नियंत्रण के बारे में समुदाय की समझ बढ़ी। यह कार्यक्रम स्वास्थ्य सेवा और सामुदायिक कल्याण के लिए डॉ हृदयेश कुमार संस्थापक अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट की निरंतर प्रतिबद्धता का हिस्सा है। सुष्मिता भौमिक की टीम ने पिछले वर्ष स्वास्थ्य शिविरों, टीकाकरण पहल और विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से अधिक लोगों तक पहुँच बनाई है।

फरीदाबाद में जहां पर गरीबी और अभाव का क्षेत्र है। यह क्षेत्र लंबे समय से नगण्य स्वास्थ्य ढांचे, कम जागरूकता और उच्च रोग बोझ के बोझ तले दबा हुआ है। दशकों से, मलेरिया एक लगातार खतरे के रूप में मंडराता रहा है, बुनियादी स्वच्छता की कमी के कारण इस बीमारी का शिकार हो जाते हैं। हालाँकि, पिछले दो दशकों में यह कहानी बदल गई है - इसका श्रेय काफी हद तक इस क्षेत्र में अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट के निरंतर प्रयासों को जाता है।

डॉ हृदयेश कुमार मानना है कि अच्छा स्वास्थ्य संपन्न समुदायों और सतत विकास का आधार है। हमारी प्रतिबद्धता स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने से कहीं आगे जाती है। हम व्यापक आउटरीच कार्यक्रमों के माध्यम से कल्याण की संस्कृति को बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं जो जमीनी स्तर पर व्यक्तियों को शिक्षित और सशक्त बनाते हैं। चाहे वह मलेरिया की रोकथाम हो, पोषण जागरूकता हो, या योग और कैंसर शिक्षा जैसी समग्र स्वास्थ्य पहल हो, हमारा लक्ष्य स्वस्थ जीवन शैली को सक्षम करके और स्वस्थ समुदायों का निर्माण करके स्थायी प्रभाव पैदा करना है।₹

स्वास्थ्य, शिक्षा, सतत आजीविका, बुनियादी ढांचे और जमीनी स्तर के खेल और संस्कृति में समर्पित हस्तक्षेपों के माध्यम से स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाने के लिए समर्पित है।

स्थानीय अधिकारियों और सामुदायिक हितधारकों के साथ मिलकर काम करके, यह सुनिश्चित करते है कि उसके हस्तक्षेप से ठोस सामाजिक-आर्थिक प्रगति हो।

अक्षय तृतीया का महत्व

30 अप्रैल को अक्षय तृतीया है।

- अक्षय तृतीया को साढ़े तीन शुभ मुहूर्तों में से एक माना जाता है।
- इसे युगादि भी कहा जाता है क्योंकि सत्ययुग और त्रेतायुग दोनों की शुरुआत इसी दिन हुई थी।
- भगवान विष्णु के 24 अवतारों में से परशुराम अक्षय तृतीया के दिन पृथ्वी पर अवतरित हुए थे।
- इसी दिन श्री वेदव्यास ने महाभारत लिखना शुरू किया था।
- इस दिन पवित्र नदी गंगा स्वर्ग से पृथ्वी पर उतरी थी।
- अक्षय तृतीया का यह दिन पितृ पूजा के लिए भी प्रसिद्ध है।
- इसी दिन सुदामा ने श्री कृष्ण को मुट्ठी भर चावल दिए थे और मित्रता व मित्रता के सिद्धांत का पालन करते हुए श्री कृष्ण ने सुदामा को उनकी जानकारी के बिना ही अपार धन-संपत्ति भी प्रदान की थी।
- अक्षय तृतीया के दिन ही देवी पार्वती अन्नपूर्णा के रूप में प्रकट हुई थीं।
- एक अक्षय तृतीया को भगवान कृष्ण ने युधिष्ठिर को अक्षयपात्र प्रदान किया था, जबकि दूसरी अक्षय तृतीया को भगवान कृष्ण ने द्रौपदी की अंत्येष्टि के दौरान उसे अक्षयवस्त्र प्रदान किया था।
- श्री बद्रीनारायण मंदिर के कपाट केवल अक्षय तृतीया पर ही खुलते हैं।
- अक्षय तृतीया शाश्वत सुख का कारण है। इस दिन किए गए जप, तप और दान का पुण्य नष्ट नहीं होता। इस दिन कैलेंडर या सप्ताह का दिन देखने की कोई आवश्यकता नहीं है।
- सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह शुभ दिन भगवान विष्णु की पूजा करने, भगवान विष्णु के नाम का जाप करने और भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त करने का दिन है। इस दिन विष्णु सहस्रनाम का निरंतर पाठ करना चाहिए।
- कहा जाता है कि अक्षय तृतीया के दिन पितरों को याद करना चाहिए और उस अवसर पर तर्पण, तर्पण और दान करना चाहिए। *पी.एच. श्री वासुदेवानंद टेम्बे स्वामी ने कहा है - विष्णुसहस्रनाम का पाठ करने से हमारे पूर्वजों को मोक्ष की प्राप्ति होती है और इसके लिए अक्षय तृतीया से उपयुक्त कोई अन्य दिन नहीं है।

#कॉपी किया गया

श्री परशुराम जयंती आज

हर साल वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को भगवान विष्णु के छठे अवतार भगवान परशुराम जी का जन्मोत्सव मनाया जाता है। इस साल यह 29 अप्रैल को मनाया जाएगा। पंचांग के अनुसार तृतीया तिथि 29 अप्रैल को सायं 5 बजकर 31 मिनट पर शुरू होगी और 30 अप्रैल को दोपहर 02 बजकर 12 मिनट पर समाप्त होगी। भगवान परशुराम का अवतार प्रदोष काल में हुआ है, इसलिए 29 अप्रैल को प्रदोष काल में भगवान परशुराम जन्मोत्सव मनाया जाएगा। अक्षय तृतीया का पर्व उदया तिथि में 30 अप्रैल को मनाया जाएगा।

भगवान परशुराम ने दिया एकता का सूत्र भगवान परशुराम ने एकता का सूत्र संसार को दिया है। सभी जाति और समाजों में समरसता का संदेश दिया है।भारतीय वाङमय में सबसे दीर्घ जीवी चरित्र परशुराम जी का है। सतयुग के समापन से कलयुग के प्रारंभ तक उनका उल्लेख मिलता है। भगवान परशुराम जी के जन्म समय को सतयुग और त्रेता का संधिकाल माना जाता है। भारतीय इतिहास में इतना दीर्घजीवी चरित्र किसी का नहीं है। वे हमेशा निर्णायक और नियामक शक्ति रहे। दुष्टों का दमन और सत-पुरूषों को संरक्षण उनके चरित्र की विशेषता है। उनका चरित्र अक्षय है, इसलिए उनकी जन्म तिथि वैशाख शुक्ल तृतीया को माना गया। इस दिन का प्रत्येक पल, प्रत्येक क्षण शुभ मुहूर्त माना जाता है। विवाह के लिए या अन्य किसी शुभ कार्य के लिए अक्षय तृतीया के दिन अलग से मुहूर्त देखने की जरूरत नहीं है। उनके जीवन का समूचा अभियान, संस्कार, संगठन, शक्ति और समरसता के लिए समर्पित रहा है।

मानव जीवन को व्यवस्थित ढांचे में ढाला भगवान परशुराम ने मानव जीवन को व्यवस्थित ढांचे में ढालने का महत्वपूर्ण कार्य किया। दक्षिण के क्षेत्र में जाकर वहां कमजोर समाज को एकत्रित कर समुद्र तटों को रहने योग्य बनाया। अगस्त ऋषि से समुद्र से पानी निकालने की विद्या सीख कर समुद्र के किनारों को रहने योग्य बनाया। एक बंदरगाह बनाने का भी प्रमाण परशुराम जी का मिलता है। वही परशुराम जी ने कैलाश मानसरोवर पहुंचकर स्थानीय लोगों के सहयोग से पर्वत का सीना काटकर ब्रह्म कुंड से पानी की धारा को नीचे लाये जो ब्रह्मपुत्र नदी कहलायी।

भगवान परशुराम समतावादी समाज का निर्माण करने वाले थे। भले ही उन्हें ब्राह्मणों का हितैषी और क्षत्रियों का विरोधी माना जाता रहा है। यह परशुराम जी को बेहद संकुचित आधार पर देखने की दृष्टि है। हम महापुरुषों को उनकी जाति के आधार पर देखते हैं। पर सच यह है कि उन्होंने क्षत्रियों को इसलिए पराजित नहीं किया कि वह क्षत्रिय थे या ब्राह्मण नहीं थे। उन्होंने क्षत्रिय समाज के उन अहंकारी राजाओं को परास्त किया जो समाज रक्षण का मूल धर्म भूल गए थे। क्षत्रियों पर उनके क्रोध के पीछे का कारण को समझने से पता चलता है कि उस समय क्षत्रियों के अत्याचार और अन्याय इतने बढ़ गए थे कि उन्होंने क्षत्रियों को सबक सिखाने का प्रण किया। दूसरा अपने मौसा जी सहस्त्रबाहु द्वारा अपने पिता के आश्रम पर आक्रमण और पिता की हत्या ने भी परशुराम के क्रोध को भड़का दिया।

भृगु वंश परशुराम भृगु वंशी थे। यह वही भृगु वंश है, जिसमें भृगु ऋषि ने अग्नि का आविष्कार किया था। श्रीमद्भगवद्गीता के दसवें अध्याय में भगवान ने कहा- ₹मैं ऋषियों में भृगु हूं₹ ! महर्षि भृगु को संसार का पहला प्रचेता लिखा गया है। विष्णु पुराण के अनुसार नारायण को ब्याहीं श्री लक्ष्मी महर्षि भृगु की ही बेटी थीं। समुद्र मंथन से उत्पन्न लक्ष्मी तो उनकी आभा थी। भृगु वंश में ही महर्षि मार्कण्डेय, शुक्राचार्य, ऋचीक, विधाता, दधीचि, त्रिशिरा, जमदग्नि, च्यवन और नारायण का ओजस्वी अवतार भगवान परशुराम जी का जन्म हुआ।

महर्षि भृगु को अंतरिक्ष, चिकित्सा और नीति का जनक माना जाता है। अंतरिक्ष के ग्रहों और तारागणों की गणना का पहला शास्त्र भृगु संहिता है। वामन अवतार के बाद परशुराम का अवतार हुआ। वामन अवतार जहां जीव के जैविक विकास क्रम का लघु रूप था। वहीं परशुराम मानव जीवन के विकास क्रम के संपूर्णता के प्रतीक थे। ब्राह्मण समाज में भी उन्होंने सत्ता दी जो संस्कारी थे, सदाचारी थे। वही यदि कोई ब्राह्मण संस्कार विहीन है तो उसे भी पदावनत किया। साथ ही अगर कोई संस्कारवान है तो उसे ब्राह्मणों की श्रेणी में रखने में भी उन्होंने संकोच नहीं किया। उनका भाव इस जीव सृष्टि को इसके प्राकृतिक सौंदर्य सहित जीवंत बनाए रखना था। वे चाहते थे कि यह सारी सृष्टि पशु पक्षियों, वृक्षों, फल फूल और समूची प्रकृति के लिए जीवित रहे। उनका कहना था कि राजा का धर्म वैदिक जीवन का प्रसार करना है ना कि अपनी प्रजा से आज्ञापालन करवाना।

कलिकाल के अंत में होंगे उपस्थित परशुराम जी का यह उदाहरण समरस समाज के निर्माण में उनके योगदान को दर्शाता है, जिसकी आज चर्चा होनी चाहिए। भगवान परशुराम किसी समाज विशेष के आदर्श नहीं है। वे संपूर्ण हिन्दू समाज के हैं और वे चिरंजीवी हैं। उन्हें श्रीराम के काल में भी देखा गया और श्रीकृष्ण के काल में भी। उन्होंने ही भगवान श्रीकृष्ण को सुदर्शन चक्र उपलब्ध कराया था।

चाय और चूल्हा — एक अद्भुत पल: अतीत से वर्तमान तक की यात्रा

(एक जीवन यात्रा - डॉ. अंकुर शरण द्वारा)

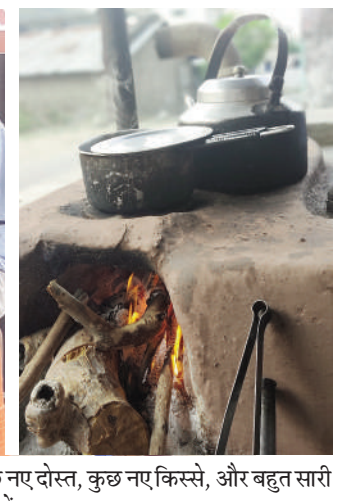

कभी चाय और चूल्हा का दृश्य हमारे रोजमर्रा के जीवन का आम हिस्सा था। धुएं में रची-बसी चूल्हे की वह सौंधी महक, ताज़ी चाय की चुस्कियों के साथ परिवारजनों का हँसी-ठिठोली करना — यह सब एक साधारण लेकिन अनमोल अनुभव था।

आज, शहरी भागदौड़ में ये दृश्य दुर्लभ हो गए हैं। रसोई में गैस स्टोव ने चूल्हे की जगह ले ली, और चाय मशीनों ने वह आत्मीयता छीन ली है, जो कभी मिट्टी से जुड़ी सरलता में छुपी थी।

हाल ही में उत्तराखंड की एक दूरस्थ बस्ती में घूमते हुए, एक ऐसा ही दृश्य देखने को मिला — चूल्हे पर चढ़े बर्तन से उठती भाप और चाय की खुशबू ने एक पल के लिए समय को रोक दिया। लगा जैसे बचपन की दहलीज़ पर वापस आ गए हों। वह एक क्षण, जो आत्मा को छू गया — न कोई बनावट, न कोई दिखावा, बस सच्चाई और सरलता से भरा जीवन।

यह यात्रा केवल स्थानों की नहीं थी, यह आत्म-खोज की यात्रा भी थी। शहरी जीवन की आपाधापी में हम खुद को खोते जा रहे हैं। लेकिन कभी-कभी यदि हम थोड़ा समय निकालकर किसी दूरदराज़ गाँव या प्राकृतिक स्थान की ओर निकलें, तो शायद हम फिर से खुद को पा सकते हैं।

वहाँ न तो शोर है, न ही कृत्रिम रोशनी। केवल प्रकृति की गोद में, सच्चे जीवन के सरल लेकिन गहरे रंग बिखरे पड़े हैं। एक कप चाय, एक चूल्हा, और जीवन का असली अर्थ।

यात्रा तब और भी आनंदमयी हो जाती है जब अनजान राहों पर चलते हुए, किसी छोटी सी चाय की टपरी पर रुक कर अनजाने चेहरों के साथ दोस्ती हो जाती है। चाय की चुस्की के साथ होती हल्की-फुल्की बातें, कुछ हँसी के फव्वारे और जीवन के सहज पल — यह सब मिलकर यात्रा को केवल गंतव्य तक पहुँचने का साधन नहीं, बल्कि एक अविस्मरणीय अनुभव बना देते हैं।

ऐसा ही एक अनुपम अनुभव हमें तब मिला जब हमारे परम आदरणीय श्री राजीव नैथानी जी के साथ उत्तराखंड की एक यात्रा पर थे। वहाँ चाय की एक साधारण सी टपरी पर बैठकर जीवन की छोटी-छोटी खुशियों को महसूस किया।

चाय पर चर्चा शुरू हुई, और तभी हैदराबाद से आए कुछ युवा भी हमारे साथ जुड़ गए। देखते ही देखते अजनबीपन की दीवारें ढह गईं और चाय की प्याली ने अनजानों को भी अपनापन दे दिया।

यही तो असली जीवन है — जहाँ न कोई दिखावा, न कोई औपचारिकता, बस दिल से दिल का सीधा संवाद।

प्रकृति की गोद में, पहाड़ों की ठंडी हवाओं में, और मिट्टी की सौंधी खुशबू के बीच जब चाय की चुस्की ली जाती है, तो हर घूँट में जीवन का असली स्वाद महसूस होता है।

यात्रा केवल स्थलों को देखने का नाम नहीं है; यात्रा उन अनुभवों का संगम है जो दिल में बस जाते हैं — कुछ नए दोस्त, कुछ नए किस्से, और बहुत सारी मीठी यादें।

तो अगली बार जब आप कहीं निकलें, तो अपनी यात्रा को केवल रास्तों तक सीमित न रखें।

चाय की एक छोटी सी टपरी पर रुकिए, मुस्कुराइए, बातें कीजिए और देखिए कैसे एक छोटी सी प्याली, पूरे जीवन में मिठास घोल देती है।

"यात्रा स्थलों से नहीं, अनुभवों से बनती है।"

तो आइए, कभी-कभी भागदौड़ से एक विराम लें।

कहीं दूर चलें — जहाँ चाय का स्वाद मिट्टी सा हो,
चूल्हे का धुआं यादों को ताज़ा कर दे,
और जहाँ खुद से एक बार फिर मुलाकात हो।

"सफर खुद का हो तो हर मोड़ पर मंज़िल मिलती है।"

क्या है आयुष्मान वय वंदना कार्ड? दिल्ली के इन 47 प्राइवेट अस्पतालों में होगा मुफ्त इलाज; यहां जानिए रजिस्ट्रेशन का तरीका

दिल्ली में सोमवार से बुजुर्गों को वय वंदना कार्ड जारी करने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। आयुष्मान वय वंदना कार्ड के जरिये 70 वर्ष या उससे अधिक आयु के बुजुर्गों को 10 लाख रुपये तक का स्वास्थ्य कवर मिलेगा। इस योजना के तहत रजिस्ट्रेशन शुरू हो गया है। जानिए रजिस्ट्रेशन कैसे करें और कौन-कौन से अस्पताल इस योजना से जुड़े हैं।

नई दिल्ली। दिल्ली में आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री आरोग्य योजना (एबी पीएम-जेएवाई) के तहत आयुष्मान वय वंदना योजना शुरू गई। इसके तहत अब 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के बुजुर्गों का आज सोमवार यानी 28 अप्रैल से रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया शुरू हो गई है। इसी क्रम में त्यागराज स्टेडियम में आयोजित एक कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी और मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने बुजुर्गों को कार्ड वितरण शुरू किया। मोहन गार्डन के रहने वाले राम सिंह नेगी को सबसे पहले आयुष्मान वय वंदना कार्ड जारी किया गया। इस कार्यक्रम में 90 बुजुर्गों को यह कार्ड उपलब्ध कराया गया। दिल्ली में छह लाख बुजुर्गों को यह कार्ड जारी होगा। इस योजना के अंतर्गत पात्र बुजुर्गों को एबी पीएमजेएवाई के पैनल में शामिल अस्पतालों में इलाज के लिए प्रति वर्ष दस लाख रुपये तक का स्वास्थ्य कवर मिलेगा। यह कार्ड 70 वर्ष या उससे अधिक आयु के सभी वरिष्ठ नागरिकों को जारी होगा, चाहे उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति कुछ भी हो और वे किसी सरकारी स्वास्थ्य लाभ योजना का हिस्सा न हों। पात्र व्यक्ति निम्न तरीकों से आयुष्मान वय वंदना कार्ड के लिए पंजीकरण और डाउनलोड कर सकते हैं: गूगल प्ले स्टोर से आयुष्मान एप डाउनलोड कर इस एप से पंजीकरण व ई-केवाईसी पूरी कर कार्ड बनाया जा सकता है और उसे डाउनलोड किया जा सकता है। एबी पीएम-जेएवाई की वेबसाइट या आयुष्मान वय वंदना रजिस्टर पोर्टल से भी पंजीकरण और कार्ड डाउनलोड किया जा सकता है। दिल्ली में अभी 47 निजी अस्पताल आयुष्मान भारत योजना से पंजीकृत हुए हैं। लाभार्थी इनमें दस लाख रुपये तक का निशुल्क इलाज पा सकेंगे। केंद्र और दिल्ली सरकार के सभी अस्पतालों में भी इस योजना के अंतर्गत इलाज मिलेगा।

एनआईए ने जारी किया महत्वपूर्ण नम्बर सेव करें!

मुसलमानों द्वारा कोई भी गलत अभद्र हरकत जैसे आतञ्की साजिश, लव-जिहाद, मजार निर्माण, सोशल मीडिया पोस्ट आदि की रिपोर्ट करने के लिए निम्न विशेष फोन नम्बर पर तुरन्त सूचित करें !!

Landline No.: 011-24368800
Mobile No.: 9654447345
WhatsApp No.: 8585931100
Fax No.: 011-24368801
Email Id of NIA : info.nia@gov.in

जो मुसलमान सर तन से जुदा का नारा लगाता दिखाई दे, फेसबुक - ट्विटर और सोशल मीडीया में कहीं भी, सीधा उसका स्क्रीनशॉट लें, लिञ्क कॉपी करें और वोटसएप नम्बर पर भेज दीजिए या कॉल करें ।

इस जानकारी को अपने परिचित लोगों को देकर आप भी नैतिक दायित्व का पालन अवश्य करें ।

पूरा देश कर रहा इंतजार, पहलगाम आतंकी हमले का पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब दे सरकार: अनुराग ढांडा

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली। पहलगाम में पर्यटकों पर हुए आतंकी हमले को लेकर देश के लोगों के मन में उठ रहे तमाम सवालों को सोमवार को आम आदमी पार्टी ने केंद्र सरकार के समक्ष रखा। ''आप'' के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी अनुराग ढांडा ने देशवासियों के मन की बात रखते हुए कहा कि आज पूरा देश इंतजार कर रहा है कि हमले के छह दिन गुजर गए हैं, केंद सरकार कब पहलगाम आतंकी हमले का पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब देगी? भाजपा सरकार को चाहिए कि वह देश को एक फूल टाइम गृहमंत्री दे, जो विधायको की खरीद-फरोख्त व सरकारें गिराने-बनाने के बजाय 24 घंटे देश की सुरक्षा के बारे में सोचे। लोगों के मन में यह भी सवाल उठ रहे हैं कि पहलगाम हमले से कुछ दिन पहले प्रधानमंत्री की जम्मू-कश्मीर यात्रा रद्द की गई, अगर इंटेलिजेंस के किसी इनपुट के चलते यात्रा रद्द हुई थी, तो पर्यटकों के लिए सुरक्षा मजबूत क्यों नहीं की गई?

अनुराग ढांडा ने पार्टी मुख्यालय पर प्रेसवार्ता कर कहा कि पहलगाम आतंकी हमले को छह दिन हो चुके हैं और पूरा देश इंतजार कर रहा है कि जिन लोगों ने बहुत बेदर्दी से हिन्दुस्तानियों की हत्या की और देश पर आतंकी हमला किया, उनको पूरी तरह से बर्बाद कर दिया जाए। पूरे देश में यही चर्चा है कि भारत इन आतंकियों को मुंहतोड़ जवाब दे और नेस्तानाबूत कर दें। आतंकी हमले को लेकर कुछ बातें देश के लोगों के मन में हैं। लोगों के मन में उठ रहे उन सवालों को आम आदमी पार्टी केंद्र सरकार तक पहुंचाना चाहती है।

अनुराग ढांडा ने कहा कि लोगों के मन में सवाल है कि अटारी रूट के बारे में केंद्र सरकार बहुत स्पष्ट कहा कि इसको बंद कर देना चाहिए और पाकिस्तान के साथ भारत व्यापार नहीं करेगा। यह बिल्कुल सही बात है। जिस तरह से पाकिस्तान आतंकियों का साथ दे रहा है और वह दुश्मन देश है। किसी भी दुश्मन देश के साथ संबंध और व्यापार नहीं होने चाहिए। यह भी चर्चाएं हैं कि क्या गुजरात और महाराष्ट्र के पोर्ट से भी सरकार ने पाकिस्तान के साथ व्यापार बंद कर दिया है। इस बारे में स्थिति स्पष्ट नहीं है। हमारी राय है कि पाकिस्तान से भारत का व्यापार पूरी तरह से बंद होना चाहिए ताकि व्यापारिक तौर पर भी पाकिस्तान की कमर टूटे।

अनुराग ढांडा ने दूसरा सवाल किया कि बॉर्डर से करीब 250 किलोमीटर अंदर आकर आतंकवादी हमला करते हैं और काफी देर तक फायरिंग करके वहां से निकल जाते हैं। देश के लोगों के मन में सवाल है कि आखिर ऐसा कैसे हो पाया। इसकी एक तय समय सीमा के अंदर जांच होनी चाहिए और अगर अपने सिस्टम के अंदर भी कोई दोषी है तो उनकी पहचान सार्वजनिक की जानी चाहिए। ऐसा नहीं हो कि पुलवामा में हुए आतंकी हमले को लेकर एक जांच बैठाई गई थी। जांच बैठाए छह साल हो गए लेकिन किसी को भी नहीं पता है कि पुलवामा हमले में कौन लोग शामिल थे, कैसे भारी मात्रा में बारूद वहां तक पहुंचा, कैसे आतंकी काफिले के अंदर पहुंचने मे कामयाब हुए। इन सवालों के जवाब मिलने चाहिए। देश के अंदर इतने अंदर तक आकर आतंकियों ने

हमला कैसे कर दिया और इसके लिए कौन लोग जिम्मेदार हैं, उनके खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए।

अनुराग ढांडा ने तीसरा सवाल करते हुए कहा कि पहलगाम आतंकी हमले से साफ हो गया है कि अब पाकिस्तान एक तरीके से आतंकवाद को आगे बढ़ाने पर काम कर रहा है। पाकिस्तान का नया माड्यूल है कि वह भारत को धार्मिक आधार पर बांटना चाहता है। पहली बार इस प्लानिंग के साथ हमला किया गया, जिससे धार्मिक आधार पर लोगों के बीच में कटुता पैदा हो और देश के अंदर धार्मिक आधार पर नफरत पैदा हो। देश के अंदर कई संगठन और लोग हैं जो सोशल मीडिया के जरिए हिन्दू-मुस्लिम कराकर, दूसरे धर्म के खिलाफ नफरती संदेश डाल कर पाकिस्तान के एजेंडे को आगे बढ़ा रहे हैं। केंद्र सरकार को इन लोगों के खिलाफ ठोस कार्रवाई करनी चाहिए। चाहे वह किसी पार्टी, पद या कोई संगठन ही क्यों न हो, अगर वह पाकिस्तान के एजेंडे को आगे बढ़ाते हुए देश में धर्मों को लेकर आपस में नफरत पैदा कर रहा है तो उसके खिलाफ ठोस कार्रवाई होनी चाहिए।

अनुराग ढांडा ने चौथा सवाल करते हुए कहा कि हिन्दुस्तान बहुत बड़ा देश है। भारत की सुरक्षा की चुनौतियां बहुत सारी हैं। कश्मीर से लेकर कन्या कुमारी तक हर राज्य में सुरक्षा को लेकर अलग- अलग तरीके की गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। भारत में पार्ट टाइम गृह मंत्री से काम नहीं चल सकता है। भारत में एक फूल टाइम गृहमंत्री होना चाहिए जो 24 घंटे देश के लोगों की सुरक्षा के बारे में सोचे। देश के लोगों को सुरक्षित करने के लिए 24 घंटे योजनाए बनाए। भाजपा सरकार देश को एक फूल टाइम गृहमंत्री दे, जो विधायक खरीदने और सरकारें बनाने व गिराने के बजाय देश के लोगों की सुरक्षा के बारे में 24 घंटे सोच सके।

अनुराग ढांडा ने पांचवां सवाल किया कि पहलगाम आतंकी हमले की घटना से पहले वहां सुरक्षा व्यवस्था थी जो कुछ दिन पहले ही हटा ली गई थी। किसके आदेश पर पहलगाम से सुरक्षा बलों को हटाया गया था, उसका नाम सार्वजनिक होना चाहिए। देशवासियों को जानने का हक है कि देश को इतने बड़े खतरे में किसने डाला। जहां हजारों पर्यटक मौजूद थे, वहां से सुरक्षा क्यों हटाई गई।

उन्होंने छठां सवाल करते हुए कहा कि पहलगाम हमने से कुछ दिन पहले पीएम नरेंद्र मोदी की जम्मू-कश्मीर की यात्रा अचानक रद्द कर दी गई। क्या इस तरह के हमले के इंटेलीजेंस के कोई इनपुट थे, जिसकी वजह से पीएम की यात्रा को रद्द किया गया था? अगर हमले के इनपुट की वजह से पीएम की यात्रा को रद्द किया गया था तब भी सुरक्षा पर ध्यान क्यों नहीं दिया गया? इसके लिए गृहमंत्रालय का कौन अधिकारी या गृहमंत्री दोषी है, उसके खिलाफ सरकार क्या कार्रवाई करने जा रही है। आज पूरा देश बहुत गुस्से में हैं। लोगों का खून खौल रहा है। हम दुश्मन से ऐसा बदला लेना चाहते हैं कि देश पर हमला करने वाले आतंकी पूरी तरह से नेस्तनाबूत हो जाएं। पूरा देश सरकार के साथ खड़ा है। जब पूरा देश पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए एकमत है तो सरकार कब ठोस कदम उठाएगी और पाकिस्तान को सबक सिखाएगी। पूरे देश के लोग इसका इंतजार कर रहे हैं।

कांग्रेस की जीत का रास्ता बूथ से निकलेगा-देवेंद्र यादव

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेंद्र यादव के नेतृत्व में आज प्रदेश कार्यालय राजीव भवन में संगठन सृजन अभियान के तहत दिल्ली कांग्रेस के बूथ मैनेजमेंट कमेटी की ओर से ''बूथ जीतो-चुनाव जीतो'' बूथ मैनेजमेंट पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें दिल्ली की सभी विधानसभाओं के बीएलए-1 तथा विभाग के अन्य पदाधिकारी को प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण शिविर को प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र यादव, दिल्ली प्रभारी काजी निजामुद्दीन, दिल्ली सरकार के पूर्व मंत्री डा0 नरेन्द्र नाथ, अ0भा0क0कमेटी के पूर्व सचिव रोहित चौधरी, लीगल विभाग के चेयरमैन एडवोकेट सुनील कुमार आदि नेताओं ने सम्बोधित किया। कार्यक्रम का आयोजन बूथ मेनेजमेंट कमेटी के चेयरमैन राजेश गर्ग ने किया।

प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि बीएल-1 विधानसभा व जिला निर्वाचन कार्यालयों की बैठकों में भाग लेकर पार्टी का पक्ष मजबूती रखें। विधानसभा के नेताओं और कार्यकर्ताओं को बैठक की पूर्व सूचना व सुझाव भी दें। विधानसभा के सभी कॉंग्रेस साथियों के दिए गए डेटा को अपडेट करना, जिन साथियों का नाम उसमें नहीं है उसमें डाल कर प्रदेश आफिस में देना। विधानसभा के व जिले आदि वाट्सएप ग्रुप मैनेज करना, उनमे विधानसभा के सभी कॉंग्रेस साथियों को जोड़ना। विधानसभा के सभी कॉंग्रेस के साथियों के सहयोग से बीएल-2 साथियों का चयन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाऐंगे।

देवेंद्र यादव ने कहा कि बूथ मैनेजमेंट कमेटी के अध्यक्ष राजेश गर्ग को बधाई देता हूँ, जिन्होंने प्रत्येक विधानसभा में बीएलए-1 और ज़िला स्तर पर बूथ मैनेजमेंट के कार्यकर्ताओं की नियुक्ति की है। ये अपने-अपने क्षेत्र में तो बूथ स्तर पर टीम बना रहे हैं बल्कि चुनाव आयोग के अधिकारियों के साथ नियमित बैठक करके चुनाव की तैयारियों और लोगों के वोट बनवा कर उन्हें मतदाता सूची में जोड़ने के साथ साथ जो मतदाता शिफ्ट हो गए या जिनका देहांत हो गया है उनके वोट कटवाने का काम पूरी जिम्मेदारी से निभाते हैं।

उन्होंने कहा के दिल्ली में तकरीबन 13680 बूथ हैं और कांग्रेस की जीत का रास्ता भी बूथ स्तर पर कार्यकर्ताओं की टीम बनाकर ही निकलेगा। उन्होंने कहा के बूथ स्तर का कार्यकर्ता ही पार्टी की विचारधारा और कार्यक्रमों को लागू करने के काम के साथ-साथ सरकार की जनविरोधी नीतियों को उजागर करके जनता तक सही संदेश पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

दिल्ली में 70 वर्ष या उससे अधिक उम्र के बुजुर्गों के लिए आयुष्मान वय वंदना योजना शुरू

मुख्य संवाददाता /सुषमा रानी

नई दिल्ली। त्यागराज स्टेडियम से दिल्ली में 70 वर्ष या उससे अधिक उम्र के बुजुर्गों के लिए आज से आयुष्मान वय वंदना कार्ड का वितरण शुरू हो गया। इस कार्ड के जरिए बुजुर्गों को 10 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज मिलेगा, जिसमें 5 लाख रुपये आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (पीएमजेएवाई) के तहत और 5 लाख रुपये का अतिरिक्त स्वास्थ्य बीमा दिल्ली सरकार देगी। इस योजना की शुरुआत दिल्ली के त्यागराज स्टेडियम में एक भव्य समारोह में मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने की। कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी, स्वास्थ्य मंत्री डॉ. पंकज कुमार, बीजेपी सांसद मनोज तिवारी, मंत्री आशीष सूद और बीजेपी विधायक शामिल हुए। दिल्ली के अलग-अलग इलाकों से आए सैकड़ों बुजुर्ग भी इस ऐतिहासिक पल के गवाह बने।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि अब हमारे

बुजुर्ग हर उस अस्पताल में अपना मुफ्त उपचार करा सकेंगे, जो इस योजना के तहत सूचीबद्ध होगा। आपको इसके एवज में कुछ भी जमा नहीं कराना होगा। आपको बस उपचार कराना होगा और उसका भुगतान सरकार की तरफ से किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने पूर्व की 'आप' सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि पिछली सरकार ने आप लोगों के साथ अन्याय किया। केवल अपने अहम कारणों से पिछली सरकार ने इस योजना को दिल्ली में लागू नहीं होने दिया। आज मैं उनको कहना चाहूंगी कि दिल्ली अब अपने हक से चलेगी और किसी का भी हक नहीं मारा जाएगा। यह सरकार अपने बुजुर्गों के साथ है।

उन्होंने कहा कि मैं केंद्र सरकार का धन्यवाद करना चाहूंगी कि ऐसी योजना पूरे विश्व में किसी भी देश में नहीं है। आप बड़े से बड़े देश का नाम उठा लीजिए, लेकिन ऐसी योजना किसी भी देश ने नहीं दी है। आयुष्मान वय वंदना कार्ड के तहत 70 वर्ष से अधिक उम्र के सभी बुजुर्ग, चाहे वे अमीर हों या गरीब, किसी भी समुदाय से हों, बिना आय सीमा के मुफ्त इलाज का लाभ ले सकेंगे। यह इलाज सरकारी और निजी अस्पतालों में कैशलेस होगा। अगर कार्ड न हो, तो आधार कार्ड या अन्य पहचान पत्र के आधार पर भी इलाज संभव है। दिल्ली में करीब 33 लाख लोग इस योजना से लाभान्वित होंगे, जिसमें 70 वर्ष से कम उम्र के लोग भी शामिल हैं। यह योजना बुजुर्गों को स्वास्थ्य सुरक्षा देने के साथ उनकी चिंताओं को कम करेगी।

सांसद योगेन्द्र चांदोलिया एवं मंत्री रविंद्र इंद्राज सिंह बवाना के आग पीड़ित झुग्गी वासियों से मिले और राहत सुनिश्चित की

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली: दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है कि यह अत्यंत खेदपूर्ण है कि आम आदमी पार्टी के नेता कल से बवाना विधासभा के झुग्गी क्लस्टर में लगी आग पर ओछी राजनीतिक बयानबाज़ी कर रहे हैं। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है कि यह एक पूरी तरह कच्ची झुग्गी बस्ती थी और कल दिन भर हवा भी चलती रही जिसके चलते आग बहुत तेज़ी से फैली और देखते देखते लगभग 800 कच्ची झुग्गियों के साथ ही दो मासूम बच्चों की जान भी चली गई।

भाजपा झुग्गीवासियों के दुख सुख की साथी है और हमने तुरंत राहत संगठित करने पर ध्यान दिया। हमारे बवाना के स्थानीय भाजपा नेता एवं कार्यकर्ता जब लोगों के बीच सहायता पहुंचा रहे थे तो आम आदमी पार्टी के नेता प्रेस कॉन्फ्रेंस कर "कई बच्चे मरे, जैसे उत्तेजक बयान सोशल मीडिया फोरम एक्स पर लिखकर स्थिती बिगाड़ने का प्रयास कर रहे थे।

दिल्ली भाजपा के महामंत्री एवं उत्तर पश्चिम दिल्ली से सांसद योगेन्द्र चांदोलिया और दिल्ली सरकार के मंत्री एवं बवाना से विधायक रविन्द्र इंद्राज सिंह आज बवाना विधानसभा के अंतर्गत रोहिणी के सेक्टर 17 में आग से जली झुग्गी बस्ती के पीड़ित निवासियों से मिले। उनके साथ क्षेत्रीय एस.डी.एम., नगर निगम एवं स्लम विभाग के अधिकारी भी थे और उन्होंने सभी सम्बंधित अधिकारियों को सभी पीड़ितों का पुनर्वास सुनिश्चित करने को कहा।

दोनों नेताओं ने कहा है कि बावना रोहिणी अग्निकांड की भयावह घटना ने दिल को दुखी कर दिया है। जिन परिवारों ने इस हादसे में अपने अपनों को खोया है, उनके प्रति भाजपा परिवार की गहरी संवेदनाएँ हैं। दिल्ली सरकार प्रभावित परिवारों को हरसंभव मदद पहुँचाने के लिए पूरी तरह सक्रिय है। संबंधित एस.डी.एम. ने कल तुरंत मौके पर पहुँचकर राहत कार्यों का समन्वय किया था। हमने मोबाइल शौचालय, मेडिकल सहायता और भोजन की व्यवस्था मौके पर उपलब्ध कराई है।

विस्थापित परिवारों को नजदीकी स्कूलों में बनाए गए अस्थायी आश्रयों में शिफ्ट किया जा रहा है, जहाँ उनकी सभी जरूरतों का ध्यान रखा जा रहा है।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता खुद स्थिति पर नज़र रख रही हैं और यह सुनिश्चित कर रही हैं कि सभी प्रभावित परिवारों को समय पर मदद और पुनर्वास मिले।

जलवायु संकट में जैन दर्शन: एक आशा की किरण

जैन धर्म, एक प्राचीन आध्यात्मिक परंपरा, जो केवल आत्मा की शुद्धि और मोक्ष का मार्ग ही नहीं दिखाती, बल्कि प्रकृति के साथ गहन सामंजस्य का दर्शन भी प्रस्तुत करती है। इसके सिद्धांत—अहिंसा, अपरिग्रह और सत्य—न केवल व्यक्तिगत जीवन को संतुलित करते हैं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। आज, जब पृथ्वी जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और संसाधनों के अंधाधुंध दोहन जैसे संकटों से जूझ रही है, जैन धर्म का पर्यावरणीय दर्शन एक प्रेरक प्रकाशपुंज बनकर उभरता है। यह सम्बंध, जो जैन धर्म और पर्यावरण के बीच है, न केवल गहरा और प्रासंगिक है, बल्कि यह हमें पृथ्वी के प्रति अपनी जिम्मेदारी को पुनर्जनन करने का अवसर भी देता है।

जैन धर्म का मूल सिद्धांत अहिंसा है, जो हर जीव के प्रति करुणा और सम्मान की भावना को प्रोत्साहित करता है। जैन दर्शन में प्रत्येक जीव, चाहे वह सूक्ष्म कीट हो या विशाल प्राणी, आत्मा का वाहक माना जाता है। इस विश्वास के आधार पर, जैन अनुयायी प्रकृति के प्रत्येक तत्व—पेड़-पौधों, जल, वायु और मिट्टी—के प्रति संवेदनशीलता बरतते हैं। पर्यावरण संकट के इस दौर में, जब जैव विविधता का ह्रास और प्राकृतिक संसाधनों का अति-उपयोग चरम पर है, अहिंसा का यह सिद्धांत हमें सिखाता है कि प्रकृति के साथ हमारा व्यवहार हिंसा का पर्याय नहीं होना चाहिए। उदाहरण के लिए, जैन धर्म में शाकाहारी जीवनशैली का पालन न केवल पशु हिंसा को कम करता है, बल्कि पर्यावरण पर पड़ने वाले दबाव को भी कम करता है। आधुनिक अध्ययनों के अनुसार, पशुपालन उद्योग ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का एक प्रमुख स्रोत है। इस संदर्भ में, जैन धर्म की अहिंसा पर्यावरणीय स्थिरता के लिए एक व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करती है।

अहिंसा के साथ-साथ, अपरिग्रह सिद्धांत पर्यावरण संरक्षण के लिए एक और महत्वपूर्ण आयाम जोड़ता है। अपरिग्रह, जिसका अर्थ है अनावश्यक संग्रहण और लालसा से मुक्ति, हमें सिखाता है कि हमें केवल उतने ही संसाधनों का उपयोग करना चाहिए, जितने हमारे लिए आवश्यक हैं। आज के उपभोक्तावादी युग में, जहां अत्यधिक उपभोग और बर्बादी ने प्राकृतिक संसाधनों को खतरे में डाल दिया है, अपरिग्रह का यह सिद्धांत एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण प्रदान करता है। जैन अनुयायी इस सिद्धांत को अपने दैनिक जीवन में अपनाते हैं, जैसे कि सादगीपूर्ण जीवनशैली, पुनर्चक्रण और न्यूनतम अपशिष्ट उत्पादन। उदाहरण के लिए, जैन समुदाय में जल और भोजन का संयमित उपयोग एक सामान्य प्रथा है, जो पर्यावरणीय संसाधनों के संरक्षण में योगदान देती है। यह सिद्धांत हमें यह भी सिखाता है कि व्यक्तिगत स्तर पर छोटे-छोटे प्रयास, जैसे कि एकल-उपयोग प्लास्टिक से परहेज या ऊर्जा संरक्षण, सामूहिक रूप से पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। इस प्रकार, अपरिग्रह न केवल व्यक्तिगत संयम को प्रोत्साहित करता है, बल्कि सामूहिक जिम्मेदारी की भावना को भी जागृत करता है।

जैन धर्म में सत्य का सिद्धांत भी पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। सत्य का पालन हमें पर्यावरणीय समस्याओं को उनकी वास्तविकता में स्वीकार करने और उनके समाधान के लिए सक्रिय कदम उठाने की प्रेरणा देता है। आज, जब जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण जैसी समस्याओं को नजरअंदाज करने की प्रवृत्ति आम है, जैन धर्म का सत्य सिद्धांत हमें सच्चाई का सामना करने और इसके प्रति जागरूकता फैलाने का आह्वान करता है। जैन समुदाय अपने स्तर पर पर्यावरणीय जागरूकता के लिए कार्यशालाओं और अभियानों का आयोजन करता है, जो स्थानीय स्तर पर सकारात्मक बदलाव लाते हैं। इसके अतिरिक्त, सत्य का यह सिद्धांत हमें अपने कार्यों के पर्यावरणीय परिणामों की जिम्मेदारी लेने के लिए प्रेरित करता है, जैसे कि कार्बन फुटप्रिंट को कम करने या वृक्षारोपण जैसे कार्यों में भाग लेने के लिए। इस प्रकार, सत्य का सिद्धांत हमें पर्यावरण के प्रति एक नैतिक दायित्व की अनुभूति कराता है।

जैन धर्म का पर्यावरणीय दृष्टिकोण आज के समय में विशेष रूप से प्रासंगिक है, जब विश्व पर्यावरणीय संकट के कगार पर खड़ा है। जैन धर्म के सिद्धांत हमें यह सिखाते हैं कि व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर किए गए प्रयास पृथ्वी के भविष्य को सुरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। जैन समुदाय द्वारा संचालित संगठन, जैसे कि जैन विश्व भारती, वृक्षारोपण, जल संरक्षण और जैविक खेती जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देते हैं। इसके अतिरिक्त, जैन धर्म की शिक्षाएं हमें यह भी सिखाती हैं कि पर्यावरण संरक्षण केवल भौतिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक स्तर पर भी महत्वपूर्ण है। जब हम प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और सम्मान की भावना रखते हैं, तो हम स्वाभाविक रूप से इसके संरक्षण के लिए प्रेरित होते हैं।

जैन धर्म का यह पर्यावरणीय दर्शन हमें एक ऐसी जीवनशैली अपनाने का आह्वान करता है, जो न केवल हमारे लिए, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी लाभकारी हो। अहिंसा, अपरिग्रह और सत्य के सिद्धांतों को आत्मसात करके हम अपने जीवन को सरल और संतुलित बना सकते हैं, साथ ही पृथ्वी के प्रति अपनी जिम्मेदारी को भी पूरा कर सकते हैं। यह प्राचीन दर्शन हमें सिखाता है कि पर्यावरण संरक्षण केवल एक कर्तव्य नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक यात्रा है, जो हमें प्रकृति और स्वयं के साथ जोड़ती है। जैसे एक वृक्ष अपनी जड़ों से पृथ्वी को थामता है, वैसे ही जैन धर्म का दर्शन हमें पर्यावरण के प्रति दृढ़ संकल्प और करुणा के साथ जीने की प्रेरणा देता है। इस यात्रा में, हम न केवल पृथ्वी को बचा सकते हैं, बल्कि एक ऐसी दुनिया का निर्माण कर सकते हैं, जहां प्रकृति और मानवता एक-दूसरे के साथ सामंजस्य में फलें-फूलें।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

राजेश आत्महत्या मामला : कार्रवाई के लिए गहन जांच और पूछताछ में जुटे इंस्पेक्टर प्रदीप सिंह

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां गोविंद नगर के बहुचर्चित राजेश यादव आत्महत्या मामले में सुसाइड नोट और गहन छानबीन से निकले नतीजे के आधार पर आरोपी विनोद यादव को हिरासत में लेकर पुलिस ने पूछताछ शुरू की है, जिसके आधार पर ही अगली कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।

इस मामले में मृतक के भाई द्वारा रिपोर्ट दर्ज कराए जाने की जानकारी देते हुए मामले में आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रहे गोविंद नगर के इंस्पेक्टर प्रदीप कुमार सिंह ने घटना का विवरण देते हुए बताया कि 36 साल के राजेश यादव ने नहर पटरी विवेकानंद नगर दादानगर थाना गोविन्द नगर पर अपने घर के एक कमरे में पंखे से लटक कर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के मुताबिक मृतक राजेश की मृत्यु लटकने के कारण हुई है।

मामले की गहन छानबीन के बाद आरोपी के खिलाफ कार्रवाई की जाने की जानकारी देते हुए गोविंद नगर के इंस्पेक्टर प्रदीप कुमार सिंह ने बताया कि निरीक्षण के दौरान मृतक राजेश यादव के पास से एक सुसाइड नोट बरामद हुआ था, जिसमें किसी विनोद यादव नाम के व्यक्ति का ज़िक्र था जिससे पैसे के लेन देन का विवाद होने के कारण परेशान करना अंकित किया गया था, जिसके फलस्वरूप मृतक द्वारा कर्ज से परेशान होकर आत्महत्या की गई है।

अपने गोविंद नगर की अब तक के कार्यकाल में छोटी बड़ी सभी घटनाओं की सटीक खुलासे के साथ ही संबंधित अपराधियों को भी जेल भेज चुके इंस्पेक्टर प्रदीप सिंह ने बताया कि मृतक के बड़े भाई अवधेश के अनुसार मृतक राजेश यादव छोटा मोटा कंस्ट्रक्शन का कार्य करता था। मृतक के भाई अवधेश की तहरीर पर आरोपी आरोपी विनोद यादव पुत्र सूर्यवीर यादव निवासी टीकर माफ़ी अमेठी हॉल बगाही भट्ठा बाकरगंज बाबूपुरवा को अभियोग पंजीकृत कर आरोपी को हिरासत में लेकर पूछतांछ किए जाने की जानकारी देते हुए गोविंद नगर के इंस्पेक्टर प्रदीप कुमार सिंह ने बताया कि आरोपी कला का पुरवा गॉब में प्लॉट ले रखा है। उसी प्लॉट में कंस्ट्रक्शन का काम मृतक राजेश यादव द्वारा आरोपी से ठेके पर लेकर निर्माण किया जा रहा है। उसी के संबंध में लेंन देन हुआ था। गोविंद नगर के प्रभारी निरीक्षक इंस्पेक्टर प्रदीप कुमार सिंह ने बताया कि आरोपी को विरासत में लेकरकी जा रही गहन पूछताछ जांच पड़ताल से निकले नतीजे के आधार पर ही अगली कार्रवाई की जाएगी।

---: बरसाना :---

उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में स्थित एक प्रमुख धार्मिक स्थल है। जिसे विशेष रूप से राधारानी के जन्म स्थान के रूप में माना जाता है। यह स्थान राधा-कृष्ण भक्ति की भावना से ओत-प्रोत है और विशेषकर ब्रज क्षेत्र में इसे अत्यधिक सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। बरसाना का पौराणिक महत्व और यहां स्थित राधारानी मंदिर (श्री लाड़ली जी मंदिर) का इतिहास अत्यंत महत्वपूर्ण है।

1. बरसाना का पौराणिक महत्व

1. (1) राधारानी का जन्मस्थानः- बरसाना को भगवान श्रीकृष्ण की दिव्य सखी राधारानी का जन्मस्थान माना जाता है। पुराणों के अनुसार राधा जी का जन्म बरसाना में हुआ था और यहीं पर उन्होंने अपना बाल्यकाल बिताया। राधा और कृष्ण का प्रेम और उनकी लीलाएं भारतीय भक्ति परंपरा का प्रमुख अंग हैं और बरसाना राधा की दिव्य लीलाओं के लिए प्रसिद्ध है। इसलिए, बरसाना का धार्मिक महत्व राधा-कृष्ण की पौराणिक कथाओं से जुड़ा हुआ है।

1. (2) भगवान ब्रह्मा की तपस्थलीः- पौराणिक कथाओं के अनुसार, बरसाना वह स्थान भी है जहाँ भगवान ब्रह्मा ने राधा-कृष्ण के दिव्य प्रेम का अनुभव करने के लिए तपस्या की थी। इस क्षेत्र को 'ब्रह्मरज' भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ भगवान ब्रह्मा ने राधा-कृष्ण की उपासना की थी। यह स्थान ब्रज के 12 प्रमुख वन क्षेत्रों में से एक माना जाता है,

1. (3) चार प्रमुख पर्वत (गिरि):- बरसाना चार प्रमुख पर्वतों से घिरा हुआ है, जिन्हें श्रीमद्भागवत में 'ब्रह्म पर्वत' के रूप में वर्णित किया गया है। ये चार पर्वत, चारों वेदों का प्रतीक माने जाते हैं। राधारानी का मंदिर, इन पर्वतों में से एक पर स्थित है और यह इस स्थान की धार्मिक महत्ता को और भी बढ़ाता है।

2. राधारानी मंदिर का इतिहास(श्रीलाड़लीजी मंदिर)

2. (1) प्राचीनताः- राधारानी मंदिर का इतिहास सैकड़ों वर्षों पुराना है। यह मंदिर विशेष रूप से राधा-कृष्ण की प्रेम लीला का प्रतीक है और इसे श्री राधा जी की महिमा के लिए समर्पित किया गया है। यह मंदिर एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित है जिसे ' ब्रह्मगिरि ' कहा जाता है।

2. (2) स्थापनाः- यह माना जाता है कि, इस मंदिर की स्थापना नंद गोस्वामी द्वारा की गई थी, जो वल्लभाचार्य संप्रदाय के अनुयायी थे। वल्लभाचार्य संप्रदाय के अनुयायियों ने राधा-कृष्ण की भक्ति को पूरे भारत में फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसके बाद, यह मंदिर विभिन्न राजवंशों और भक्तों द्वारा संवर्धित किया गया।

2. (3) मंदिर की वास्तुकलाः- राधारानी मंदिर, भारतीय वास्तुकला का एक अद्वितीय उदाहरण है। मंदिर की संरचना सफेद और लाल पत्थरों से निर्मित है, जो इसकी भव्यता और धार्मिक महत्व को प्रदर्शित करती है। मंदिर तक पहुँचने के लिए, भक्तों को सीढ़ियों की एक लंबी श्रृंखला चढ़नी पड़ती है, जिससे भक्तों में भक्ति और श्रद्धा की भावना उत्पन्न होती है। मंदिर का शिखर और उसकी सजावट, मध्यकालीन राजस्थानी शैली की झलक प्रस्तुत करती है, जो इसे स्थापत्य दृष्टि से भी अनूठा बनाती है।

3. पूजा-अर्चना और विशेष अवसर : राधारानी मंदिर में , प्रतिदिन हजारों भक्त दर्शन के लिए आते हैं और यहाँ विशेष रूप से , राधाष्टमी (राधा जी का जन्मदिन) का उत्सव, बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। राधाष्टमी के दिन, भक्तगण यहाँ राधा जी के जन्मोत्सव को मनाने के लिए एकत्र होते हैं और विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान और भजन-कीर्तन का आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त , बरसाना की ' लट्ठमार होली ' भी विश्व प्रसिद्ध है, जहाँ राधा और कृष्ण की होली खेलने की लीला का पुनः मंचन होता है।

वन संपत्ति और प्राकृतिक धरोहर , हमारी जिम्मेदारी

वन संपत्ति और प्राकृतिक धरोहर हमारे देश की सबसे मूल्यवान संपत्तियों में से एक है।

ये हमें जीवन के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान करते हैं, जैसे कि ऑक्सीजन, जल, और भोजन। इसके अलावा, वन संपत्ति और प्राकृतिक धरोहर हमारे देश की सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

वन संपत्ति पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जैसे कि जल चक्र को नियंत्रित करना और मिट्टी का क्षरण रोकना।

वन संपत्ति में जैव विविधता बहुत अधिक है, जिसमें कई दुर्लभ और लुप्तप्राय प्रजातियाँ शामिल हैं ।वन संपत्ति से हमें लकड़ी, फल, और अन्य वन उत्पाद मिलते हैं, जो हमारी अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण हैं।

प्राकृतिक धरोहर हमारी सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो हमारी पहचान और इतिहास को दर्शाती है ।प्राकृतिक धरोहर पर्यटन के लिए एक महत्वपूर्ण आकर्षण है, जो हमारी अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है।

प्राकृतिक धरोहर शिक्षा और अनुसंधान के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है, जो हमें प्राकृतिक संसाधनों के बारे में जानने और उनकी रक्षा करने में मदद करता है।

हमें वन संपत्ति और प्राकृतिक धरोहर का संरक्षण करना चाहिए, जिससे ये आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रहें।

हमें वन संपत्ति और प्राकृतिक धरोहर का जिम्मेदार उपयोग करना चाहिए, जिससे इनका दीर्घकालिक उपयोग सुनिश्चित हो सके ।हमें वन संपत्ति और प्राकृतिक धरोहर के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ानी चाहिए, जिससे लोग इनकी रक्षा करने में मदद करें।

वन संपत्ति और प्राकृतिक धरोहर हमारी सबसे मूल्यवान संपत्तियों में से एक है। हमें इनका संरक्षण और जिम्मेदार उपयोग करना चाहिए, जिससे ये आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रहें। हमें वन संपत्ति और प्राकृतिक धरोहर के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ानी चाहिए, जिससे लोग इनकी रक्षा करने में मदद करें।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़ हरदा मध्य प्रदेश

भगवान विष्णु के छठवें अवतार परशुराम जयंती महोत्सव 29 अप्रैल 2025- परशुराम ने धरती पर अन्याय व अत्याचार के खिलाफ़ आवाज उठाई थी

पृथ्वी पर जब-जब अत्याचार व पाप बढ़ते हैं तो जीवों का कल्याण व रक्षा करने संतो महात्माओं युगपुरुषों का अवतरण हुआ है, बड़े बुजुर्गों का सत्य कथन- **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर भारत को पृथ्वी का सबसे बड़ा आध्यात्मिक महाकुंभ कहा जाता है, ऐसे विचार मैंने अनेकों बार बड़े बुजुर्गों से सुने हैं परंतु वर्तमान समय में हम देख रहे हैं कि कैसे बड़े-बड़े धार्मिक आध्यात्मिक आयोजन भारत में होते रहते हैं, जिसका सबसे बड़ा सटीक उदाहरण हमने अभी महाकुंभ के रूप में देखा जिसनें पूरी दुनियाँ में एक मिसाल कायम की है,हमारे बड़े बुजुर्गों का आदि अनादि काल से कहना रहा है कि जब- जब पृथ्वी पर अन्याय अत्याचार व पापों का सैलाब आता है तो ऊपर वाला किसी ने किसी रूप में अवतरित होकर उन पापियों अत्याचार्यों का दमन करने आते हैं। आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि 29 अप्रैल 2025 को ऐसे ही एक अवतार भगवान विष्णु के छठवें अवतार परशुराम के रूप में हुआ था, इसीलिए ही इस न्याय के देवता की जयंती इस दिन बड़ी धूमधाम से मनाई जाती है, वैसे इस दिन अक्षय तृतीया भी होती है परंतु इस वर्ष 2025 में अक्षय तृतीया 29 या 30 दोनों दिन मनाने की खबरें आ रही है ।चूँकि भगवान परशुराम ने समाज में एकता समरसता का संदेश दिया है जो उनकी जयंती का महत्वपूर्ण पहलू है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, भगवान विष्णु के छठवें अवतार परशुराम जयंती महोत्सव 29 अप्रैल 2025, परशुराम ने धरती पर अन्याय व अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाई थी यह पूरी जानकारी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से ली गई है व इसकी सटीकता का प्रमाण नहीं है परंतु आदि अनादि काल से यह रीत चली आ रही है।

साथियों बात अगर हम भगवान परशुराम के जीवन को जानने की करें तो, उन्होंने एकता का सूत्र संसार को दिया है। सभी जाति और समाजों में समरसता का संदेश दिया है। भारतीय वाङमय में सबसे दीर्घ जीवी चरित्र परशुराम जी का है। सतयुग के समापन से कलयुग के प्रारंभ तक उनका उल्लेख मिलता है। भगवान परशुराम जी के जन्म समय को सतयुग और त्रेता का संधिकाल माना जाता है। भारतीय इतिहास में इतना दीर्घजीवी चरित्र किसी का नहीं है। वे हमेशा निर्णायक और नियामक शक्ति रहे। दुष्टों का दमन और सत-पुरूषों को संरक्षण उनके चरित्र की विशेषता है। उनका चरित्र अक्षय है, इसलिए उनकी जन्म तिथि वैशाख शुक्ल तृतीया को माना गया। इस दिन का प्रत्येक पल, प्रत्येक क्षण शुभ मुहूर्त माना जाता है। विवाह के लिए या अन्य किसी शुभ कार्य के लिए अक्षय तृतीया के दिन अलग से मुहूर्त देखने की जरूरत नहीं है। उनके जीवन का समूचा अभियान, संस्कार, संगठन, शक्ति और समरसता के लिए समर्पित रहा है। मानव जीवन को व्यवस्थित ढांचे में ढाला भगवान परशुराम ने मानव जीवन को व्यवस्थित ढांचे में ढालने का महत्वपूर्ण कार्य किया। दक्षिण के क्षेत्र में जाकर वहां कमजोर समाज को एकत्रित कर समुद्र तटों को रहने योग्य बनाया। अगस्त ऋषि से समुद्र से पानी निकालने की विद्या सीख कर समुद्र के किनारों को रहने योग्य बनाया। एक बंदरगाह बनाने का भी प्रमाण परशुराम जी का मिलता है। वही परशुराम जी ने कैलाश मानसरोवर पहुंचकर स्थानीय लोगों के सहयोग से पर्वत का सीना काटकर ब्रह्म कुंड से पानी की धारा को नीचे लाये जो ब्रह्मपुत्र नदी कहलायी। भगवान परशुराम समतावादी समाज का निर्माण करने वाले थे। भले ही उन्हें ब्राह्मणों का हितैषी और क्षत्रियों का विरोधी माना जाता रहा है। यह परशुराम जी को बेहद संकुचित आधार पर देखने की दृष्टि है। हम महापुरुषों को उनकी जाति के आधार पर देखते हैं। परंतु इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में दिया गया है कि उन्होंने क्षत्रियों को इसलिए पराजित नहीं किया कि वह क्षत्रिय थे या ब्राह्मण नहीं थे। उन्होंने क्षत्रिय समाज के उन अहंकारी राजाओं को परास्त किया जो समाज रक्षण का मूल धर्म भूल गए थे। क्षत्रियों पर उनके क्रोध के पीछे का कारण को समझने से पता चलता है कि उस समय क्षत्रियों के अत्याचार और अन्याय इतने बढ़ गए थे कि उन्होंने क्षत्रियों को सबक सिखाने का प्रण किया। दूसरा अपने मौसा जी सहस्त्रबाहु द्वारा अपने पिता के आश्रम पर आक्रमण और पिता की हत्या ने भी परशुराम के क्रोध को भड़का दिया।

साथियों बात अगर हम हिंदू धर्म में परशुराम जयंती के खास महत्व की करें तो, हिन्दू धर्म में परशुराम जयंती का खास महत्व है, पंचांग के अनुसार, हर साल वैशाख माह के शुक्ल पक्ष में पड़ने वाली तृतीया तिथि पर विष्णु जी के छठे अवतार भगवान परशुराम जी की जयंती मनाने का विधान है, भगवान विष्णु के इस अवतार को बहुत ही उग्र माना जाता है, धार्मिक मान्यता के अनुसार, इस दिन सच्चे मन से भगवान परशुराम की पूजा करने से ज्ञान, साहस और शौर्य आदि की प्राप्ति होती है, साथ ही जीवन में खुशियां बढ़ती हैं। भगवान परशुराम जयंती का धार्मिक महत्व परशुराम जयंती पर श्रद्धालु व्रत रखते हैं, भगवान परशुराम की प्रतिमा या चित्र की विधिपूर्वक पूजा करते हैं, उनके जन्म की कथा का पाठ, हवन और दान करना भी इस दिन विशेष पुण्यकारी माना जाता है, परशुराम जी को ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों के गुणों का प्रतीक माना जाता है, इसलिए उनकी पूजा से ज्ञान, शक्ति और न्याय की प्राप्ति होती है। भगवान परशुराम सात चिरंजीवियों अश्वत्थामा, राजा बलि, परशुराम, विभीषण, महर्षि व्यास, हनुमान, कृपाचार्य इनमें से एक हैं। भगवान विष्णु के छठे अवतार एवं ब्राह्मण जाति के कुल गुरु परशुराम, जिनकी जयंती वैशाख शुक्ल अक्षय तृतीया के दिन मनाई जाती है। मत्स्य पुराण के अनुसार इस दिन जो कुछ भी दान किया जाता है वह अक्षय रहता है यानि इस दिन किए गए दान का कभी भी क्षय नहीं होता है। सतयुग का प्रारंभ अक्षय तृतीया से ही माना जाता है। शास्त्रों के अनुसार भगवान शिव के परम भक्त परशुराम न्याय के देवता हैं, जिन्होंने 21 बार इस पृथ्वी को क्षत्रिय विहीन किया था।

बात अगर हम भगवान परशुराम के जीवन को जानने की करें तो, उन्होंने एकता का सूत्र संसार को दिया है। सभी जाति और समाजों में समरसता का संदेश दिया है। भारतीय वाङमय में सबसे दीर्घ जीवी चरित्र परशुराम जी का है। सतयुग के समापन से कलयुग के प्रारंभ तक उनका उल्लेख मिलता है। भगवान परशुराम जी के जन्म समय को सतयुग और त्रेता का संधिकाल माना जाता है। भारतीय इतिहास में इतना दीर्घजीवी चरित्र किसी का नहीं है। वे हमेशा निर्णायक और नियामक शक्ति रहे।

साथियों बात अगर हम भगवान परशुराम के भृगु वंशी होने की करें तो, यह वही भृगु वंश है, जिसमें भृगु ऋषि ने अग्नि का आविष्कार किया था। श्रीमद्भगव द्गीता के दसवें अध्याय में भगवान ने कहा-रमैं ऋषियों में भृगु हूंर ! महर्षि भृगु को संसार का पहला प्रचेता लिखा गया है। विष्णु पुराण के अनुसार नारायण को ब्याहीं श्री लक्ष्मी महर्षि भृगु की ही बेटी थीं। समुद्र मंथन से उत्पन्न लक्ष्मी तो उनकी आभा थी। भृगु वंश में ही महर्षि मार्कण्डेय, शुक्राचार्य, ऋचीक, विधाता, दधीचि, त्रिशिरा, जमदग्नि, च्यवन और नारायण का ओजस्वी अवतार भगवान परशुराम जी का जन्म हुआ ।महर्षि भृगु को अंतरिक्ष, चिकित्सा और नीति का जनक माना जाता है। अंतरिक्ष के ग्रहों और तारागणों की गणना का पहला शास्त्र भृगु संहिता है। वामन अवतार के बाद परशुराम का अवतार हुआ। वामन अवतार जहां जीव के जैविक विकास क्रम का लघु रूप था। वहीं परशुराम मानव जीवन के विकास क्रम के संपूर्णता के प्रतीक थे। ब्राह्मण समाज में भी उन्होंने सत्ता दी जो संस्कारी थे, सदाचारी थे। वही यदि कोई ब्राह्मण संस्कार विहीन है तो उसे भी पदावनत किया। साथ ही अगर कोई संस्कारवान है तो उसे ब्राह्मणों की श्रेणी में रखने में भी उन्होंने संकोच नहीं किया। उनका भाव इस जीव सृष्टि को इसके प्राकृतिक सौंदर्य सहित जीवंत बनाए रखना था। वे चाहते थे कि यह सारी सृष्टि पशु पक्षियों, वृक्षों, फल फूल और समूची प्रकृति के लिए जीवित रहे। उनका कहना था कि राजा का धर्म वैदिक जीवन का प्रसार करना है ना कि अपनी प्रजा से आज्ञा पालन करवाना।

साथियों बात अगर हम भगवान परशुराम के संबंध में पौराणिक कथाओं की करें तो, भगवान परशुराम का जन्म भृगुश्रेष्ठ महर्षि जमदग्नि द्वारा सम्पन्न पुत्रेष्टि यज्ञ से हुआ। यज्ञ से प्रसन्न देवराज इन्द्र के वरदान स्वरूप पत्नी रेणुका के गर्भ से वैशाख शुक्ल तृतीया को एक बालक का जन्म हुआ था। वह भगवान विष्णु के अवतार माने जाते हैं। पितामह भृगु द्वारा सम्पन्न नामकरण संस्कार के अनन्तर राम,जमदग्नि का पुत्र होने के कारण जामदग्न्य और शिवजी द्वारा प्रदत्त परशु धारण करने के कारण वह परशुराम कहलाए। जब माता पृथ्वी ने श्री विष्णु से की विनती पुराणों के अनुसार कार्तवीर्य अर्जुन नाम का राजा था जो महिष्मती नगरी पर शासन करता था। राजा कार्तवीर्य और उसके अनेकों सहयोगी क्षत्रिय राजा मित्र विनाशकारी कार्यों में लिप्त थे और वह सब मिलकर अकारण ही निर्बलों पर अत्याचार करते थे। उनके अनाचार और अत्याचार से सभी जगह हाहाकार मच गया,निर्दोष जीवों के लिए जीना कठिन हो गया। इस सबसे दुखी होकर माता पृथ्वी ने भगवान नारायण से पृथ्वी और निर्दोष प्राणियों की सहायता करने के लिए विनती की। माता पृथ्वी की मदद के लिए भगवान विष्णु ने परशुराम के रूप में देवी रेणुका और ऋषि जमदग्नि के पुत्र के रूप में अवतार लिया। भगवान परशुराम ने कार्तवीर्य अर्जुन तथा सभी अनाचारी राजाओं का अपने फरसे से वध कर माता पृथ्वी को उनकी हिंसा और क्रूरता से मुक्त कराया।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि भगवान विष्णु के छठवें अवतार परशुराम जयंती महोत्सव 29 अप्रैल 2025- परशुराम ने धरती पर अन्याय व अत्याचार के खिलाफ़ आवाज उठाई थी ।भगवान परशुराम ने समाज में एकता समरसता का संदेश दिया जो उनकी जयंती का महत्वपूर्ण पहलू है। पृथ्वी पर जब-जब अत्याचार व पाप बढ़ते हैं तो जीवों का कल्याण व रक्षा करने संतो महात्माओं युगपुरुषों का अवतरण हुआ है, बड़े बुजुर्गों का सत्य कथन है।

फैमिली के साथ जाने के लिए बेस्ट हैं ये सात सीटों वाली MPV, कीमत 6.09 लाख रुपये से शुरू

परिवहन विशेष न्यूज

भारत में सर्वश्रेष्ठ एमपीवी अक्सर लोग अपने परिवार के साथ लंबी दूरी की यात्रा करना पसंद करते हैं। छोटी कार में पांच से ज्यादा लोगों के साथ सफर करने में परेशानी होती है। आप भी इस तरह अपने परिवार के साथ सफर करते हैं तो सात सीटों वाली MPV को किस कंपनी की ओर से ऑफर किया जाता है। किन विकल्पों पर आप विचार कर सकते हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में सड़कों की स्थिति में पिछले कुछ सालों में काफी सुधार हुआ है। जिस कारण लोग अब कार से भी लंबी दूरी की यात्रा करना पसंद करते हैं। कई लोग अपने बड़े परिवार के साथ भी कार से सफर करते हैं। अगर आप भी पांच से ज्यादा लोगों के साथ सफर करना चाहते हैं तो किस निर्माता की ओर से कौन सी सात सीटों वाली एमपीवी (7 Seater MPVs in India) को ऑफर किया जाता है। किस कीमत पर इनको खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Renault Triber MPV

भारतीय बाजार में सबसे सस्ती एमपीवी के तौर पर रेनो की ओर से ट्राइबर की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से इस गाड़ी में एक लीटर की क्षमता का पेट्रोल इंजन दिया जाता है। जिसमें कई बेहतरीन फीचर और सेफ्टी फीचर मिलते हैं। रेनो ट्राइबर एमपीवी की एक्स शोरूम कीमत 6.09 लाख रुपये से शुरू हो जाती है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 8.97 लाख रुपये तक है। रिपोर्ट्स के मुताबिक रेनो की ओर से जल्द ही इसके फेसलिफ्ट वर्जन को बाजार में पेश किया जा सकता है।

Maruti Ertiga है पसंदीदा एमपीवी

मारुति सुजुकी की ओर से एमपीवी सेगमेंट में अर्टिगा की बिक्री की जाती है। इस गाड़ी को भी 1.5 लीटर पेट्रोल और सीएनजी इंजन के विकल्प के साथ ऑफर किया जाता है। मारुति की यह गाड़ी अपने सेगमेंट में सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली एमपीवी है। इसकी एक्स शोरूम कीमत 8.96 लाख रुपये से शुरू होती है और इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 13.25 लाख रुपये है।

Kia Carens को भी किया जाता है पसंद

पेट्रोल के साथ ही डीजल इंजन को पसंद करने वालों को Kia की ओर से Carnes एमपीवी का विकल्प दिया जाता है। इस गाड़ी में 1.5 लीटर की क्षमता के पेट्रोल और डीजल इंजन दिए जाते हैं। इसमें नेचुरल एस्पिरेटिड के साथ ही टर्बो इंजन के विकल्प भी मिलते हैं। एमपीवी की एक्स शोरूम कीमत 10.59 लाख रुपये से लेकर 19.49 लाख रुपये के बीच है। रिपोर्ट्स के मुताबिक अगले कुछ महीनों के दौरान एमपीवी के फेसलिफ्ट को लॉन्च किया जा सकता है।

Toyota Rumion की भी है मांग

मारुति अर्टिगा की तरह ही डिजाइन वाली टोयोटा की एमपीवी Rumion को भी बाजार में ऑफर किया जाता है। इसमें भी 1.5 लीटर की क्षमता का नेचुरल एस्पिरेटिड और सीएनजी इंजन का विकल्प मिलता है। एमपीवी की एक्स शोरूम कीमत 10.54 लाख रुपये से लेकर 13.83 लाख रुपये के बीच है।

बार-बार नहीं देना होगा टोल टैक्स, एक ही बार में सालभर की हो जाएगी छुट्टी, फास्टैग पर नितिन गडकरी ला रहे नई पॉलिसी

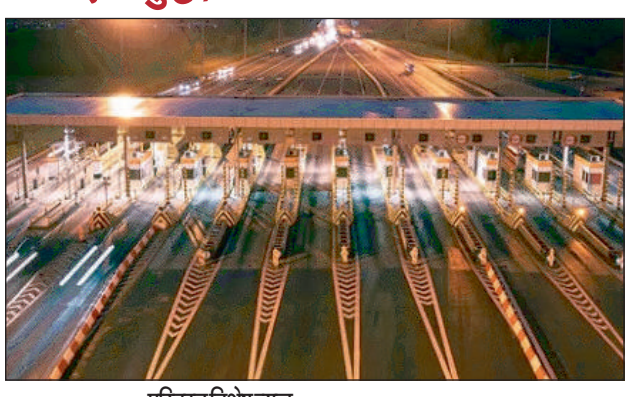

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। देश में हजारों लोग रोजाना नेशनल हाइवे और एक्सप्रेस वे पर सफर करते हैं। इन पर सफर करने के लिए Toll Tax भी वसूल किया जाता है। बार बार टोल देने के कारण कई बार लोग परेशान भी हो जाते हैं। अब इसका समाधान केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की ओर से किया जा रहा है। किस तरह से लोगों को राहत देने की बात कही जा रही है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

जल्द लागू होगी नई टोल नीति

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की ओर से देशभर में जल्द ही नई टोल नीति को लागू किया जा सकता है। जिससे टोल से संबंधित परेशानियों का समाधान हो सकता है। हालांकि अभी इस बारे में किसी भी तरह की आधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है।

कैसे होगा समाधान

जानकारी के मुताबिक नई नीति में सरकार की ओर से लोगों को यह सुविधा दी जाएगी कि वह अपने Fastag को तीन हजार रुपये में रिचार्ज करवा सकते हैं, जिसके बाद अगले एक साल तक उनको किसी भी टोल प्लाजा पर टैक्स नहीं देना होगा। इस रिचार्ज के बाद वह असिमित संख्या में टोल प्लाजा पार कर सकते हैं। जिससे बार बार टोल प्लाजा पर टैक्स देने और मिनिमम बैलेंस रखने की परेशानी से छुटकारा मिल सकता है।

एक और विकल्प पर किया गया था विचार

रिपोर्ट्स के मुताबिक केंद्र सरकार की ओर से एक और विकल्प पर भी विचार किया गया था। जिसके मुताबिक नई कार खरीदने पर ही 30 हजार रुपये दिए जाएं तो अगले 15 सालों तक किसी भी टोल प्लाजा पर पेमेंट नहीं देनी होगी। लेकिन लाइफटाइम पास पर सभी पक्षों में सहमति नहीं बन पाई, जिस कारण इस विकल्प को छोड़ दिया गया।

किसे मिलेगा फायदा

सरकार की ओर से नई नीति के तहत तीन हजार रुपये के फॉर्मूले को लागू किया जाता है तो इसका सबसे ज्यादा फायदा ऐसे लोगों को होगा जो हर महीने एक शहर से दूसरे शहर जाने के लिए नेशनल हाइवे और एक्सप्रेस वे का उपयोग करते हैं।

कैसे होगी नुकसान की भरपाई

रिपोर्ट्स के मुताबिक सरकार की ओर से इस तरह के फैसले को लागू किया जाता है तो इसका नुकसान कंसेसनरों और कांट्रेक्टर्स को होगा। जिसकी भरपाई सरकार की ओर से एक खास फॉर्मूले के तहत की जाएगी। फॉर्मूले के तहत टोल प्लाजा से निकलने वाले वाहनों का डिजिटल रिकॉर्ड रखा जाएगा और कंसेसनर और कांट्रेक्टर्स के दावे और वास्तविक वसूली में जो अंतर मिलेगा उसकी भरपाई एक खास फॉर्मूले के साथ की जाएगी।

वोक्सवैगन टिगुआन आर लाइन हुई भारत में लॉन्च, फॉर्च्यूनर, ग्लोस्टर को मिलेगी चुनौती, कीमत 48.99 लाख रुपये से शुरू

परिवहन विशेष न्यूज

टिगुआन आर लाइन एसयूवी भारतीय बाजार में एसयूवी सेगमेंट के वाहनों को सबसे ज्यादा किया जाता है। जर्मनी की वाहन निर्माता Volkswagen की ओर से औपचारिक तौर पर देश में फुल साइज एसयूवी के तौर पर Tiguan R Line SUV को लॉन्च कर दिया गया है। इसमें किस तरह के फीचर्स मिलेंगे। कितना दमदार इंजन मिलेगा। किस कीमत पर इसे लॉन्च किया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जर्मनी की वाहन निर्माता Volkswagen की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से 14 April 2025 को औपचारिक तौर पर Volkswagen Tiguan R-Line को लॉन्च कर दिया गया है। इसमें किस तरह के फीचर्स दिए गए हैं। कितना दमदार इंजन दिया गया है। किस कीमत पर एसयूवी को खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च हुई Volkwagen Tiguan R-Line

फॉक्सवैगन की ओर से भारतीय बाजार में औपचारिक तौर पर Tiguan R-Line को लॉन्च कर दिया गया है। निर्माता की ओर से इसे फुल साइज एसयूवी सेगमेंट में लॉन्च किया गया है।

कितना दमदार इंजन

फॉक्सवैगन की ओर से तिगुआन आर-लाइन एसयूवी में दो लीटर की क्षमता का टीएसआई ईवो पेट्रोल इंजन दिया गया है। जिससे 204 पीएस की पावर और 320 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। इसमें 7स्पीड डीएसजी ट्रांसमिशन को दिया गया है। इसके साथ ही इसमें 4मोशन ऑल व्हील ड्राइव क्षमता को दिया गया है, जिससे इसे किसी भी तरह की सड़क पर चलाया जा सकता है।

कैसे हैं फीचर्स

Volkswagen Tiguan R Line में निर्माता की ओर से कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया गया है। जिसमें 15 इंच का इंफोटेनमेंट सिस्टम स्क्रीन, वायरलेस एंड्राइड ऑटो, एपल कार प्ले, 10.25 इंच डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, आईडीए वॉयस असिस्टेंट, रोटरी कंट्रोलर के साथ स्क्रीन, आठ स्पीकर ऑडियो सिस्टम, हेड-अप डिस्प्ले, मल्टी जोन क्लाइमेट कंट्रोल, दो वायरलेस चार्जिंग पॉड, एंबिएंट लाइट, पैनोरमिक सनरूफ, मैट्रिक्स हेडलाइट, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट, एलईडी डीआरएल, रूफ रेल जैसे फीचर्स को भी दिया गया है।

कैसे हैं सेफ्टी फीचर्स

एसयूवी में सुरक्षा का भी पूरा ध्यान रखा गया है। इसमें नौ एयरबैग, टीपीएमएस, हिल स्टार्ट असिस्ट और हिल डीसेंट कंट्रोल, फ्रंट और रियर में डिस्क ब्रेक, 21 फीचर्स के साथ Level 2 ADAS जैसे सेफ्टी फीचर्स को दिया गया है।

कितनी है कीमत

फॉक्सवैगन की ओर से एसयूवी को 48.99 लाख रुपये की इंट्रोडक्ट्री कीमत पर लॉन्च किया गया है। कुछ समय बाद इसकी कीमतों में बदलाव भी किया जा सकता है।

किनसे है मुकाबला

Volkswagen Tiguan R-Line एसयूवी को फुल साइज एसयूवी सेगमेंट में लॉन्च किया गया है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Toyota Fortuner, Legender, JSW MG Gloster और जल्द लॉन्च होने वाली Skoda Kodiaq से होगा।

मारुति सुजुकी विटारा का सीएनजी वर्जन हुआ बंद, अब सिर्फ पेट्रोल और हाइब्रिड के साथ आएगी एसयूवी

परिवहन विशेष न्यूज

ग्रैंड विटारा सीएनजी बंद देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Maruti Suzuki की ओर से कई सेगमेंट और तकनीक के साथ कारों को ऑफर किया जाता है। निर्माता की ओर से मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Grand Vitara के CNG वर्जन को बंद कर दिया गया है। अब एसयूवी को किस तरह के इंजन विकल्प में ऑफर किया जाएगा। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत की प्रमुख वाहन निर्माता Maruti Suzuki की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों को ऑफर किया जाता है। निर्माता की ओर से हाल में ही अपनी कारों के दाम बढ़ाए गए थे। जिसके साथ ही कई मॉडल्स को अपडेट भी किया गया था। इसी क्रम में मारुति की मिड साइज एसयूवी Grand Vitara के सीएनजी वेरिएंट्स को हटा (Grand Vitara CNG Discontinued) दिया गया है। अब किस तरह के इंजन विकल्प के साथ एसयूवी को ऑफर किया जा रहा है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Maruti Grand Vitara के CNG वेरिएंट्स हुए बंद

मारुति सुजुकी की ओर से मिड साइज एसयूवी के तौर पर ग्रैंड विटारा को ऑफर किया जाता है। निर्माता की ओर से हाल में ही एसयूवी की कीमतों को अपडेट किया गया था। 8 अप्रैल 2025 को एसयूवी की कीमत में 41 हजार रुपये तक बढ़ाए गए थे। जिसके साथ ही एसयूवी के कुछ वेरिएंट्स को बंद कर दिया गया है। इसमें CNG के सभी वेरिएंट शामिल हैं। बंद करने से पहले एसयूवी के डेल्टा और जेटा वेरिएंट्स में सीएनजी को ऑफर किया जाता था।

मिलती थी 26.60 की माइलेज

Maruti Grand Vitara के सीएनजी वर्जन में भी 1.5 लीटर का इंजन दिया जाता था। जिससे एसयूवी को 88 पीएस की पावर और 122 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता था। इस इंजन के साथ एसयूवी को एक किलोग्राम सीएनजी में 26.60 किलोमीटर तक चलाया जा सकता था।

क्या है कारण

मारुति की ओर से ग्रैंड विटारा के सीएनजी वेरिएंट्स को बंद करने की औपचारिक जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक यह संभावना जताई जा रही है कि कम मांग के कारण मारुति की ओर से सीएनजी वेरिएंट्स को हटा दिया गया है।

पेट्रोल और हाइब्रिड तकनीक के साथ मिलेगी एसयूवी

मारुति ग्रैंड विटारा एसयूवी को अब सिर्फ पेट्रोल और स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड तकनीक (Grand Vitara petrol and hybrid variants) के साथ ही ऑफर किया जा रहा है। इस एसयूवी में 1.5 लीटर का ही पेट्रोल और स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड इंजन दिया जाता है। जिसके साथ मैनुअल और ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के विकल्प ऑफर किए जाते हैं।

कितनी है कीमत

मारुति ग्रैंड विटारा में नए फीचर्स जोड़ने के बाद अब इसकी कीमत को भी अपडेट किया गया है। एसयूवी को 11.42 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर खरीदा जा सकता है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 20.68 लाख रुपये रखी गई है। एसयूवी के अब कुल 18 वेरिएंट्स को ऑफर किया जा रहा है।

किनसे है मुकाबला

मारुति की ओर से ग्रैंड विटारा एसयूवी को चार मीटर से ज्यादा बड़ी एसयूवी सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Toyota Urban Cruiser Hyryder, Honda Elevate, Hyundai Creta, Kia Seltos, MG Astor जैसी एसयूवी के साथ होता है।

एमजी विंडसर ईवी के बेस वेरिएंट को है घर लाना, दो लाख रुपये की अग्रिम भुगतान के बाद जाएगी कितनी ईएमआई

परिवहन विशेष न्यूज

कार फाइनेंस प्लान JSW MG की ओर से EV सेगमेंट में MG Windsor EV को ऑफर किया जाता है। इसके बेस वेरिएंट को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं तो सिर्फ दो लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर EV सेगमेंट की गाड़ी को घर लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। ब्रिटिश वाहन निर्माता JSW MG मोटर्स की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से ऑफर की जाने वाली MG Windsor EV को काफी पसंद किया जाता है। अगर आप भी इसे खरीदने का मन बना रहे हैं तो एक लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इसे घर लाया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

MG Windsor EV Price

एमजी मोटर्स की ओर से Windsor EV के बेस वेरिएंट को 13.99 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर ऑफर किया जाता है। इसे दिल्ली में खरीदने पर ऑन रोड कीमत करीब 14.93 लाख रुपये हो जाती है। इस कीमत में 13.99 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के अलावा करीब 6200 रुपये आरटीओ और इंश्योरेंस के करीब 74 हजार रुपये देने होंगे। इसके अलावा इसके लिए टीसीएस चार्ज के 13998 रुपये देने होंगे। जिसके बाद इसकी ऑन रोड कीमत 14.93 लाख रुपये हो जाती है।

दो लाख रुपये Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर इस गाड़ी के बेस वेरिएंट को आप खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में दो लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 12.93 लाख रुपये की राशि को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको नौ फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 12.93 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने सिर्फ 20814 रुपये हर महीने की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी कार

अगर आप नौ फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 12.93 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 20814 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप MG Windsor EV के लिए करीब 4.54 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आप कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 19.48 लाख रुपये देंगे।

किनसे होगा मुकाबला

JSW MG की ओर से Windsor EV को इलेक्ट्रिक गाड़ी के तौर पर लाया जाता है। बाजार में इसे कई एसयूवी से चुनौती मिलती है, लेकिन इसका सीधा मुकाबला Tata Curvv EV, Mahindra BE6 जैसी इलेक्ट्रिक एसयूवी के साथ होता है।

बाइक टैक्सी बैन पर IAMAI की अपील- उद्योग से सलाह लें और डेटा जमा करने की तारीख बढ़ाएं

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (IAMAI) ने कर्नाटक सरकार से अपील की है कि उन्हें अपने व्हीकल फ्लीट की जानकारी देने के लिए दो महीने की मोहलत दी जाए। IAMAI में Zomato, Swiggy, Ola, Uber और Rapido जैसी बड़ी डिजिटल कंपनियां शामिल हैं।

हाईकोर्ट के आदेश के बाद मचा हलचल

कर्नाटक हाई कोर्ट ने हाल ही में आदेश दिया था कि मई के मध्य तक राज्य में बाइक टैक्सी सेवाओं को सस्पेंड कर दिया जाए। और साथ ही सरकार को इन सेवाओं के लिए एक रेग्युलेटरी पॉलिसी भी तैयार करनी होगी। इस आदेश के बाद IAMAI ने राज्य के परिवहन विभाग के सचिव एनवी प्रसाद को एक चिट्ठी लिखी है।

'नीति बनाते वक्त हमें भी साथ बैठाया जाए'

IAMAI ने चिट्ठी में यह साफ कहा कि बाइक टैक्सी आज शहरी ट्रांसपोर्ट सिस्टम का अहम हिस्सा बन चुकी है और इस पर पॉलिसी बनाने से पहले सरकार को उद्योग से बातचीत जरूर करनी चाहिए। उन्होंने बताया कि बंगलूरू जैसे बड़े शहरों में लाखों लोग रोजाना बाइक टैक्सी का इस्तेमाल करते हैं। जिससे न सिर्फ ट्रैफिक की दिक्कत कम होती है, बल्कि हजारों गिग वर्कर्स की रोजी-रोटी भी इससे जुड़ी है।

सरकार से की संयुक्त कमेटी बनाने की मांग

IAMAI ने यह भी सुझाव दिया कि सरकार एक संयुक्त कमेटी बनाए, जिसमें परिवहन विभाग के अधिकारी, इंडस्ट्री के प्रतिनिधि और गिग वर्कर्स या बाइक टैक्सी यूनियन के सदस्य हों। इस तरह सबकी राय से एक ऐसी नीति बनाई जा सकती है जो संतुलित और सबके हित में हो।

पॉलिसी बनने तक मिले अस्थायी परमिट

IAMAI ने यह मांग भी की है कि जब तक नई नीति लागू नहीं होती, जो एग्रीगेटर कंपनियां सुरक्षा नियमों का पालन कर रही हैं, उन्हें अस्थायी परमिट दिया जाए। ताकि वे अपनी सेवाएं जारी रख सकें और लोगों को असुविधा न हो।

IAMAI ने दोहराया कि वे सरकार के साथ मिलकर एक संतुलित, न्यायसंगत और टिकाऊ रेग्युलेटरी फ्रेमवर्क तैयार करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं, जिससे आम जनता की सुविधा भी बनी रहे और गिग इकोनॉमी को भी नुकसान न पहुंचे।

सरकार की तरफ से अब तक कोई जवाब नहीं

फिलहाल कर्नाटक सरकार ने IAMAI की इस चिट्ठी का कोई आधिकारिक जवाब नहीं दिया है। लेकिन यह साफ है कि आने वाली नीति बाइक टैक्सी ऑपरेटरों और गिग वर्कर्स की आजीविका पर बड़ा असर डाल सकती है।

जंगली जानवरों की अनगिनत प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी हैं या विलुप्त होने के कगार पर हैं

विजय गर्ग

पर्यावरण संकट के कारण जहां विश्व भर में जीवों की असंख्य प्रजातियों के विलुप्त होने से वन्य जीवन की विविधता काफी हद तक समाप्त हो गई है, वहीं हजारों प्रजातियों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। वन्यजीवन और उनकी विविधता अरबों वर्षों से पृथ्वी पर जीवन के सतत विकास की प्रक्रिया का आधार रही है। इस सूची में वे जंगली जानवर और पौधे शामिल हैं

वन्यजीव हमारे ग्रह का अभिन्न अंग हैं, लेकिन निजी हितों और विकास के नाम पर मनुष्यों ने उनके प्राकृतिक आवासों को बेरहमी से नष्ट करने में प्रमुख भूमिका निभाई है और वनस्पतियों को भी मिटा दिया है। पृथ्वी पर अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए मनुष्य को प्रकृति द्वारा दी गई उन सभी चीजों के बीच संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है, जो उसे स्वाभाविक रूप से प्राप्त होती हैं। इसे पारिस्थितिकी तंत्र भी कहा जाता है। पृथ्वी पर जंगली जानवरों और दुर्लभ पौधों की कई प्रजातियों का जीवन चक्र अब खतरे में है। जंगली जानवरों की अनगिनत प्रजातियाँ या तो विलुप्त हो चुकी हैं या विलुप्त होने के कगार पर हैं।

पर्यावरण संकट के कारण जहां विश्व भर में जीवों की असंख्य प्रजातियों के विलुप्त होने से वन्य जीवन की विविधता काफी हद तक समाप्त हो गई है, वहीं हजारों प्रजातियों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। वन्यजीवन और उनकी विविधता अरबों वर्षों से पृथ्वी पर जीवन के सतत विकास की प्रक्रिया का आधार रही है। इस सूची में वे जंगली जानवर और पौधे शामिल हैं जिन्हें मनुष्य द्वारा पालतू नहीं बनाया गया है। इन जंगली जानवरों, पौधों और उनके आवासों को सुरक्षा प्रदान करना वन्यजीव संरक्षण कहलाता है और इनके संरक्षण के लिए समय-समय पर लोगों को जागरूक भी किया जाता है।

विशेष दिन भी मनाए जाते हैं। जानवरों और पौधों की सभी प्रजातियां मिलकर एक बहुत ही महत्वपूर्ण पारिस्थितिक तंत्र प्रदान करती हैं और सही मायनों में जंगली जानवर हमारे मित्र हैं, इसलिए उनकी देखभाल करना बहुत जरूरी है। हमें यह समझना चाहिए कि इस धरती पर जितने अधिकार हमारे हैं, उतने ही अधिकार यहां जन्मे अन्य जानवरों के भी हैं। हालाँकि, आज प्रदूषित पर्यावरण और प्रकृति के बदलते स्वरूप के कारण दुनिया भर में जीव-जंतुओं और अन्य पौधों की कई प्रजातियों के अस्तित्व पर संकट मंडरा रहा है। वन्यजीव जागरूकता के अंतर्गत वनस्पतियों और जीव-जंतुओं की विविधता पर ध्यान केंद्रित करना।

इसका उद्देश्य उनके संरक्षण के लाभों के बारे में जागरूकता फैलाना, विश्व को वन्यजीव अपराधों के बारे में याद दिलाना तथा इन प्रजातियों की संख्या में मानव-कारण हो रही गिरावट के विरुद्ध कार्रवाई करने के बारे में जानकारी देना है। पिछले कुछ दशकों से गंभीर पर्यावरणीय असंतुलन के परिणामस्वरूप संपूर्ण विश्व पर्यावरणीय समस्याओं और प्राकृतिक

आपदाओं के दुष्परिणामों को देख रहा है और भुगत रहा है। लगभग हर देश में कुछ ऐसे जंगली जानवर होते हैं जो उस देश की जलवायु के लिए विशिष्ट होते हैं, लेकिन अंधाधुंध वनों की कटाई और अन्य मानवीय गतिविधियों के कारण जंगली जानवरों के आवास भी बड़े पैमाने पर लगातार नष्ट हो रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र महासभा सदैव विश्व के वन्य जीवन और वनस्पतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने का प्रयास करती रहती है। भारत में वन्यजीवों की सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए ब्रिटिश काल से ही कानूनी प्रावधान किए गए हैं, लेकिन चिंताजनक बात यह है कि इसके बावजूद पिछली सदी में वन्यजीवों की कई प्रजातियां विलुप्त हो गईं। विश्व वन्यजीव कोष की 'लिविंग प्लैनेट रिपोर्ट 2024' ने कुछ महीने पहले ही चौंकाने वाला और चिंताजनक खुलासा किया था कि 1970 से 2020 के बीच स्तनधारी, पक्षी, उभयचर, सरीसृप आदि सहित वन्यजीव आबादी में 73 प्रतिशत की भयावह गिरावट आई है। मीठे पानी के पारिस्थितिकी तंत्र में यह गिरावट 85 प्रतिशत रही है।

हर दो साल में प्रकाशित होने वाली यह रिपोर्ट बताती है कि दुनिया भर में वन्यजीव आबादी किस प्रकार प्रभावित हो रही है। वन्यजीवों को विलुप्त होने से बचाने के लिए देश में पहली बार ब्रिटिश शासन के दौरान 1872 में 'जंगली हाथी संरक्षण अधिनियम' लागू किया गया था। इसके बाद 1927 में 'भारतीय वन अधिनियम' अस्तित्व में आया, जिसमें जंगली जानवरों के शिकार और वनों की अवैध कटाई को अपराध माना गया, जिसके तहत सजा का प्रावधान किया गया। देश की स्वतंत्रता के पश्चात 1956 में 'भारतीय वन अधिनियम' पारित किया गया तथा 1972 में 'वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम 1972' लागू किया गया जिसका उद्देश्य देश में वन्य प्राणियों को संरक्षण प्रदान करना तथा शिकार, तस्करी एवं अवैध व्यापार पर नियंत्रण करना था।

वर्ष 1983 में वन्यजीवों के संरक्षण के लिए 'राष्ट्रीय वन्यजीव योजना' शुरू की गई, जिसके अंतर्गत वन्यजीवों को मानवीय अतिक्रमण से दूर रखने तथा उनकी सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव पार्क बनाए गए। जनवरी 2003 में वन्यजीव संरक्षण अधिनियम में संशोधन किया गया तथा अधिनियम के तहत अपराधों के लिए जुर्माना और दंड को कठोर बना दिया गया।

हालांकि, सभी के लिए यह समझना बहुत जरूरी है कि वन्यजीवों का संरक्षण हम सबकी बड़ी जिम्मेदारी है क्योंकि वन्यजीवों की विविधता ही धरती की प्राकृतिक खूबसूरती है, इसलिए लुप्तप्राय पौधों और जानवरों की कई प्रजातियों को उनके प्राकृतिक आवास के साथ संरक्षित करना पर्यावरण संतुलन के लिए बेहद जरूरी है।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

जल संकट का दौर पानी बचाने का शोर

विजय गर्ग

जब से गर्मी की आमद शुरू हुई है, लोगों के गले सूखने से पहले जल स्रोत हांफने लगे हैं। जितना नदियों में पानी नहीं बहा उससे ज्यादा अब पानी बचाने के तरीकों को लेकर ज्ञान की गंगा बहाई जा रही है। सैकड़ों गेलन पानी की बर्बादी करने वाले पानी बचाओ अभियान के अगवा बन बैठे हैं। नदियों और कुदरती नालों की जमीन पर अतिक्रमण कर मोटी रकम बनाने वाले बरसों से कचरा उफनते कुएं-बावड़ी की सुध लेने को छटपटा रहे हैं, ताकि स्वार्थ सिद्धि की कोई नई इबारत लिख सके।

अतीत में गर्मी में राहगीरों को पानी पिलाने को पुण्य का कार्य समझा जाता था। लोग अपने पूर्वजों की याद में प्याऊ लगाकर लोगों के गले को तर करने में सुकून महसूस करते थे। आज पानी बेचने के लिए बड़ी-बड़ी वाटर कम्पनियां अस्तित्व में आ चुकी हैं, जो छोटी और बड़ी बोतल में पानी की सप्लाई कर रही है, जो पैसा लेकर बीमारियां परोसने का काम कर रही हैं।

जल संकट के दौर में नगर निगम के वे अधिकारी जो अभी तक गहरी नींद में थे, जल संकट के गहराते ही जाग चुके हैं। टैंकर के भारी-भरकम टेंडर का सुनते ही उनकी आंखों की चमक और चेहरे का पानी बढ़ गया है, जिन्होंने नलों की पाइप लाइन की कभी सुध नहीं ली, जिसके कारण आम जनता मटमैला पानी पीने को मजबूर होती रही। वे आम जन को खाली कनस्तर लिए लम्बी कतार में खड़े देख मन ही मन हर्षित हो रहे हैं। उनको इस बात का इल्म है कि जल मिशन के कमीशन से वे फलेंगे फुलेंगे। भले ही बाल्टी उठा उठाकर लोगों का दम फूल जाए।

उधर, मोहल्ले में आज सुबह-सुबह पानी बचाने को लेकर दो पड़ोसियों में कहासुनी हो गई। अपनी कार को प्रतिदिन नहला कर पूरे मोहल्ले की सड़क को कीचड़ युक्त करने वाले सज्जन ने जब जल संकट का हवाला देते हुए पड़ोसी को नसीहत देने का प्रयास किया, तो वे अपने नाम के अनुरूप भड़क गए।

वैसे भी आजकल सोशल मीडिया के इस दौर में ज्ञान देने वालों की संख्या में यकायक इजाफा हुआ है। वातानुकूलित कमरे में बैठकर पानी बचाने की योजना वे बना रहे हैं, जिनके बगीचों के लान शहर के सैकड़ों लोगों के हिस्से का पानी पी जाते हों। वहीं दूसरी ओर महिलाएं और छोटी-छोटी बच्चियां झुलसती गर्मी में दो-दो, तीन-तीन किलोमीटर से पानी लाकर प्यास बुझाने को अभिशप्त है, नारों के शोर से जल संकट से निपटने की क़वायद जारी है

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

कहानी:प्यार की एक नाजुक उड़ान

विजय गर्ग

यह एक ठंडी सर्दियों की दोपहर थी। आसमान में धुंध छाई हुई थी, और ठंडी हवा ने पेड़ों की शाखाओं को बेजान कर दिया था। मां घर के दरवाजे पर खड़ी थीं, धूप की उम्मीद में। तभी, एक नाजुक तितली, जो शायद ठंड से जूझ रही थी, हल्के-हल्के अपने पंख फड़फड़ाती हुई उनके सामने आ गई।

मां ने जैसे ही दरवाजा खोला, तितली झिझकते हुए अंदर उड़ आई। उसके पंख कांप रहे थे, और वह कमजोर लग रही थी। तितली सीधा मां के हाथ पर आकर बैठ गई। मां की हथेली की हल्की गर्मी ने तितली को जैसे नई ऊर्जा दी। मां ने उसे बहुत प्यार से देखा और धीरे से कहा, ₹तुम बहुत ठंडी हो गई हो, मेरी बच्ची।₹

तितली जैसे उनकी बात समझ गई हो। उसने धीरे-धीरे अपने पंख फड़फड़ाए, मानो जवाब दे रही हो। मां ने तितली की तरफ देखते हुए उससे बातें करना शुरू कर दिया। उनके शब्दों में ऐसी ममता थी, जैसे वह तितली को सुकून दे रही हों। तितली भी हर बार अपने पंख हिला कर मां की बात का जवाब देती रही।

कुछ समय बाद, पिताजी घर लौटे। तितली ने मां की हथेली से उड़ान भरी और पिताजी के हाथ पर आकर बैठ गई। पिताजी ने मुस्कुराते हुए उसे देखा। उन्होंने भी उसे बड़े प्यार से अपनी हथेली पर रखा। कुछ पल के लिए तितली ने जैसे अपने नाजुक पंखों से उनकी उंगलियों को महसूस किया। फिर वह वापस मां के हाथ पर चली गई।

तितली की यह छोटी-सी उड़ान, मां और पिताजी के बीच, ऐसा लग रहा था जैसे वह अपनी नाजुकता और गर्मजोशी दोनों बांट रही हो। उसके पंखों की हलचल और उसकी मासूमियत ने घर के ठंडे माहौल में एक अद्भुत गर्मजोशी भर दी।

लेकिन धीरे-धीरे तितली की ऊर्जा कमजोर पड़ने लगी। उसके पंख अब पहले की तरह नहीं हिल रहे थे। कुछ देर बाद वह फिर से पिताजी की हथेली पर आकर बैठ गई। इस बार, उसकी नाजुक काया स्थिर हो गई।

मां और पिताजी ने चुपचाप एक-दूसरे को देखा। उनकी आंखों में एक गहरी उदासी थी। तितली का छोटा-सा जीवन समाप्त हो चुका था। लेकिन वह अपनी आखिरी घड़ियों में जो गर्मी और सुकून ढूंढ़ने आई थी, वह उसे यहां मिल चुका था।

हमने उसे घर के बगीचे में एक छोटे से गड्ढे में दफना दिया। तितली के लिए यह हमारी छोटी-सी श्रद्धांजलि थी। वह आई थी, हमारे घर की ठंड को अपनी नाजुकता से पिघलाने। उसका जाना यह सिखा गया कि जीवन में कुछ पल कितने मूल्यवान होते हैं।

सुख में दुख : विजय गर्ग

आज भी यह रहस्य ही लगता है कि कुछ लोग किसी की सराहना या प्रशंसा करने में कंजूसी क्यों करते हैं! किसी के लिए प्रशंसा के दो शब्द बोलना उन्हें दो कुंतल वजन उठाने से भी ज्यादा भारी क्यों लगता है ? ऐसे लोगों से जल्दी किसी की प्रशंसा नहीं होती और औपचारिकतावश करनी पड़ जाए तो प्रशंसा की जगह कमियां बताकर उसे हतोत्साहित कर आनंद का अनुभव करेंगे। इस संदर्भ की व्याख्या पर विचार करें तो एक प्रसंग याद आता है। एक परिचित की बेटी का राज्य प्रशासनिक सेवा में चयन हुआ। घर- परिवार के लिए यह बहुत बड़ी उपलब्धि थी और सभी बेहद खुश थे। सगे-संबंधी, मित्र - रिश्तेदार, आस-पड़ोस के सभी लोग बधाई देने पहुंच रहे थे और वे हर्षित भाव से बधाइयां स्वीकारते हुए सबका मुंह मीठा करा रहे थे। बधाइयों के औपचारिक-अनौपचारिक माहौल के बीच परिचित के एक निकट संबंधी पधारे। उन्होंने बधाई देने की औपचारिकता भी नहीं निभाई और आते ही परिचित की बेटी से सवाल किया कि तुम्हें कौन-सी रैंक आई है, तो उसने खुश होते हुए जवाब दिया- 'मेरा पहला प्रयास ही था । फिर भी सत्तानबेवीं रैंक आई है। खुद से ही पढ़ाई की है मैंने।' वे अंकल अफसोस करने लगे, 'ओह, फिर तो अधीनस्थ सेवा में नंबर आएगा तुम्हारा। मेरे एक मिलने वाले का बेटा पंद्रहवीं रैंक लाया है। उसका प्रशासनिक सेवा में जाना तय है। खैर, अगली बार कोशिश करना।' इस तरह की अवांछित सलाह सुनकर खुशियों से खिलखिलाता परिचित की बिटिया का चेहरा मुरझा गया और परिजन भी बहुत दुखी हुए, लेकिन वे सबको दुखी करते हुए संतुष्ट भाव से वहां से निकल लिए। बाद में परिचित से पता चला कि उनके बेटे ने यह प्रतियोगी परीक्षा चौथी बार दी थी, लेकिन वह एक बार भी साक्षात्कार में बुलाने जितने अंक लाने में असफल रहा।

गौर किया जाए तो ऐसी रुग्ण मानसिकता के लोग हमें अपने आसपास मंडराते दिख जाएंगे। दूसरों की खुशियां और उपलब्धियां देख उन्हें ईर्ष्या होती है। उन्हें लगता है जैसे दूसरों ने उनके घर डाका डालकर यह हासिल किया है। अपनी अकुशलता, अक्षमता, लक्ष्य के प्रति उदासीनता, अव्यवस्थित दिनचर्या, अनुशासनहीनता जैसी अपनी कमियां दूर कर स्वयं में सुधार करने की वे जरूरत नहीं समझते, क्योंकि वे स्वयं को, किसी तरह की कमियों से मुक्त, सर्वगुणसंपन्न मानते हैं और दूसरों को कमियों की खान मानते हुए उन पर दोषारोपण कर तृप्ति का अहसास करते हैं ।

'कमी - प्रिय' ऐसे लोगों का कोई भी प्रिय नहीं होता। उन्हें सबमें ही कोई न कोई कमी नजर आती है। अपने घर में भी वे हर किसी में नुक्स निकालने में लगे रहते हैं। घर का नन्हा बच्चा अगर हाथी का चित्र बनाकर उल्लसित भाव से उनके सामने दिखाएगा तो उसे शाबाशी देने की जगह ऐसा व्यक्ति कहेगा कि 'हाथी की सूंड इतनी छोटी होती है क्या... तुम्हारी टीचर कुछ सिखाती भी है या वह भी ढपोरशंख है तेरी तरह।' बच्चा रोनी सूरत बनाए खिसक जाएगा और वे मंद-मंद मुस्कुराएंगे। पत्नी द्वारा बनाए खाने में कमी निकाले बिना उन्हें खाना हजम नहीं होता । सब्जी में कभी मिर्च- नमक ज्यादा बताएंगे, कभी कम । रोटी पर जलने के हल्के से निशान दिख गए, तो फरमाएंगे कि 'रोटी पर चांद-तारे चमचमाहट कर रहे हैं। जली रोटी बनाने में महान हो तुम देवी।' इस तरह कमतर ठहराना या खिल्ली उड़ाना उनके स्वभाव में घुला होता है।

राजस्थानी की एक लोककथा है। एक नगर सेठ था। सबसे बड़ा धनी। कई नगरों में व्यापार । सब जगह बड़ी-बड़ी हवेलियां। सैकड़ों बीघा खेत-खलिहान । बीसों नौकर । इतना सब होते भी वह हर समय दुखी रहता । वैद्य-हकीमों की दवा भी बेअसर । एक बार एक महात्मा भ्रमण करते हुए उस नगर में पधारे। लोगों ने सेठजी की बीमारी बताई और उन्हें स्वस्थ करने का निवेदन किया। शाम को महात्मा हवेली पहुंचे तो सेठ अपने कमरे की खिड़की से बाहर नजर गड़ाए थे। घास-फूस की एक झोपड़ी में रह रहा मजदूर अपनी पत्नी और पुत्र-पुत्रियों के साथ हंस - खेल रहा था । महात्मा ने पूछा, 'परमात्मा का दिया तुम्हारे पास सब कुछ है, उसके बाद भी तुम दुखी क्यों हो भक्त ? ₹ सेठ ने उसी झोंपड़ी की ओर देखते हुए कहा, 'अभावों में भी वे सुखी क्यों हैं, यह देखकर मैं दुखी रहता हूं महाराज।' महात्मा ने कहा, 'जो दूसरों को सुखी देखकर दुखी होता है, उसका दुख परमात्मा भी दूर नहीं कर सकता भक्त ।' और महात्मा वहां से विदा हो गए। सेठ का दुख वैसा ही रहा ।

दूसरों को सुखी देख दुखी होने की मानसिकता हमें कभी भी सुख, खुशी, आनंद और उल्लास नहीं दे सकती। हमें हमेशा दुखी ही रखेगी। हमारी यह नकारात्मक सोच हमें बेवजह दूसरों का आलोचक बनाती है, दूसरों में अच्छाइयां नहीं, कमियां ढूंढ़ती है, परिजनों और मित्रों के प्रति भी संदेह - संशय के भाव पैदा करती है। हम स्वयं दुखी रहते हैं और दूसरों को भी दुखी करते हैं। दूसरों को खुश और आनंदमय देखकर हमारे मन में भी खुशी और आनंद की अनुभूति होनी चाहिए । तब ही हमारा जीवन आनंदमय रहेगा। कमियां हर किसी में होती हैं, हमारे भीतर भी होंगी, लेकिन हमें कमियां नहीं, अच्छाइयां देखनी चाहिए। कमियों और अच्छाइयों के साथ ही हम हैं। सकारात्मक भाव रखते हुए हमें कमियों की अनदेखी करनी है और अच्छाइयों से सीख लेनी है। कहा भी गया है- 'सार-सार को गहि रहै, थोथा देई उड़ाय ।'

न्याय की मजबूत बुनियाद से ही सशक्त लोकतंत्र

विजय गर्ग

किसी भी शासन-तंत्र का सबसे महत्वपूर्ण तत्व होता है। यदि समाज में न्याय ही सुनिश्चित न हो, तो लोकतंत्र, संविधान, और विकास के सारे दावे खोखले प्रतीत होते हैं। भारत न्याय रिपोर्ट 2025 ने देश की न्यायिक व्यवस्था की जो तस्वीर पेश की है, वह चौंकाने वाली है। यह रिपोर्ट चार स्तंभों, पुलिस, जेल, न्यायपालिका और कानूनी सहायता के प्रदर्शन के आधार पर राज्यों का आकलन करती है। रिपोर्ट बताती है कि आम भारतीय नागरिक को न्याय पाने के लिए आज भी लंबी, कठिन और कई बार अपमानजनक प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है।

देश में मानवाधिकारों की स्थिति चिंताजनक बनती जा रही है। यह केवल अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों का कथन नहीं, बल्कि आंकड़ों से पुष्ट सच्चाई है। जेलों की हालत इतनी दयनीय है कि कई राज्यों की जेलों में 150 प्रतिशत से भी अधिक की कैदियों की भीड़ है। इनमें से अधिकतर कैदी विचाराधीन हैं, यानी उन्हें किसी अदालत ने दोषी सिद्ध नहीं किया, फिर भी वे वर्षों से कारावास में हैं। यह स्थिति केवल कानून की विफलता नहीं, बल्कि संविधान के अनुच्छेद 21 में जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार का भी उल्लंघन है।

पुलिस, जो न्याय प्रक्रिया की पहली कड़ी होती है, वह खुद जवाबदेही और पारदर्शिता के संकट से जूझ रही है। रिपोर्ट बताती है कि कई राज्यों में पुलिस बल के 25-30 प्रतिशत तक पद खाली हैं। प्रशिक्षण की कमी, मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव और अत्यधिक कार्यभार के चलते पुलिसकर्मी थके हुए। वे कभी-कभी हिंसक व्यवहार करने लगते हैं। अल्पसंख्यकों और कमजोर वर्गों के प्रति पुलिस का रवैया अब भी कठोर और कई बार पक्षपातपूर्ण पाया गया है।

जेलों में कैदियों की भीड़ और बुनियादी सुविधाओं की भारी कमी के कारण जेलें सुधार गृह नहीं, बल्कि मानवाधिकार हनन के केंद्र बन गई हैं। मानसिक रूप से बीमार कैदी, बुजुर्ग और महिलाएं सबसे अधिक पीड़ित हैं। मनोरोग विशेषज्ञों और परामर्शदाताओं की अनुपस्थिति, अत्यधिक गर्मी-सर्दी में राहत की व्यवस्था का अभाव और कानूनी सलाह की पहुंच न होना, इस स्थिति को और भी गंभीर बना देता है।

न्यायपालिका की स्थिति भी बेहतर नहीं कही जा सकती। करोड़ों मुकदमे अदालतों में लंबित हैं। रिपोर्ट बताती है कि उच्च न्यायालयों और जिला अदालतों में जजों के लगभग 30 प्रतिशत पद रिक्त हैं। एक सामान्य नागरिक को अपना मुकदमा निपटाने में 10-15 वर्ष तक इंतजार करना पड़ता है। 'विलंबित न्याय, अन्याय होता है' यह कहावत अब भारत में कड़वी सच्चाई बन गई है। ई-कोर्ट्स और तकनीक आधारित समाधान का प्रसार अभी तक केवल कुछ मेट्रो शहरों तक सीमित है, जबकि दूरदराज के क्षेत्रों में लोग आज भी कागज और रजिस्टरों पर आधारित व्यवस्था से जूझ रहे हैं।

यदि सबसे कमजोर प्रदर्शन करने वाले राज्यों की बात की

जाए, तो उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और छत्तीसगढ़ का नाम विशेष रूप से सामने आता है। उत्तर प्रदेश में जेलों की अत्यधिक भीड़, पुलिस पर जवाबदेही की कमी, हिरासत में मौतें और लाखों लंबित मामले न्याय व्यवस्था की विसंगति को उजागर करते हैं। बिहार में प्रति लाख जनसंख्या पर जजों की संख्या सबसे कम है और कानूनी सहायता लगभग अनुपस्थित है। झारखंड और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में आदिवासी क्षेत्रों में फर्जी गिरफ्तारियां, पुलिस हिंसा और जेलों में वर्षों तक विचाराधीन कैदियों की उपस्थिति एक गंभीर सवाल खड़ा करती है।

इनके विपरीत, कुछ राज्य ऐसे भी हैं जिन्होंने न्यायिक व्यवस्था को बेहतर बनाने की दिशा में गंभीर प्रयास किए हैं। केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु जैसे राज्यों ने अपेक्षाकृत बेहतर प्रदर्शन किया है। इन राज्यों में पुलिस बल अपेक्षाकृत प्रशिक्षित और बहुभाषायी हैं, जजों की नियुक्ति समय पर होती है, कानूनी सहायता का ढांचा सक्रिय है और जेलों में भीड़ नियंत्रण में है। यह इस बात का प्रमाण है कि यदि राजनीतिक इच्छाशक्ति हो, तो न्याय व्यवस्था को सुधारा जा सकता है।

उत्तराखंड जैसे अपेक्षाकृत छोटे राज्य को बेहतर प्रदर्शन करना चाहिए था, लेकिन रिपोर्ट बताती है कि यहां भी न्यायिक ढांचे में कई कमियां हैं। पुलिस बल में 20 प्रतिशत रिक्तियां हैं, महिला पुलिस की भागीदारी बेहद कम है और जेलों में 120 प्रतिशत से अधिक कैदियों की भीड़ है। उच्च न्यायालय और जिला न्यायालयों में जजों के लगभग 30 प्रतिशत पद रिक्त हैं। सीमांत और पर्वतीय जिलों जैसे चमोली, पिथौरागढ़ और उत्तरकाशी में न तो प्रभावी कानूनी सहायता है और न ही नियमित न्यायिक सेवाएं।

यह रिपोर्ट महज आंकड़ों का दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि एक चेतावनी है। यह हमें स्मरण कराती है कि यदि न्याय की नींव कमजोर होगी, तो लोकतंत्र की इमारत कभी टिक नहीं सकती। केवल चुनाव, योजनाएं और विकास के आंकड़े पर्याप्त नहीं, जब तक कि समाज का हर वर्ग न्याय तक सहज, सुरक्षित और सुलभ पहुंच न पाए।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

आंगन में खिलती छह ख़ुशियाँ: किसान राजेश के बच्चों की अनूठी शादी की कथा

हरियाणा के हिसार में, गावड़ गांव — "माटी की खुशबू में रची-बसी एक मंडप छह शादियाँ" धूप की तपती किरणों के बीच, खेतों में लहलहाती फसलों के बीच, मिट्टी की सौंधी गंध में रची-बसी एक कहानी जन्म लेती है। यह कहानी किसी बड़े शहर की भव्यता की नहीं, किसी महंगे मंडप की चकाचौंध की नहीं, बल्कि एक छोटे से किसान की है — जो अपने साधारण जीवन में असाधारण निर्णय लेकर समाज को आईना दिखाता है। यह कहानी है किसान राजेश की — जिन्होंने अपने छह संतानों की शादी एक साथ करवा कर न सिर्फ अपने परिवार को जोड़ा, बल्कि पूरे समाज को सादगी, प्रेम और समझदारी का पाठ भी पढ़ाया।

- डॉ. सत्यवान सौरभ

राजेश का जीवन कोई राजकुमारों का सपना नहीं रहा। वह जीवन था — फटी बोरियों पर बैठकर चूल्हे की आग से अपने बच्चों के सपने तापने का। वह जीवन था — तंगी में भी मुस्कान न खोने का। जब धूप सिर पर आग बरसाती थी, तब भी राजेश के हल की नोक पर उम्मीदें फूटती थीं। बड़ी मेहनत से उन्होंने अपने खेतों को सींचा, अपने बच्चों को बड़ा किया। हर एक बेटे-बेटी के लिए उनके दिल में एक अलग सपना था, लेकिन एक ही चिंता थी — उनकी खुशियों में कभी कोई बोझ न आए। वक्त का पहिया घूमा। बच्चे बड़े हुए। जिम्मेदारियां भी साथ बढ़ीं। बेटियों के विवाह की चिंता और बेटों के घर बसाने की योजना — यह सब किसी भी आम भारतीय पिता के जीवन का हिस्सा बनते हैं। पर राजेश ने इस आम सोच को एक असाधारण फैसले में बदल दिया।

एक निर्णय, छह भविष्य

राजेश ने सोचा, ₹क्यों न एक साथ अपने सारे बच्चों की शादी करूँ ?₹ ना बार-बार खर्चा, ना बार-बार झंझट। एक साथ सबका आशीर्वाद, एक साथ सबकी खुशियाँ। यह विचार साधारण नहीं था। समाज की परंपराओं, रीति-रिवाजों और दिखावे के दबाव में अक्सर लोग ऐसे निर्णय नहीं ले पाते। पर राजेश ने ठान लिया। उन्होंने एक ही शादी का कार्ड छपवाया। उस छोटे से कार्ड पर छह वर-वधुओं के नाम लिखवाए। कोई आडंबर नहीं, कोई दिखावा नहीं — बस सीधी सच्चाई कि यह शादी है, प्रेम और जिम्मेदारी का उत्सव। गांव में जब यह खबर फैली तो लोग पहले हैरान हुए। ₹छह बच्चों की एक साथ शादी ? कैसे सम्भव है ?₹ पर जब दिन आया, और गांव के हर कोने से लोग राजेश के आँगन में एकत्र हुए, तो वह नज़ारा किसी मेले से कम नहीं था।

छः बारातें, छः डोली, और हर चेहरे पर सिर्फ मुस्कान।

रिश्तों का उत्सव

राजेश के आँगन में उस दिन सिर्फ रस्में नहीं निभाई गईं, रिश्तों का उत्सव मनाया गया। छः बेटियों ने अपने पिता का हाथ थामा, छः बेटों ने नये जीवन की ओर कदम बढ़ाया। माँ के आँखों से बहते आंसू इस बात के गवाह थे कि एक साथ छह-छह सपनों को विदा करना आसान नहीं होता, पर जब हृदय विश्वास से भरा हो, तो विदाई भी पर्व बन जाती है। गांव के बुजुर्गों ने छड़ी टेकते हुए आकर आशीर्वाद दिया। बच्चों ने दुल्हनों के घूंघट के पीछे से हँसी-ठिठोली की। माताओं ने मंगल गीत गाए — ₹आज हमारे आँगन से निकलेंगी बेटियाँ रौशनी बनकर। आज हमारे आँगन में आएँगे बेटे, बाग़ को सींचने के लिए।₹ ऐसा लग रहा था मानो गांव की हवा में कोई अलक्षित सुर मिलकर गीत रच रहा हो — सादगी का, प्रेम का, आभार का।

समाज के लिए एक संदेश

आज के समय में जब शादियाँ दिखावे और खर्च के जाल में उलझ चुकी हैं — जहां एक बेटी की शादी में लाखों-करोड़ों फूंक दिए जाते हैं, और

परिवारों को वर्षों तक कर्ज की दलदल में जीना पड़ता है — वहाँ राजेश का यह कदम एक टिमटिमाता हुआ दीपक बनकर उभरा। गांव के कई युवाओं ने खुले दिल से कहा, ₹अगर ऐसे सरल और सामूहिक आयोजन हों, तो ना दहेज का डर रहेगा, ना बेटियों के बोझ की सोच।₹ राजेश ने यह नहीं सोचा कि लोग क्या कहेंगे। उन्होंने सोचा — उनके बच्चे खुश रहें, बिना किसी बोझ के, बिना किसी फिजूलखर्ची के।

यही सोच असल में उस किसान की सच्ची समृद्धि थी, जिसने अपने खेतों की तरह अपने बच्चों के सपनों को भी सींचा।

वो दिन, वो यादें

शादी का दिन केवल एक रस्म अदायगी नहीं था। वह दिन बना — एक कविता, जो हर सांस में गुनगुनाई जा सकती थी।

वो आँगन, जो वर्षों से मिट्टी की सोंधी गंध लिए चुपचाप अपने भीतर हरियाली पलता रहा था, आज गीतों से भर उठा था।

दुल्हनें पीले जोड़े में, सिर पर दुपट्टा सँभाले, पांव में घुंघरू की आवाज़ के साथ मंद-मंद चलती थीं। दूल्हे अपने नये सफर की आशा से आंखों में चमक लिए खड़े थे। राजेश चुपचाप आँगन के एक कोने में खड़े थे। आँखों में संतोष, होंठों पर हल्की सी मुस्कान, और चेहरे पर एक ऐसा तेज, जो केवल तपे हुए मनुष्यों के हिस्से आता है।

भविष्य की ओर

राजेश का सपना अब सिर्फ अपने खेतों तक सीमित नहीं रहा। वह अपने बच्चों के घरों तक फैला है। वह अपनी बेटियों की हँसी में, अपने दामादों के सम्मान में, और अपने गांव की नई सोच में जीवित रहेगा। गांव के कई लोग अब यह सोचने लगे हैं कि वे भी अपनी संतानों के विवाह सरलता से कराएं, बोझ नहीं बनाएं। शायद यह शुरुआत है एक नयी परंपरा की — जहाँ शादी मतलब बोझ नहीं, जीवन का उत्सव हो। जहाँ एक किसान भी समाज का निर्माता बन सके, और बिना भाषण दिए एक बड़ा संदेश दे सके। किसान राजेश की कहानी हमें बताती है कि असली समृद्धि बैंक बैलेंस में नहीं, रिश्तों की मिठास में होती है। असली शाही विवाह महंगे होटलों में नहीं, खेतों की पगडंडियों पर थिरकती खुशियों में होता है।

और असली गर्व इस बात में है कि हमने अपने बच्चों को बिना किसी आडंबर के, सच्चे प्रेम और आशीर्वाद के साथ जीवन की नई राह पर बढ़ाया।

हरियाणा के जिला हिसार के गावड़ गांव की यह कहानी हवा में तैरती रहेगी, बरसों तक। और जब भी कोई किसान हल उठाएगा, जब भी कोई माँ अपने बच्चों के लिए सपना देखेगी, तो राजेश की वह मुस्कान, वह साहस, और वह आँगन में बिखरी छह खुशियों की बरसात, एक प्रेरणा बनकर उनकी आँखों में चमक जाएगी।

गलत UPI पेमेंट होने पर 48 घंटे में मिलेगा रिफंड: RBI की गाइडलाइन के अनुसार करें शिकायत

संजय अग्रवाला, जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल

भारत में डिजिटल पेमेंट का चलन तेजी से बढ़ा है। आज के दौर में लोग आसानी से UPI (यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस) के माध्यम से पैसे भेजते और प्राप्त करते हैं। चाहे वह फोन पे हो, गूगल पे हो, पेटीएम हो या फिर किसी अन्य प्लेटफॉर्म, पैसे भेजना अब कुछ सेकंड का काम रह गया है। लेकिन इसी तेजी के बीच यदि कोई गलती हो जाए और पैसा गलत अकाउंट में चला जाए तो यह चिंता का विषय बन जाता है। इस समस्या को दूर करने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने स्पष्ट गाइडलाइंस जारी की हैं ताकि उपभोक्ताओं को समय पर रिफंड मिल सके और उन्हें आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके।

अगर आपसे गलती से किसी गलत अकाउंट में UPI पेमेंट हो गया है तो घबराने की आवश्यकता नहीं है। RBI के अनुसार अब उपभोक्ताओं को 48 घंटे के भीतर रिफंड मिल सकता है, बशर्ते वे सही तरीके से शिकायत दर्ज करें। शिकायत दर्ज करने के लिए सबसे पहले उस प्लेटफॉर्म के कस्टमर केयर से संपर्क करना चाहिए जिसके माध्यम से आपने ट्रांजेक्शन किया था। उदाहरण के लिए अगर आपने फोन पे के जरिये गलत भुगतान किया है तो आपको फोन पे के हेल्पलाइन नंबर 1800-419-0157 पर संपर्क करना चाहिए। इसी प्रकार गूगल पे के लिए हेल्पलाइन नंबर 080-68727374 या 022-68727374 है। पेटीएम यूजर्स 0120-4456-456 पर संपर्क कर सकते हैं। BHIM ऐप के लिए हेल्पलाइन नंबर 18001201740 या 022-45414740 है।

शिकायत करते समय आपको ट्रांजेक्शन आईडी, गलत अकाउंट का विवरण और आपके बैंक की जानकारी देनी होगी। अधिकतर मामलों में पेमेंट प्लेटफॉर्म पहले खुद इस समस्या का समाधान करने का प्रयास करता है। यदि 48 घंटे के भीतर समाधान नहीं होता है या आप असंतुष्ट रहते हैं तो आप NPCI (नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया) के पास शिकायत दर्ज कर सकते हैं। NPCI का काम सभी UPI ट्रांजेक्शन की निगरानी करना और विवादों का समाधान करना है। NPCI के पास शिकायत दर्ज करने के लिए आपको वेबसाइट पर जाकर अपना विवरण देना होता है और जरूरी डॉक्युमेंट अपलोड करने होते हैं।

यदि NPCI से भी समाधान नहीं होता है तो आप बैंकिंग ओम्बड्समैन या फिर RBI के डिजिटल पेमेंट्स संबंधित शिकायत पोर्टल पर संपर्क कर सकते हैं। RBI ने सभी बैंकों और पेमेंट सर्विस प्रोवाइडर्स को निर्देश दिया है कि वे ग्राहक की शिकायतों का निवारण 48 घंटे के भीतर करें। इसके अलावा पेमेंट सर्विस प्रोवाइडर को हर ग्राहक को शिकायत दर्ज करने का एक ट्रैकिंग नंबर भी देना अनिवार्य कर दिया गया है ताकि ग्राहक अपने मामले की स्थिति जान सके। यह भी ध्यान देने योग्य है कि गलत पेमेंट की स्थिति में आपको जल्दी से जल्दी शिकायत करनी चाहिए। अगर आप देर करेंगे तो आपके पैसे वापस मिलने की संभावना कम हो सकती है। RBI की गाइडलाइंस के अनुसार, यदि पेमेंट एरर स्पष्ट रूप से तकनीकी गड़बड़ी के कारण हुआ है, तो ग्राहक को पूरा रिफंड मिलना चाहिए। लेकिन अगर गलती ग्राहक की तरफ से हुई है, तो पेमेंट सर्विस प्रोवाइडर मामले की जांच कर उचित कार्रवाई करेगा।

RBI के निर्देशों के अनुसार, अगर कोई उपभोक्ता गलत तरीके से पैसे भेज देता है और समय पर शिकायत करता है तो उसे अधिकतम 48 घंटे के भीतर पैसा वापस मिल सकता है। यह भी तय किया गया है कि यदि पेमेंट सर्विस प्रोवाइडर या बैंक समय पर कार्रवाई नहीं करता है तो उपभोक्ता को मुआवजे का भी अधिकार है। UPI पेमेंट के मामले में NPCI ने स्पष्ट किया है कि ट्रांजेक्शन के दौरान अगर पेमेंट 'Pending' की स्थिति में अटक जाता है और बाद में फेल हो जाता है तो राशि स्वतः ही 24 घंटे के भीतर ग्राहक के खाते में वापस आ जाती है। लेकिन अगर पेमेंट 'Success' की स्थिति में चला जाता है और गलत अकाउंट में ट्रांसफर हो जाता है तो ग्राहक को शिकायत करनी पड़ती है। इस पूरी प्रक्रिया में यह भी जरूरी है कि आप अपनी तरफ से सभी दस्तावेज सही ढंग से उपलब्ध कराएं। जैसे कि स्क्रीनशॉट, ट्रांजेक्शन आईडी, भुगतान की तारीख और समय आदि। सही जानकारी देने से आपकी शिकायत का निवारण जल्दी होता है। कुछ मामलों में पेमेंट प्राप्तकर्ता से भी सहमति लेनी पड़ सकती है, यदि वह राशि पहले ही निकाल चुका हो।

डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने के लिए RBI और सरकार लगातार यह प्रयास कर रही है कि उपभोक्ता को बेहतर सुरक्षा मिले और उनकी मेहनत की कमाई सुरक्षित रहे। इसी दिशा में गलत UPI पेमेंट को लेकर ये नए नियम बनाए गए हैं। भविष्य में इस तरह की गलतियों से बचने के लिए हमेशा पेमेंट करते समय रिसीवर का नाम, मोबाइल नंबर और UPI ID ध्यान से जांचें। विशेषकर जब बड़ी रकम भेजनी हो तो एक बार में पूरी रकम न भेजें, पहले एक छोटा अमाउंट भेजकर सुनिश्चित करें कि पैसा सही अकाउंट में जा रहा है।

सावधानी ही सबसे बड़ा उपाय है लेकिन यदि कभी गलती हो भी जाए तो अब चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। सही समय पर सही प्लेटफॉर्म पर शिकायत कर के आप अपना पैसा वापस पा सकते हैं। RBI और NPCI की गाइडलाइन उपभोक्ताओं के हित में हैं और इनका उद्देश्य डिजिटल पेमेंट्स में लोगों का विश्वास बनाए रखना है। डिजिटल युग में जहां सुविधाएं तेज और सहज हो रही हैं, वहीं उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए मजबूत नियम-कायदे बनाना भी उतना ही आवश्यक है। UPI पेमेंट सिस्टम की लोकप्रियता को देखते हुए, इन नए नियमों से न केवल गलतियों को सुधारने का अवसर मिलेगा बल्कि उपभोक्ताओं का भरोसा भी मजबूत होगा। इसीलिए अगर आपसे कोई पेमेंट गलती से गलत अकाउंट में चला गया है, तो घबराइए नहीं, बल्कि निर्धारित प्रक्रिया का पालन करते हुए अपनी शिकायत दर्ज करिए और अपने पैसे को सुरक्षित वापस पाइए। याद रखें कि डिजिटल लेनदेन में सतर्कता और जागरूकता सबसे जरूरी है। सही प्रक्रिया अपनाने पर आपका पैसा सुरक्षित रहेगा और आप निश्चिंत होकर डिजिटल पेमेंट्स का लाभ उठा पाएंगे।

[लेखक पिछले 18 वर्षों से वाणिज्य-अर्थशास्त्र के शिक्षक, वित्तीय एवं कर सलाहकार हैं]

मौन की मधुरिमा: भीतर की संगीतमयी यात्रा

[शब्द शून्य, अनुभूति अनंत: मौन का महोत्सव]

जब शब्द अपनी सारी ताकत खो बैठते हैं, जब कोलाहल की दुनिया थककर चूर हो जाती है, तब खामोशी एक अनमोल राग बनकर उभरती है। यह कोई साधारण मौन नहीं, बल्कि वह गहन संगीत है, जो आत्मा की गहराइयों में गूंजता है। यह वह राग है, जो बिना तारों के बजता है, बिना स्वरों के गीत गाता है। खामोशी वह अनछुआ सौंदर्य है, जो केवल वही देख सकता है, जिसका हृदय सजग और मन स्थिर हो। यह जीवन का वह रहस्यमयी नृत्य है, जो शोर के परदे हटने पर ही प्रकट होता है।

कभी सुना है आपने सुबह की पहली किरण का मौन? जब सूरज धीरे-धीरे क्षितिज पर उगता है, और चारों ओर एक अलौकिक शांति पसर जाती है। न कोई शोर, न कोई हलचल, बस एक ऐसी खामोशी, जो आत्मा को तृप्त कर देती है। यह वह पल है, जब हवा में एक मधुर मिठास घुल जाती है, जैसे प्रकृति स्वयं कोई अनकहा गीत गुनगुना रही हो। या फिर रात के अंतिम प्रहर का वह सन्नाटा, जब दुनिया सो रही होती है, और तारे चुपके से आकाश में टिमटिमाते हैं। यह खामोशी का संगीत है — अनसुना, अदृश्य, पर इतना गहरा कि यह हृदय की हर धड़कन को स्पर्श कर जाता है।

खामोशी सिर्फ़ मौन नहीं, यह एक शक्ति है। यह वह स्रोत है, जहाँ से सृजन की नदियाँ फूटती हैं। इतिहास गवाह है कि मानवता के सबसे महान विचार, सबसे क्रांतिकारी आविष्कार, और सबसे गहरी कविताएँ इसी खामोशी की गोद में जन्मीं। न्यूटन का सेब (गुरुत्वाकर्षण), आइंस्टीन का सापेक्षता सिद्धांत, या रवींद्रनाथ टैगोर की कालजयी रचनाएँ — ये सभी उस क्षण में उभरे, जब मन ने बाहर के शोर को ठुकराकर भीतर की गहराई में डुबकी लगाई। खामोशी वह कैनवास है, जिस पर सृजन के रंग बिखरते हैं। यह वह दर्पण है, जो हमें अपने असली स्वरूप से मिलाता है।

इस शोरगुल की दुनिया में, अगर हम सच में कुछ सुनना चाहते हैं — तो शोर से नहीं, खामोशी से संवाद करें।

हम पाएंगे, ब्रह्मांड स्वयं भी कभी-कभी बस मौन में मुस्कुराता है।

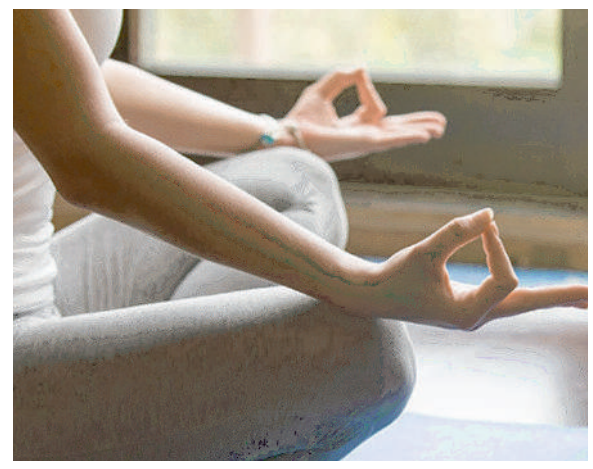

खामोशी से डरने वाले लोग स्वयं से डरते हैं। जो इसे गले लगाता है, वह प्रकृति के हर रहस्य को पढ़ने लगता है। वह पेड़ की पत्तियों की सरसराहट में जीवन सुनता है, हवा की सायं-सायं में कविता पाता है, और बारिश की बूंदों में प्रेम की धुन महसूस करता है। खामोशी हमें सिखाती है कि सुनना सिर्फ़ कानों का काम नहीं, बल्कि हृदय का धर्म है। यह वह पुल है, जो हमें अपनी आत्मा से जोड़ता है, और उस अनंत सत्य तक ले जाता है, जो शब्दों की सीमाओं से परे है।

खामोशी कोई कमजोरी नहीं, बल्कि आत्मा की संजीवनी है। यह वह औषधि है, जो मन के घावों को भर देती है। जब शब्द चोट करते हैं, जब तर्क और तीखी बातें हृदय को छलनी कर देती हैं, तब खामोशी चुपके से आती है और सब कुछ सहला देती है। यह वह मित्र है, जो बिना कुछ कहे सब कुछ समझ लेता है। यह वह आलिंगन है, जो बिना छुए भी गर्माहट देता है। खामोशी में एक ऐसी शक्ति है, जो हमें स्वयं को फिर से खोजने का साहस देती है।

आज की दुनिया में, जहाँ हर ओर शोर का साम्राज्य है, खामोशी एक विद्रोह है। यह उस कोलाहल के खिलाफ़ एक मूक क्रांति है, जो हमें हमारी जड़ों से काट देता है। सोशल मीडिया की चकाचौंध, गाड़ियों का शोर, और अंतहीन बातों का जाल — यह सब हमें खामोशी से दूर ले जाता है। लेकिन जो व्यक्ति इस शोर के बीच खामोशी को चुनता है, वह सच्चे अर्थों में स्वतंत्र है। वह वह योद्धा है, जो बाहरी दुनिया के शोर को परास्त कर अपने भीतर की शांति को जीत लेता है।

कभी-कभी, खामोशी में वह जवाब मिलते हैं, जो शब्दों में कभी नहीं मिल सकते। जब दो प्रेमी एक-दूसरे की आँखों में देखते हैं, और बिना कुछ कहे सब कुछ कह जाते हैं, तब खामोशी ही उनकी भाषा बनती है। जब कोई माँ अपने बच्चे को चुपके से देखकर मुस्कुराती है, तब उसकी खामोशी में सारा प्रेम समा जाता है। जब कोई साधक ध्यान में डूबकर ब्रह्मांड से एकाकार हो जाता है, तब खामोशी ही उसका मार्ग बनती है।

क्योंकि शब्द बाँध सकते हैं, पर खामोशी बहा देती है।

शब्द चोट कर सकते हैं, पर खामोशी सहला देती है।

शब्द थक जाते हैं, पर खामोशी शाश्वत बहती रहती है।

इस भागदौड़ भरी दुनिया में एक पल ठहरें। अपनी साँसों को गिनें, आँखें बंद करें, और उस अनमोल राग को सुनें, जो खामोशी की गोद में बस्ता है। यह वह संगीत है, जो हमें हमारी जड़ों से जोड़ता है, जो हमें याद दिलाता है कि हम इस विशाल ब्रह्मांड का एक हिस्सा हैं। खामोशी में वह शक्ति है, जो हमें अनंत की सैर कराती है, जहाँ न कोई शुरुआत है, न कोई अंत, बस एक शाश्वत प्रवाह है।

जब अगली बार हमें लगे कि शब्द हमारा साथ छोड़ रहे हैं, तो डरिएगा मत। बस रुक जाइएगा, और खामोशी को गले लगाइएगा। क्योंकि उस मौन में, उस सन्नाटे में, हमें वह सत्य मिलेगा, जो शब्दों से परे है। और जब हम उस सत्य से मिलेंगे, तब हम पाएंगे कि खामोशी का संगीत ही जीवन का सबसे अमर राग है — एक ऐसा राग, जो कभी थमता नहीं, कभी थकता नहीं, और हमेशा हमारे भीतर गूंजता रहता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",

"भारत में इस्तीफा देने वाले आईएएस और आईपीएस अधिकारियों का संकट"

"सिविल सेवा का संकट : इस्तीफों के बढ़ते सिलसिले के कारण और प्रभाव"
"सिविल सेवा में इस्तीफों का मंथन : राजनीति, प्रशासन और मानसिक तनाव का समीकरण"
"नौकरशाही के दिग्गजों का पलायन : भारत की सिविल सेवा में बदलाव की आहट"
"सिविल सेवाओं से इस्तीफे : युवा अधिकारियों की निराशा और प्रशासनिक संकट"

भारत में सिविल सेवाओं से इस्तीफों की बढ़ती संख्या एक गंभीर मुद्दा बन गई है। कई आईएएस और आईपीएस अधिकारी, जिनमें कम्य व मिश्रा, रोमन सैनी और अन्य युवा अधिकारी शामिल हैं, अपने पदों से इस्तीफा दे रहे हैं। इसके पीछे राजनीतिक दबाव, प्रशासनिक हताशा, स्वायत्तता की कमी और मानसिक स्वास्थ्य संकट जैसे कारण हैं। इन अधिकारियों का पलायन न केवल उनके व्यक्तिगत संघर्षों को उजागर करता है, बल्कि यह भारतीय शासन मॉडल के लिए भी एक चेतावनी है। यह स्थिति सरकारी तंत्र के लिए एक बड़ा संकट साबित हो सकती है।

-प्रियंका सौरभ

भारत में आईएएस (Indian Administrative Service) और आईपीएस (Indian Police Service) जैसे उच्च प्रशासनिक पदों पर बैठे अधिकारी कभी सम्मान और जिम्मेदारी के प्रतीक माने जाते थे। ये अधिकारी न केवल सरकार की नीतियों को लागू करने के लिए जिम्मेदार होते हैं, बल्कि वे भारतीय समाज में बदलाव लाने के लिए भी कार्यरत रहते हैं। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में, इन अधिकारियों द्वारा पदों से इस्तीफे देने की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि देखी जा रही है। यह इस्तीफे किसी सामान्य बदलाव का परिणाम नहीं हैं, बल्कि इनके पीछे कई गहरे और गंभीर कारण छिपे हुए हैं। क्या कारण हैं कि ये आईएएस और आईपीएस अधिकारी अपने पदों से इस्तीफा दे रहे हैं? क्या यह भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था और शासन प्रणाली के लिए खतरे की घंटी है? क्या इससे यह संकेत मिलता है कि सिस्टम ईमानदार और सक्षम अधिकारियों को बाहर कर रहा है? यह सवाल उन सभी नागरिकों के लिए महत्वपूर्ण हैं, जो सार्वजनिक सेवा में विश्वास रखते हैं।

इस्तीफों की बढ़ती संख्या: कारणों की गहराई में

भारतीय सिविल सेवा से इस्तीफा देने वाले अधिकारियों की संख्या बढ़ने के कारणों में राजनीति, प्रशासनिक हताशा, स्वायत्तता की कमी, और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं प्रमुख हैं। इन कारणों पर विस्तृत रूप से चर्चा करना महत्वपूर्ण है ताकि हम समझ सकें कि क्यों भारतीय प्रशासन में इस समय इतनी अनिश्चितता और असंतोष का माहौल है।

राजनीतिक दबाव और प्रशासनिक हस्तक्षेप

भारतीय सिविल सेवा से इस्तीफा देने वाले अधिकारियों के सबसे बड़े कारणों में से एक राजनीतिक दबाव है। कई आईएएस और आईपीएस अधिकारी इस बात से परेशान हैं कि राजनीति के बढ़ते हस्तक्षेप के कारण उनके निर्णयों में स्वतंत्रता की कमी हो गई है। जब अधिकारी सरकारी योजनाओं और नीतियों को लागू करने में पूरी स्वतंत्रता का अनुभव नहीं करते, तो यह उनकी कार्यक्षमता को प्रभावित करता है। वे पाते हैं कि उन्हें जो काम सौंपा गया है, वह राजनीतिक दबावों के चलते निष्पक्ष रूप से नहीं किया जा सकता।

इस संदर्भ में, कुछ प्रसिद्ध आईएएस और आईपीएस अधिकारियों ने इस्तीफा देने का निर्णय लिया।

आईएएस अधिकारी कन्नन गोपल (IAS Officer Kannan Gopinathan) का इस्तीफा एक उदाहरण है। उन्होंने 2019 में जम्मू और कश्मीर के विशेष राज्य का दर्जा खत्म करने के बाद वहां की स्थिति पर असंतोष व्यक्त करते हुए अपना इस्तीफा दिया था। उनके इस्तीफे ने पूरे देश में राजनीतिक हस्तक्षेप के बारे में चर्चा शुरू कर दी थी।

स्वायत्तता की कमी

स्वायत्तता की कमी भारतीय सिविल सेवा के एक और महत्वपूर्ण कारण के रूप में उभर कर सामने आई है। कई अधिकारी यह महसूस करते हैं कि उनकी स्वतंत्रता, जो पहले उन्हें प्रशासनिक निर्णय लेने में दी जाती थी, अब समाप्त हो गई है। अब उनके निर्णयों को राजनीतिक प्रेशर के तहत बदलने की कोशिश की जाती है। जब अधिकारी अपने फैसले स्वतंत्र रूप से नहीं ले सकते, तो यह उनके आत्मविश्वास को प्रभावित करता है।

आईपीएस अधिकारी विवेक कुमार (IPS Officer Vivek Kumar) का इस्तीफा इस बात का एक और उदाहरण है। वे उत्तर प्रदेश में लंबे समय तक पुलिस सेवा में रहे, लेकिन उन्होंने प्रशासनिक स्वतंत्रता की कमी और राजनीतिक दबाव के कारण इस्तीफा दे दिया। उनका यह कदम न केवल उनके व्यक्तिगत संघर्षों का प्रतीक था, बल्कि पूरे प्रशासनिक तंत्र की असलियत को उजागर करता था।

मानसिक स्वास्थ्य और तनाव

किसी भी सरकारी अधिकारी की कार्यशैली में अत्यधिक मानसिक दबाव और तनाव होता है। यह तनाव केवल कार्य की अधिकता या जिम्मेदारियों के कारण नहीं होता, बल्कि यह भी तब बढ़ जाता है जब अधिकारी अपने कार्यों में स्वतंत्रता और ईमानदारी से फैसले नहीं ले सकते। मानसिक तनाव एक अन्य बड़ा कारण है जो अधिकारियों को इस्तीफा देने के लिए मजबूर करता है।

आईएएस अधिकारी शाह फैसल (IAS Officer Shah Faesal) का इस्तीफा इस मानसिक दबाव के कारण हुआ था। उन्होंने 2019 में अपने पद से इस्तीफा दे दिया था और इसके पीछे का कारण जम्मू और कश्मीर की स्थिति और वहां के प्रशासनिक तंत्र में व्याप्त मानसिक तनाव था।

प्रशासनिक हताशा और भ्रष्टाचार

भारत में कई अधिकारियों ने यह महसूस किया है कि भारतीय प्रशासनिक तंत्र में भ्रष्टाचार, अनियमितताएं, और राजनीतिक हस्तक्षेप इतना बढ़ चुका है कि उनसे काम करना असंभव हो गया है। ईमानदार और कड़ी मेहनत करने वाले अधिकारियों को अक्सर इस तंत्र में प्रताड़ना और अपमान का सामना करना पड़ता है। जब एक ईमानदार अधिकारी को अपने प्रयासों का कोई परिणाम नहीं मिलता, तो वह हताश हो जाता है और इस्तीफा देने का फैसला करता है।

आईएएस अधिकारी अनुज कुमार (IAS Officer Anuj Kumar) ने इस स्थिति से परेशान होकर इस्तीफा दिया। उनका कहना था कि प्रशासनिक स्तर पर भ्रष्टाचार और अव्यवस्था बढ़ने के कारण वे अपने कर्तव्यों का पालन नहीं कर पा रहे थे।

इस्तीफा देने वाले प्रमुख युवा अधिकारी

हाल के वर्षों में, कई युवा आईएएस और आईपीएस अधिकारियों ने भी इस्तीफा दिया है। इनमें से कुछ अधिकारियों ने अपने इस्तीफे से यह संकेत दिया है कि युवा शक्ति और जिम्मेदारी का बोझ उठाना उनके लिए असंभव हो गया है। ऐसे अधिकारियों के नाम निम्नलिखित हैं:

काम्या मिश्रा (IPS Officer Kamya Mishra)

काम्या मिश्रा, जो एक युवा आईपीएस अधिकारी थीं, ने अपने पद से इस्तीफा देने का निर्णय लिया। उन्होंने अपने इस्तीफे में यह बताया कि उन्हें प्रशासनिक तंत्र में अपना योगदान देने के दौरान राजनीतिक हस्तक्षेप और स्वायत्तता की कमी के कारण कठिनाई हो रही थी।

रोमन सैनी (IAS Officer Roman Saini)

रोमन सैनी, जिन्होंने अपनी आईएएस सेवा से इस्तीफा देने का ऐतिहासिक कदम उठाया था, वे एक युवा अधिकारी थे जिन्होंने देश में UPSC परीक्षा की तैयारी करने वाले छात्रों के लिए एक नया दृष्टिकोण पेश किया। उन्होंने 2013 में इस्तीफा दिया, जब उन्होंने महसूस किया कि उन्हें प्रशासनिक कार्यों के बजाय शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान देना अधिक संतोषजनक था। उनके इस्तीफे ने युवा अधिकारियों के बीच एक नई बहस को जन्म दिया कि क्या वे अपनी सेवाओं को छोड़कर समाज के अन्य क्षेत्रों में योगदान दे सकते हैं।

प्रवीण कुमार (IAS Officer Praveen Kumar)

प्रवीण कुमार एक अन्य युवा आईएएस अधिकारी थे जिन्होंने प्रशासनिक कार्यों के कारण आए मानसिक तनाव को देखते हुए इस्तीफा दिया। उन्होंने यह कदम उठाते हुए कहा कि प्रशासन में बहुत से सुधारों की आवश्यकता है और अगर उन्हें स्वायत्तता और स्वतंत्रता का अवसर मिलता, तो वे निश्चित रूप से अपनी सेवाओं को जारी रखते।

क्या यह भारत के शासन मॉडल के लिए खतरा है?

इस बढ़ती हुई इस्तीफों की संख्या से यह सवाल उठता है कि क्या यह भारत के शासन मॉडल के लिए खतरे की घंटी है? यदि सिविल सेवाओं के ये उच्च अधिकारी इस्तीफा देते रहते हैं, तो यह देश के प्रशासनिक तंत्र के लिए गंभीर संकट पैदा कर सकता है। ऐसे अधिकारियों की कमी से न केवल शासन व्यवस्था प्रभावित होती है, बल्कि नागरिकों को भी उस प्रशासनिक तंत्र से विश्वास उठ सकता है, जो उनके कल्याण और न्याय के लिए जिम्मेदार है।

नई राह

भारतीय प्रशासनिक तंत्र में इस्तीफा देने वाले आईएएस और आईपीएस अधिकारियों की बढ़ती संख्या यह दर्शाती है कि सिस्टम में कुछ गंभीर खामियां हैं। राजनीतिक दबाव, प्रशासनिक हताशा, स्वायत्तता की कमी और मानसिक तनाव जैसे कारण अधिकारियों के इस्तीफे का प्रमुख कारण बन रहे हैं। यह स्थिति केवल इन अधिकारियों के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे देश के शासन तंत्र के लिए भी एक चेतावनी है।

हमें यह समझने की आवश्यकता है कि जब तक प्रशासनिक तंत्र में सुधार नहीं किया जाएगा, तब तक ईमानदार और सक्षम अधिकारियों को काम करने का उचित माहौल नहीं मिलेगा। यदि हम भारत की शासन प्रणाली को बेहतर और पारदर्शी बनाना चाहते हैं, तो हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि इन अधिकारियों को स्वतंत्रता और समर्थन मिले, ताकि वे अपनी भूमिका पूरी ईमानदारी और जिम्मेदारी से निभा सकें।

भारतीय नौसेना ने दिया परिचालन क्षमता का परिचय !

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए भीषण आतंकी हमले(22 अप्रैल 2025) के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव अपने चरम पर पहुंच गया है। गौरतलब है कि इस हमले में 26 निर्दोष नागरिकों की जान चली गई थी।इस हमले(पहलगाम हमले) के बाद भारत ने सिंधु जल समझौता समेत पाकिस्तान के साथ सभी अहम समझौतों को निलंबित कर दिया और पाकिस्तानी नागरिकों को देश छोड़ने का आदेश दिया। इस बीच पाकिस्तान ने भी भारत के साथ सभी द्विपक्षीय समझौतों को निलंबित कर दिया है। सच तो यह है कि हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ अनेक सख्त कदम उठाए हैं।इसी बीच भारतीय नौसेना ने अपनी सैन्य ताकत का भी प्रदर्शन किया है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि भारतीय नौसेना ने आइएनएस सूरत से मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल का सफल परीक्षण किया, जो उसकी उच्च परिचालन तत्परता को दर्शाता है। गौरतलब है कि प्रोजेक्ट 15बी गाइडेड मिसाइल डिस्ट्रॉयर कार्यक्रम का हिस्सा आइएनएस सूरत, दुनियाभर में सबसे एडवांस्ड युद्धपोतों में से एक है, जिसमें 75 प्रतिशत स्वदेशी सामग्री है और यह अत्याधुनिक हथियार और सेंसर सिस्टम से लैस है। दरअसल, भारतीय नौसेना के इस अभ्यास का उद्देश्य समुद्र में सटीक आक्रामक हमलों के लिए प्लेटफार्मों, प्रणालियों और क्रू को फिर से तैयार करना था।

उल्लेखनीय है कि भारतीय नौसेना ने कोलकाता क्लास के विध्वंसक और नीलगिरि और क्रिवाक क्लास के फ्रिगेट सहित युद्धपोतों के बेड़े से ब्रह्मोस एंटी-शिप और एंटी-सरफेस क्रूज मिसाइलों को लॉन्च किए जाने के दृश्य शेयर किए। यहां यह गौरतलब है कि नौसेना ने अपनी एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर एक पोस्ट में यह बात कही है कि , 'भारतीय नौसेना के जहाजों ने लंबी दूरी के सटीक आक्रामक हमले के लिए प्लेटफार्मों, प्रणालियों और क्रू की तत्परता को फिर से चेक करने और प्रदर्शित करने के लिए कई एंटी-शिप फायरिंग को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। भारतीय नौसेना किसी भी समय, कहीं भी, किसी भी तरह से राष्ट्र के समुद्री हितों की रक्षा करने के लिए युद्ध के लिए तैयार, विश्वसनीय और भविष्य के लिए तैयार है।' पाठकों को बताता चलूं कि भारतीय नौसेना का यह सफल अभ्यास पाकिस्तान द्वारा अरब सागर क्षेत्र में आगामी मिसाइल फायरिंग के बारे में अधिसूचना जारी करने के तुरंत बाद हुआ है। कहना ग़लत नहीं होगा कि रविवार, 27 अप्रैल 2025 को भारतीय नौसेना द्वारा अरब सागर में ब्रह्मोस लॉन्ग रेंज एंटी-शिप मिसाइल का सफल परीक्षण करने के बाद पाकिस्तान में हड़कंप मच गया। दरअसल, भारतीय नौसेना का यह परीक्षण भारत और भारतीय नौसेना के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है, जो उसकी परिचालन तैयारियों को दर्शाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह परीक्षण नौसेना के हथियारों, युद्धपोतों और कर्मियों की लंबी दूरी तक सटीक हमले की क्षमता को फिर से प्रमाणित करता है। इस परीक्षण में ब्रह्मोस मिसाइल ने अपनी अचूकता और विनाशकारी शक्ति का प्रदर्शन किया, जो भारत और रूस के संयुक्त उद्यम का परिणाम है। यह मिसाइल 2.8 से 3.0 मैक की गति से उड़ान भरती है और 800 से 900 किलोमीटर की दूरी तक दुश्मन के जहाजों या ठिकानों को तबाह करने में सक्षम है। इसकी मारक क्षमता इतनी है कि यह पाकिस्तान के आर्थिक केंद्र कराची सहित कई महत्वपूर्ण शहरों को निशाना बना सकती है।यह मिसाइल न केवल समुद्री लक्ष्यों, बल्कि जमीनी ठिकानों को भी नष्ट करने में सक्षम है। इसकी सुपरसोनिक गति और कम ऊंचाई पर उड़ान भरने की क्षमता इसे रडार और मिसाइल रक्षा प्रणालियों से बचाने में मदद करती है। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि भारतीय नौसेना का यह परीक्षण आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक महत्वपूर्ण व बड़ा कदम है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार ब्रह्मोस मिसाइल का स्वदेशी सीकर और बूस्टर, जो कि डीआरडीओ द्वारा विकसित किए गए हैं, इसकी तकनीकी श्रेष्ठता को और बढ़ाते हैं। नौसेना ने इस परीक्षण को 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान का हिस्सा बताते हुए कहा कि यह स्वदेशी रक्षा प्रौद्योगिकी में भारत की प्रगति को दर्शाता है। ब्रह्मोस मिसाइल की सैल्वो फायरिंग क्षमता, जिसमें 2-2.5 सेकंड के अंतराल में कई मिसाइलें दागी जा सकती हैं, इसे और भी घातक बनाती है। यह एक साथ कई लक्ष्यों को नष्ट करने में सक्षम है, जिससे दुश्मन की रक्षा प्रणालियां बेअसर हो जाती हैं। सच तो यह है कि ब्रह्मोस मिसाइल की यह ताकत भारत को समुद्री युद्ध में एक तगड़ी व निर्णायक बढ़त देती है। गौरतलब है कि भारतीय नौसेना के युद्धपोत, जैसे आईएनएस राजपूत और आईएनएस चेन्नई, पहले ही इस मिसाइल से लैस हैं।यह भी उल्लेखनीय है कि नौसेना की नई पीढ़ी के युद्धपोतों और पनडुब्बियों में भी इसे शामिल किया जा रहा है। यह मिसाइल न केवल पाकिस्तान, बल्कि हिंद महासागर क्षेत्र में किसी भी संभावित खतरे का मुकाबला करने में भारत की स्थिति को मजबूत करती है। यदि हम यहां पर भारतीय नौसेना और पाकिस्तानी नौसेना की आपस में तुलना करें तो भारतीय नौसेना पाकिस्तान से हर मामले में(तकनीक और आर्थिक रूप से) बहुत ही आगे है। आंकड़े बताते हैं कि भारतीय नौसेना के पास 293 पोत हैं, जिनमें दो विमानवाहक पोत आइएनएस विक्रमादित्य और स्वदेशी निर्मित आइएनएस विक्रांत शामिल हैं। वहीं पर भारत के पास 16 पारंपरिक पनडुब्बियां और दो परमाणु-संचालित पनडुब्बियां आइएनएस अरिहंत और आइएनएस अरिघाट हैं। इसके मुकाबले पाकिस्तान के पास सिर्फ 121 पोत हैं और उसके पास कोई विमानवाहक पोत नहीं है। पाकिस्तान के पास आठ पनडुब्बियां हैं, जिनमें से अधिकतर पुरानी अगोस्ता क्लास की हैं और कुछ नई हेंगशेंग क्लास की पनडुब्बियां चीन से मंगाई गई हैं, जो अभी पूरी तरह से परिचालन में भी नहीं आई हैं।भारत के पास ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल, बराक-8 सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल और स्वदेशी रूप से विकसित कई आधुनिक हथियार प्रणालियाँ हैं। वहीं पाकिस्तान मुख्य रूप से चीन से प्राप्त हथियारों पर निर्भर है जिनमें सी-802 मिसाइलें और हाल ही में प्राप्त वाईजे-12 सुपरसोनिक मिसाइलें शामिल हैं।इसके अलावा भारत के पास समुद्र-आधारित परमाणु प्रतिरोधक क्षमता भी है, जो पाकिस्तान के पास नहीं है। इतना ही नहीं, भारत के पास मजबूत रसद आधार भी है, जिसमें 56 प्रमुख बंदरगाह और व्यापारिक टर्मिनल शामिल हैं, जो समुद्री आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करते हैं। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि भारत की तटरेखा लगभग 7000 किलोमीटर लंबी है, और उसके पास अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में एक महत्वपूर्ण सामरिक स्थिति है, जिससे मलक्का स्ट्रेट पर नजर रखी जा सकती है। वहीं पड़ौसी पाकिस्तान के पास केवल तीन बड़े बंदरगाह हैं - कराची, ग्वादर और पोर्ट कासिम, जो उसकी समुद्री क्षमता को सीमित करते हैं और इस तरह रसद और रणनीतिक स्थिति में भी भारत का स्पष्ट दबदबा है। बहरहाल कहना ग़लत नहीं होगा कि पाकिस्तान किसी भी मोर्चे पर भारत के समक्ष कहीं पर भी नहीं ठहरता है लेकिन वह आतंकवाद और आतंकियों के ज़रिए समय-समय पर भारत में अशांति फैलाता रहता है। आर्थिक रूप से कमजोर पाकिस्तान बात-बात पर भारत को गीदड़ भभकियां देता रहता है और उसकी यह सोच बन चुकी है कि वह जेहाद और आतंक के नाम पर भारत में सौहार्द और सद्भावना को तहस-नहस कर देगा, लेकिन उबका यह सपना/मंसूबा कभी भी पूरा नहीं होने वाला है। पाकिस्तान को यह बात याद रखनी चाहिए कि वह भारत से अनेक बार मुंह की का चुका है और यदि हम यहां पर इतिहास की बात करें तो भारत ने 1971 के युद्ध में भी कराची बंदरगाह को नष्ट करके अपनी नौसेना की क्षमता का प्रदर्शन किया था और आज भी भारतीय नौसेना संयुक्त राष्ट्र के तहत समुद्री डकैती-रोधी अभियानों में सक्रिय भूमिका निभा रही है। कहना ग़लत नहीं होगा कि पाकिस्तान को एक ओर जहां भारत के अंदरूनी मामलों पर टीका-टिप्पणी करने की बेमानी आदत रही है, वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान की पोल अब दुनिया के सामने खुल चुकी है कि वह आतंकवाद और आतंकियों का गढ़ है और इनको लगातार पोषित करता आ रहा है। बहरहाल , पाठकों को बताता चलूं कि हाल ही में 'मन की बात' रेडियो प्रसारण में हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहलगाम हमले की निंदा करते हुए यह बात कही है कि, 'आतंकवादी हमले(पहलगाम हमले)के बाद हर भारतीय का खून खौल रहा है। उनमें से हर कोई उन लोगों का दर्द महसूस कर रहा है जिन्होंने अपने लोगों को खो दिया है। कश्मीर में शांति लौट रही थी, लेकिन देश के दुश्मनों को यह पसंद नहीं आया।' आज पहलगाम आतंकी हमले को लेकर पूरे विश्व में प्रदर्शन(टोरंटो, फ्रैंकफर्ट, ह्यूस्टन) हो रहे हैं और पाकिस्तान को दुनिया का बड़ा आतंकी देश घोषित करने की लगातार मांगें उठ रही हैं। सच तो यह है कि पाकिस्तान को 'आतंकियों का स्वर्ग' और 'विश्व का सर्वाधिक खतरनाक देश' कहा जाता रहा है। पाठक जानते हैं कि प्रमुख इस्लामी आतंकी संस्थाएँ जैसे लश्कर-ए-तैयबा, लश्कर-ए-ओमर, जैश-ए-मोहम्मद, हरकतुल मुजाहिद्दीन, सिपाह-ए-सहाबा, हिज़्बुल मुजाहिदीन आदि सब के सब पाकिस्तान में रहकर अपनी आतंकी गतिविधियाँ चलाते हैं। अब समय आ गया है कि पाकिस्तान को कड़ा से कड़ा संदेश दिया जाए।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा

एक ही नंबर की दो बसें जब्त

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट के युग में हाल ही में एक आम धारणा उभर कर सामने आई है कि एक ही नंबर प्लेट पर दो वाहनों का चलना संभव नहीं है। हालाँकि, कालाहांडी में एक ही नंबर प्लेट वाली दो बसों के चलने की घटना सत्य है, भले ही यह विश्वसनीय न हो।परिवहन विभाग ने एक ही नंबर प्लेट वाली दो बसें जब्त की हैं।मणिकेश्वरी ट्रैवल्स की कई बसें कालाहांडी से भुवनेश्वर और कटक तक चलती हैं। इसी बीच परिवहन विभाग को किसी स्रोत से सूचना मिली कि मणिकेश्वरी ट्रैवल्स की दो बसें संख्या ओडी 08जी 3188 स्थानीय बस स्टैंड पर खड़ी हैं। बाद में पुलिस और परिवहन अधिकारियों ने दोनों बसों को जब्त कर लिया और उन्हें रिजर्व बैरक में रख दिया। परिवहन अधिकारी की लिखित रिपोर्ट के आधार पर नगर थाने में मामला दर्ज कर लिया गया है तथा पुलिस जांच कर रही है।

आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में पूरा देश प्रधानमंत्री के साथ है: मनमोहन सिंह

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के रमन की बातर कार्यक्रम के 121वें संस्करण में यशस्वी ने कश्मीर के पहलगाम में हुए बर्बर आतंकवादी हमले पर दुख जताया। उन्होंने पीड़ितों और उनके परिवारों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की। प्रधानमंत्री ने आश्वासन दिया है कि पीड़ित परिवारों को न्याय मिलेगा और आतंकवादियों को कड़ा जवाब दिया जाएगा। प्रदेश अध्यक्ष मनमोहन सामल ने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में पूरा देशवासी प्रधानमंत्री मोदी के साथ है।

श्री सामल ने कहा कि भाजपा सरकार द्वारा जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाने और इसे दो केंद्र शासित प्रदेश घोषित करने के बाद जम्मू-कश्मीर में शांति लौट रही है। लोकतंत्र मजबूत हो रहा था. स्कूल और कॉलेज सामान्य रूप से चल रहे थे। पर्यटकों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि के कारण स्थानीय लोगों का रोजगार भी बढ़ा। युवाओं के लिए नये अवसर सृजित किये जा रहे हैं। हालांकि, भाजपा धर्म के आधार पर आतंकवादियों द्वारा कश्मीर में किए गए अमानवीय कृत्यों की कड़ी निंदा करती है, इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती। आतंकवादियों ने निर्दोष पर्यटकों पर हमला करके अपनी क्रूरता दिखाई। इसका गुस्सा पूरे देश के मन में है। श्री सामल ने कहा कि श्री मोदी जी द्वारा इनका जवाब देने के लिए उठाए जा रहे कदमों तथा देशहित में उनके द्वारा उठाए जाने वाले सभी कदमों में सभी लोग उनका पूरा सहयोग करेंगे।

श्री सामल ने भद्रक जिले के धामरा, चांदबली चुनावी मालिर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम को सुना. इस अवसर पर जिले के कई पदाधिकारी उपस्थित थे।

लू लगने के कई कारण हो सकते हैं

गर्मी के मौसम में धूप में अधिक समय तक रहने से शरीर का तापमान बढ़ सकता है, जिससे लू लग सकती है।

पर्याप्त पानी न पीने से शरीर में पानी की कमी हो सकती है, जिससे लू लग सकती है।

गर्मी के मौसम में अधिक शारीरिक गतिविधि करने से शरीर का तापमान बढ़ सकता है, जिससे लू लग सकती है।

गर्मी के मौसम में पर्याप्त आराम न करने से शरीर थक सकता है, जिससे लू लग सकती है।

लू लगने से बचने के लिए, गर्मी के मौसम में पर्याप्त पानी पीना, धूप में अधिक समय तक न रहना, और शारीरिक गतिविधि को नियंत्रित करना महत्वपूर्ण है।

गर्मी के मौसम में सन स्टोक और लू से बचने के हम ये उपाय कर सकते हैं।

गर्मी के मौसम में सन स्टोक और लू एक गंभीर समस्या हो सकती है, जो हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है।

सन स्टोक और लू के लक्षणों में शामिल हैं।

सन स्टोक और लू के कारण बुखार हो सकता है।सन स्टोक और लू के कारण सिरदर्द हो सकता है।सन स्टोक और लू के कारण उल्टी और दस्त हो सकते हैं।

सन स्टोक और लू से बचने के घरेलू उपाय।

गर्मी के मौसम में पर्याप्त पानी पीना बहुत महत्वपूर्ण है।

छाछ पीने से शरीर को ठंडक मिलती है और लू से बचा जा सकता है।

नारियल पानी पीने से शरीर को इलेक्ट्रोलाइट्स मिलते हैं और लू से बचा जा सकता है।फल और सब्जियां खाने से शरीर को आवश्यक पोषक तत्व मिलते हैं और लू से बचा जा सकता है।

गर्मी के मौसम में धूप में निकलने से बचें।

पेड़ की छाया में बैठने से शरीर को ठंडक मिलती है।पंखा या एसी का उपयोग करने से शरीर को ठंडक मिलती है।

गर्मी के मौसम में सन स्टोक और लू एक गंभीर समस्या हो सकती है, लेकिन कुछ घरेलू टिप्स और उपायों का पालन करके इससे बचा जा सकता है। पानी पीना, छाछ पीना, नारियल पानी पीना, फल और सब्जियां खाना, धूप में न निकलना, पेड़ की छाया में बैठना, और पंखा या एसी का उपयोग करना कुछ ऐसे उपाय हैं जो हमें सन स्टोक और लू से बचने में मदद कर सकते हैं।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह

मैं आस्मान थोड़ी हूं।

बिछड़ने का गम साफ़ था उसकी नज़रों में ,
मुझसे कह रहा था कि मैं बेक़रार थोड़ी हूं ।
तमाम उम्र मैंने नाम ये उसके ही लिख डाली
ज़बान से अब मुकर जाऊं वो इंसान थोड़ी हूँ।
बड़े ताबा, बड़े रौशन, सपने टूट ही जाते हैं।
सब को दामन में छुपा लूं आस्मान थोड़ी हुँ।
दिल ये ज़िद्दी है मेरा अड़ा है उसके आने को।
वो प्यार है मेरा, मैं उसका इंतज़ार थोड़ी हुं ।
आया था पल दो पल के लिये चला भी गया।
में उसकी ज़िंदगी का आख़िरी पड़ाव थोड़ी हूं ।
आओ बैठेंगें गुफ्तगु होगी रमुश्ताक़र
मुस्कुरायेंगे , वक़्त ही वक़्त है दो पल की
मुलाक़ात थोड़ी हूं।

डॉ . मुश्ताक़ अहम शाह सहज़
हरदा ,मध्य प्रदेश पूर्व प्राचार्य
ज्ञानदीप हाई स्कूल मगरधा,

दस हजार रिश्वत लेते विशेष प्रमंडल का लिपिक को एसीबी ने किया गिरफ्तार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला। भ्रष्टाचार के आकंठ में डूबा झारखंड ग्रामीण अभियंत्रण का सरायकेला खरसावां ईकाई के समाहरणालय स्थित ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल का एक साधारण सा लिपिक को महज दस हजार रूपए रिश्वत लेते राज्य भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो ने धर दबोचा । यह गिरफ्तारी समाहरणालय निकट एक चाय की दुकान के पीछे दिन के करीब 1बजे हुई। यद्यपि इस चर्चित विभाग के अभियंताओं, नेताओं अनेकों कारनामे सर्वत्र व्याप्त है , चाहे केंद्र हो या राज्य स्वस्थ इंटलीजेंस का नजर में ये सदैव बने हुए रहते हैं परन्तु इनकी रक्षा अक्सर सरकारें करती आई है ।

आवेदक राहुल महतो नामक युवक ने मिडिया को बताया कि उसके पिता अजीत महतो इसी विभाग में कार्यरत थे । जिनका आकस्मिक निधन गत नवंबर माह में हुई थी । पीड़ित युवक राहुल ने मिडिया को बताया कि अनुकम्पा के आधार पर नियुक्ति हेतु पांच लाख रूपये का रिश्वत भी मांगी गयी थीं । परन्तु उसके पिता के गुजर जाने के बाद उनके परिवार की माली हालत चरमरा गयी थी। जिसके कारण वह मांग की गयी रकम दे पाने में असमर्थ था । यद्यपि इतनी बड़ी राशि लिपिक खेत्र मोहन द्वारा मांगना असंभव प्रतीत होता है । किसके कहने पर यह राशि मांग की जा रही थी यह उच्चस्तरीय जांच का विषय बनता है सरकार के इन भ्रष्ट अभियंत्रण विभागों में । आज उसी पांच लाख धन राशि का प्रारंभिक रू10,000/- किसी काम के लिए संबंधित लिपिक को दे रहा था कि एन वक्त पर चाय दुकान के पास एसीबी के डी एस पी ने साधारण वेशभूषा मे आकर पुछा ये पैसा किस लिए ले रहो हो ? साथ में पीछे खड़े पुलिस को देख लिपिक उठ खड़ा होने ही वाला था कि दबोचा गया । उक्त पैसा एक सफेद रंग का लिफाफे में था जहां ए सीबी ने बरामद करते हुए खेत्र मोहन का हाथ धुलवाया तो पानी का रंग लाल हो गया । फिर एसीबी अधिकारी उसे ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल कार्यालय में पकड़कर लाते हैं ।

वैसे भी इस ग्रामीण विकास विभाग विशेष प्रमंडल के कार्यपालक अभियंता शंभू सिंह जो इसी कार्यालय में सहायक अभियंता रहे बडे ही संदिग्ध चरित्र के अभियंता के रूप में जाने जाते हैं । विभाग में उनके चहेते ठेकेदारों को ही काम मिलता आ रहा है । जब ग्रामीण विकास विभाग के पूर्व मंत्री ईडी के हाथो 36 करोड़ रुपए के साथ जेल में बंद है ऐसे में एसीबी एवं ईडी भी पुख्ता सबूत के साथ यहां धाबा बोलना चाहती , जैसा की आज एसी वी की कारवाई से स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा था।

इन्दौर सुमति धाम तीर्थ जैन महाकुंभ में मुनिश्री श्रुतेश सागरजी महाराज और मुनिश्री सुश्रुत सागरजी महाराज आहारचर्या के बाद सामयिक के लिए तेज धूप में प्रतिमायोग लेकर बैठ गए। उनकी कठिन चर्या देखकर सभी श्रद्धान्वत हो गए। जब आज सुमति धाम तीर्थ, इंदौर* में 108 आचार्य सुनील सागर जी महामुनिराज के दो शिष्य कड़क धूप (40 डिग्री) में सामयिक करते हुए... धन्य है गुरुवर... धन्य है इनका तप... नमोस्तु गुरुदेव।।।

प्रेषक हरिहर सिंह चौहान नसिया जी इन्दौर

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023